

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

मुख्य कार्यालय, तिसरा मजला, छत्रपती शिवाजी महाराज सभागृह

मा. विशेष महासभा दि. २६/०७/२०१८

आज गुरुवार दि. २६/०७/२०१८ रोजी मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची मा. विशेष महासभा सकाळी ११.०० वाजता सभा सुचना क्र. ०३ दि. २०/०७/२०१८ रोजीच्या विषयपत्रिकेवर विचार विनिमय करणेकरिता महापालिका सभागृह, ३ रा मजला, छत्रपती शिवाजी महाराज सभागृह येथे मा. महापौर यांच्या अध्यक्षतेखाली भरली असता खालीलप्रमाणे सदस्य हजर होते.

उपस्थित सदस्य

| | | |
|-----|--------------------------|----------------------|
| १) | डिम्पल विनोद मेहता | महापौर |
| २) | चंद्रकांत सिताराम वैती | उपमहापौर |
| ३) | धृवकिशोर मन्साराम पाटील | सभापती, स्थायी समिती |
| ४) | भोईर राजू यशवंत | विरोधी पक्षनेता |
| ५) | भोईर सुनिता शशिकांत | सदस्या |
| ६) | शाह रिटा सुभाष | सदस्या |
| ७) | तिवारी अशोक सूर्यदेव | सदस्य |
| ८) | पांडेय पंकज सूर्यमणि | सदस्य |
| ९) | गोहिल शानू जोरावर सिंह | सदस्या |
| १०) | कांगणे मीना यशवंत | सदस्या |
| ११) | सिंह मदन उदितनारायण | सदस्य |
| १२) | शेड्डी गणेश गोपाळ | सदस्य |
| १३) | नलावडे दिनेश दगडु | सदस्य |
| १४) | भोईर गणेश गजानन | सदस्य |
| १५) | पाटील प्रभात प्रकाश | सदस्या |
| १६) | गुप्ता कुसुम संतोष | सदस्या |
| १७) | पाटील धनेश परशुराम | सदस्य |
| १८) | पाटील वंदना मंगेश | सदस्या |
| १९) | रावल मेघना दिपक | सदस्या |
| २०) | शाह राकेश रतिशचंद्र | सदस्य |
| २१) | सिंग श्रीप्रकाश जिलेदार | सदस्य |
| २२) | जैन गीता भरत | सदस्या |
| २३) | जैन सुनिता रमेश | सदस्या |
| २४) | जैन राजेंद्र भवरलाल | सदस्य |
| २५) | भूपताणी रक्षा सतीश (शाह) | सदस्या |
| २६) | मोकाशी दिपाली आनंदराव | सदस्या |
| २७) | व्यास रवि वासुदेव | सदस्य |
| २८) | परेरा कॅटलीन एन्थोनी | सदस्या |
| २९) | रकवी वैशाली गर्जेंद्र | सदस्य |
| ३०) | अग्रवाल सुशील गोपीकिशन | सदस्य |
| ३१) | खंडेलवाल सुरेश जगदीश | सदस्य |
| ३२) | परदेशी गिता हरीश | सदस्या |
| ३३) | पाटील नरेश तुकाराम | सदस्य |

| | | |
|-----|-----------------------------|--------|
| ३४) | सय्यद नुरजाहॉ नाझर हुसेन | सदस्या |
| ३५) | पाटील जयंतीलाल गुरूनाथ | सदस्य |
| ३६) | घरत तारा विनायक | सदस्या |
| ३७) | पांडे स्नेहा शैलेश | सदस्या |
| ३८) | आमगावकर हरिश्चंद्र रामचंद्र | सदस्य |
| ३९) | शिर्के अनंत गेणू | सदस्य |
| ४०) | पाटील वंदना विकास | सदस्या |
| ४१) | पाटील संध्या प्रफुल्ल | सदस्या |
| ४२) | पाटील प्रविण मोरेश्वर | सदस्य |
| ४३) | डॉ. पाटील प्रिती जयप्रकाश | सदस्या |
| ४४) | शेड्डी अरविंद आनंद | सदस्य |
| ४५) | गेहलोट हसमुख मोहनलाल | सदस्य |
| ४६) | शिंदे रुपाली वसंत (मोदी) | सदस्या |
| ४७) | थेराडे संजय अनंत | सदस्य |
| ४८) | मुखर्जी अनिता बबलू | सदस्या |
| ४९) | हसनाळे ज्योत्सना जालींदर | सदस्या |
| ५०) | पारधी सुजाता यशवंत | सदस्या |
| ५१) | यादव मिरादेवी रामलाल | सदस्या |
| ५२) | म्हात्रे मोहन गोपाळ | सदस्य |
| ५३) | सोनार सुरेखा प्रकाश | सदस्या |
| ५४) | भोईर विणा सुर्यकांत | सदस्या |
| ५५) | भोईर कमलेश यशवंत | सदस्य |
| ५६) | पाटील अनिता जयवंत | सदस्या |
| ५७) | म्हात्रे परशुराम पदमाकर | सदस्य |
| ५८) | भोईर भावना राजू | सदस्या |
| ५९) | मांजरेकर आनंद दत्ताराम | सदस्य |
| ६०) | अरोरा दीपिका पंकज | सदस्या |
| ६१) | बेलानी हेमा राजेश | सदस्या |
| ६२) | दळवी प्रशांत ज्ञानदेव | सदस्य |
| ६३) | गजरे दौलत तुकाराम | सदस्य |
| ६४) | नाईक विविता विवेक | सदस्या |
| ६५) | सोंस नीला बर्नाड | सदस्या |
| ६६) | राय विजयकुमार सिस्थन नारायण | सदस्य |
| ६७) | शेख रुबीना फिरोझ | सदस्या |
| ६८) | डिसा मर्लिन मर्विन | सदस्या |
| ६९) | सावंत अनिल दिवाकर | सदस्य |
| ७०) | मेहरा राजीव ओमप्रकाश | सदस्य |
| ७१) | परमार हेतल रतिलाल | सदस्या |
| ७२) | कासोदारिया अश्विन शामजीभाई | सदस्य |
| ७३) | जैन दिनेश तेजराज | सदस्य |
| ७४) | भावसार वंदना संजय | सदस्या |

| | | |
|-----|---------------------------|--------|
| ७५) | शाह सीमाबेन कमलेश | सदस्या |
| ७६) | दुबे मनोज रामनारायण | सदस्य |
| ७७) | विराणी अनिल रावजीभाई | सदस्य |
| ७८) | सपार उमा विश्वनाथ | सदस्या |
| ७९) | अहमद साराह अकरम | सदस्या |
| ८०) | इनामदार जुबेर अब्दुल्ला | सदस्य |
| ८१) | शेख अशरफ मोहम्मद इब्राहीम | सदस्य |
| ८२) | भोईर जयेश भानुदास | सदस्य |
| ८३) | म्हात्रे नयना गजानन | सदस्या |
| ८४) | म्हात्रे विनोद काशिनाथ | सदस्य |
| ८५) | गोविंद हेलन जॉर्जी | सदस्या |
| ८६) | बगाजी शर्मिला विन्सन्ट | सदस्या |
| ८७) | बांड्या एलायस दुमिंग | सदस्य |

गौरहजर सदस्य -

| | | |
|----|------------------------|-------------|
| १) | पाटील रोहिदास शंकर | सभागृह नेता |
| २) | ढवण निलम हरीशचंद्र | सदस्या |
| ३) | रॉड्रीकस मोरस जोसेफ | सदस्य |
| ४) | शेख अमजद गफार | सदस्य |
| ५) | म्हात्रे सचिन केसरीनाथ | सदस्य |
| ६) | भट दीप्ती शेखर | सदस्या |
| ७) | भानुशाली वर्षा गिरधर | सदस्या |

रजेचा अर्ज -

| | | |
|----|-----------------|--------|
| १) | कदम अर्चना अरुण | सदस्या |
|----|-----------------|--------|

मा. महापौर :-

मा. विशेष महासभेस सुरुवात करावी.

नगरसचिव :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची मा . विशेष महासभा गुरुवार दि . २६/०७/२०१८ रोजी सकाळी ११.०० वाजता मिरा भाईंदर महानगरपालिका, स्व. इंदिरा गांधी भवन, मुख्य कार्यालय, तिसरा मजला, छत्रपती शिवाजी महाराज सभागृहात महासभा सुचना क्र . ०३ मधील प्रकरणांवर विचार विनिमय करण्यासाठी आयोजित करण्यांत येत आहे. प्रकरण क्र. ३८, दि. १८/०७/२०१८ रोजीच्या सभेतील ठराव क्र. २३ नुसार गठीत केलेल्या विशेष समित्यांवर तौलानिक संख्येप्रमाणे सदस्य घेणे . गोषवा-यामध्ये माहिती दिलेली आहे. तौलानिक संख्याबळानुसार विशेष समित्यांकरिता ९ ही समिती सदस्यांची संख्या निश्चित झालेली आहे. त्याप्रमाणे तौलानिक संख्याबळानुसार भारतीय जनता पार्टीला ६ शिवसेनेला २ आणि काँग्रेस लोकशाही आघाडीला १ याप्रमाणे प्रत्येक समितीवरती सदस्यांची गटनेत्यांनी नावे द्यायची आहेत.

मा. महापौर :-

सचिव महोदय आलेली नाव वाचा.

नगरसचिव :-

भारतीय जनता पक्षाचे गटनेता श्री. हसमुख गेहलोत यांनी चारही समित्यांसाठी सदस्यांची नाव दिलेली आहेत. ते मी वाचून दाखवतो. आरोग्य परिरक्षण वैद्यकिय सहाय्य या समितीसाठी ६ नाव दिलेली आहेत. १. डॉ. राजेंद्र जैन २. श्री. अशोक तिवारी ३. श्रीम. म्हात्रे नयना ४. श्रीम. दिपीका अरोरा ५. श्रीम. निला सोन्स ६. मनोज दुबे. दुसरी समिती आहे विधी नियोजन लोकलेखा या समितीवरती नाव दिलेली आहे. १. श्री. हसमुख गेहलोत २. श्री. रवि व्यास ३. श्री. सुरेश खंडेलवाल ४. श्री. म्हात्रे विनोद ५. श्री.

म्हात्रे सचिन ६. श्री. विराणी अनिल. पाणी पुरवठा व मल:निसारण समितीवरती नाव दिलेली आहेत १. श्री. प्रशांत दळवी २. मुन्ना सिंग ३. शाह राकेश ४. श्रीम. दिपाली मोकाशी ५. श्रीम. सुरेखा सोनार ६. श्री. गणेश भोईर. शिक्षण समाजकल्याण झोपडपट्टी सुधार समितीवरती नाव दिलेली आहे. १. श्रीम. हसनाळे ज्योत्सना २. श्री. धृवकिशोर पाटील ३. श्रीम. पाटील प्रभात प्रकाश ४. श्रीम. पाटील वंदना मंगेश ५. श्रीम. रुपाली शिंदे (मोदी) ६. श्रीम. अनिता मुखर्जी. काँग्रेस लोकशाही आघाडीतर्फे गटनेता जुबेर इनामदार यांनी नाव दिलेली आहेत. पाणी पुरवठा व मल:निसारण समिती करिता श्रीम. उमा सपार. शिक्षण समाजकल्याण करिता श्रीम. मर्लिन डिसा. विधी नियोजन समितीकरिता श्री. अशरफ शेख. आरोग्य परिरक्षण वैद्यकिय सहाय्य करिता गिता परदेशी. तसेच शिवसेनाच्या वतीने नाव आलेली आहेत. गटनेता हरिश्चंद्र आमगावकर यांनी नाव दिलेली आहेत. आरोग्य परिरक्षण वैद्यकिय सहाय्य समितीकरिता १.श्री. दिनेश नलावडे २. एलायस बांड्या. दुसरी समिती आहे. शिक्षण समाजकल्याण करिता श्री. प्रविण पाटील २. श्रीम. स्नेहा पांडे. विधी नियोजन समितीकरिता १. श्रीम. निलम ढवण २. श्रीम. शर्मिला बगाजी. पाणी पुरवठा व मल:निसारण समिती करिता श्री. जयंतीलाल पाटील व श्रीम. भावना भोईर. यांची नाव दिलेली आहेत. याप्रमाणे नाव घोषित केलेली आहे. आणि ती समिती गठीत झालेली आहे.

प्रकरण क्र. ३८ :-

दि. १८/०७/२०१८ रोजीच्या सभेतील ठराव क्र . २३ नुसार गठीत केलेल्या विशेष समित्यांवर तौलानीक संख्येप्रमाणे सदस्य घेणे.

ठराव क्र. ३८ :-

महानगरपालिकेच्या नवनिर्वाचित सदस्यांनी मा . विभागीय आयुक्त , कोकण विभाग यांचे कार्यालयात पक्ष / गट नोंदणी केलेली असून, दि. 10/10/2017 रोजीच्या पत्रान्वये मा. विभागीय आयुक्त, कोकण विभाग यांनी पक्ष / गटाचे तौलनिक संख्याबळ महानगरपालिकेस कळविले आहे . त्या अनुषंगाने तौलनिक संख्याबळाचे प्रमाणात विशेष समित्यांवर सदस्यांचे नामनिर्देशन खालीलप्रमाणे होत आहे

| अ. क्र. | पक्ष/गट/आघाडी | सरासरी | प्रस्तावीत सदस्य |
|---------|------------------------|------------------------------|------------------|
| १ | भारतीय जनता पार्टी | $६१ \div ९५ \times ९ = ५.७७$ | ६ |
| २ | शिवसेना | $२२ \div ९५ \times ९ = २.०८$ | २ |
| ३ | काँग्रेस लोकशाही आघाडी | $१२ \div ९५ \times ९ = १.१३$ | १ |

तौलनिक संख्याबळानुसार विशेष समित्यांवर सदस्य नेमणूक करणेसाठी सर्वपक्षीय गटनेत्यांनी शिफारस केलेल्या सदस्यांची एक वर्षाकरिता विशेष समित्यांवर नेमणूक करण्यात येत आहे

1) पाणी पुरवठा व मल:निसारण समिती

| अ.क्र. | सदस्याचे नाव | पक्ष |
|--------|---|------------------------|
| १ | श्री. प्रशांत ज्ञानदेव दळवी | भारतीय जनता पार्टी |
| २ | श्री. सिंग श्रीप्रकाश जिलेदार (मुन्ना सिंग) | भारतीय जनता पार्टी |
| ३ | श्री. राकेश रतिशचंद्र शाह | भारतीय जनता पार्टी |
| ४ | श्रीम. दिपाली आनंदराव मोकाशी | भारतीय जनता पार्टी |
| ५ | श्रीम. सुरेखा प्रकाश सोनार | भारतीय जनता पार्टी |
| ६ | श्री. गणेश गजानन भोईर | भारतीय जनता पार्टी |
| ७ | श्रीम. उमा विश्वनाथ सपार | काँग्रेस लोकशाही आघाडी |
| ८ | श्री. जयंतीलाल गुरुनाथ पाटील | शिवसेना |
| ९ | सौ. भावना राजू भोईर | शिवसेना |

2) शिक्षण व समाजकल्याण व झोपडपट्टी सुधार, क्रिडा व सांस्कृतिक समिती

| अ.क्र. | सदस्याचे नाव | पक्ष |
|--------|---------------------------------|------------------------|
| १ | श्रीम. ज्योत्सना जालींदर हसनाळे | भारतीय जनता पार्टी |
| २ | श्री. धृवकिशोर मन्साराम पाटील | भारतीय जनता पार्टी |
| ३ | सौ. प्रभात प्रकाश पाटील | भारतीय जनता पार्टी |
| ४ | श्रीम. पाटील वंदना मंगेश | भारतीय जनता पार्टी |
| ५ | श्रीम. रुपाली वसंत शिंदे / मोदी | भारतीय जनता पार्टी |
| ६ | श्रीम. अनिता बबलू मुखर्जी | भारतीय जनता पार्टी |
| ७ | श्रीम. मर्लिन मर्विन डिसा | काँग्रेस लोकशाही आघाडी |
| ८ | श्री. प्रविण मोरेश्वर पाटील | शिवसेना |
| ९ | सौ. स्नेहा शैलेश पांडे | शिवसेना |

3) विधी व नियोजन समिती

| अ.क्र. | सदस्याचे नाव | पक्ष |
|--------|---------------------------------|------------------------|
| १ | श्री. हसमुख मोहनलाल गेहलोत | भारतीय जनता पार्टी |
| २ | श्री. रवी वासुदेव व्यास | भारतीय जनता पार्टी |
| ३ | श्री. सुरेश जगदीश खंडेलवाल | भारतीय जनता पार्टी |
| ४ | श्री. विनोद काशिनाथ म्हात्रे | भारतीय जनता पार्टी |
| ५ | श्री. सचिन केसरीनाथ म्हात्रे | भारतीय जनता पार्टी |
| ६ | श्री. अनिल रावजीभाई विराणी | भारतीय जनता पार्टी |
| ७ | श्री. अशरफ मोहम्मद इब्राहीम शेख | काँग्रेस लोकशाही आघाडी |
| ८ | सौ. निलम हरिश्चंद्र ढवण | शिवसेना |
| ९ | श्रीम. शर्मिला विन्सन्ट बगाजी | शिवसेना |

4) आरोग्य परिरक्षण, वैद्यकीय सहाय्य, उद्यान व शहर सुशोभिकरण समिती

| अ.क्र. | सदस्याचे नाव | पक्ष |
|--------|----------------------------|------------------------|
| १ | डॉ. राजेंद्र भवरलाल जैन | भारतीय जनता पार्टी |
| २ | श्री. अशोक सूर्यदेव तिवारी | भारतीय जनता पार्टी |
| ३ | श्रीम. म्हात्रे नयना गजानन | भारतीय जनता पार्टी |
| ४ | श्रीम. दिपिका पंकज अरोरा | भारतीय जनता पार्टी |
| ५ | श्रीम. निला बर्नाड सॉस | भारतीय जनता पार्टी |
| ६ | श्री. मनोज रामनारायण दुबे | भारतीय जनता पार्टी |
| ७ | श्रीम. गिता हरीश परदेशी | काँग्रेस लोकशाही आघाडी |
| ८ | श्री. दिनेश दगडू नलावडे | शिवसेना |
| ९ | श्री. एलायस दुमिंग बांड्या | शिवसेना |

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

मा. महापौर :-

पुढचा विषय घ्या.

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ३९, **सुधारीत विकास योजना - मिरा भाईंदर महानगरपालिकाम.प्रा.व.न.र. अधिनियम, १९६६ चे कलम २६ अन्वये प्रारूप विकास योजना प्रसिध्द करणेस मुदतवाढ मिळणेबाबत**

जुबेर इनामदार :-

साहेब मुदतवाढ द्यावीच लागेल आपल्याकडे दुसरा काही पर्याय नाही. मात्र साहेब ६ महिने २६ दिवस आज उलटतील त्याच्यातून वजा आचारसंहिताचे जे दिवस आहेत तितकेच होतील. किती दिवस वजा होतील?

धृवकिशोर पाटील :-

मिरा भाईंदर महापालिका सार्वत्रिक निवडणूक झाली त्याचे जे ४५ ते ५० दिवस होते ते पण वगळतील.....

जुबेर इनामदार :-

दोन आचार संहिता आपल्याकडे त्याचे किती दिवस वजा होत आहेत?

धृवकिशोर पाटील :-

अडीच ते तीन महिने.

जुबेर इनामदार :-

प्रशासनाने सांगावे.

मा. आयुक्त :-

विकास योजनेचे कामकाज अंतिम होईपर्यंत मुदत वाढ देण्यात येते असं तुम्ही करा.

जुबेर इनामदार :-

साहेब तरतुद तुमची ६ महिन्यांची आहे.

मा. आयुक्त :-

परत वाढ करणे त्याला आमचा प्रस्ताव येतो तो पिरेड संपला नाही झाली ना परत अजुन आमचा प्रस्ताव येतो.

जुबेर इनामदार :-

मान्य आहे साहेब याचा आम्ही जो अधिवेशनाच्या काळामध्ये अर्थसंकल्पीय अधिवेशनामध्ये जी घोषणा झाली नविन आराखडा तयार करायचा जुना केलेला आराखडा रद्द करण्यात येत आहे. मग त्याची वस्तुस्थिती काय?

मा. आयुक्त :-

मा. महापौर महोदय सन्मा. सदस्यांनी उपस्थित केलेला मुद्दा बरोबर आहे. मागील अधिवेशनामध्ये म्हणजे नागपुरच्या पुर्वीच्या अधिवेशनामध्ये सभागृहात चर्चेच्या कामकाजामध्ये मा. मंत्री महोदयांनी तशा पध्दतीचा निर्णय त्याचे प्रोसेडिंग आहेत आणि त्याचे कार्यपालनाबाबतचे जे आदेश आहेत ते अजुन महापालिकेला आले नाहीत.

जुबेर इनामदार :-

पण त्याची काही चौकशीचे पालिकेने त्याचा पाठपुरावा केला का त्यांच्याकडून तस शासनाकडून मागितलेले आहे का.

मा. आयुक्त :-

हा शासनाचा निर्णय आहे. त्यामुळे पुढचे कामकाज बंद आहे. आपण त्याच्यावर काही अंमल केले नाही किंवा नव्याने आपण काही करत नाही ते त्यांचे जे आदेश येतील त्याप्रमाणे त्याचे अंमल होईल.

जुबेर इनामदार :-

साहेब पालिकेने सुध्दा ह्या विषयावर पाठपुरावा करावा त्यांच्याकडून उत्तर मागावे खरी परिस्थिती काय आहे.

मा. आयुक्त :-

ठिक आहे.

जुबेर इनामदार :-

त्याच्यामध्ये संभ्रम कशाला पाहिजे.

मा. आयुक्त :-

ही हाऊसमध्ये चर्चा झाली आणि त्याबाबतची मिनिट्स आहेत ते राज्यशासनाला आम्ही वस्तुस्थिती क्लॅरिटीसाठी लिहिलेले आहे आणि अजुन त्याच्यात पाठपुरावा केला जाईल.

जुबेर इनामदार :-

पत्र दिलेले आहे का?

मा. आयुक्त :-

दिलेले आहे अजुन पाठपुरावा केला जाईल.

जुबेर इनामदार :-

ठिक आहे.

अनिल सावंत :-

महापौर मॅडम आपल्या परवानगीने आयुक्त साहेब मिरा भाईंदर शहराचा विकास आराखडा १० वर्षांची मुदत संपल्यानंतर नविन ३० वर्षांची मुदत संपल्यानंतर नविन विकास आराखडा बनविते वेळी फार मोठे रामायण ह्या शहरामध्ये घडलं. ह्या हाऊसमध्ये तो विकास आराखडा फोडला म्हणून पत्रकारांवर गुन्हे दाखल करा असे ठराव सुध्दा पास झाले. त्याच्यानंतर बऱ्याचशा तक्रारी आल्यानंतर तारांकित प्रश्न मा. आमदार प्रताप सरनाईक साहेबांनी हाऊसमध्ये विचारलं आणि त्या तक्रारींची दखल घेऊन गृहराज्य मंत्र्यांनी त्या प्रारूप विकास आराखड्याला स्थगिती दिली. ते संपूर्ण रेकॉर्डिंग आहे. आता शासनाचा असा काही आदेश आला आहे का तुम्ही जुना जो आराखडा आहे तो प्रसिध्दीसाठी करू शकता असा काही आदेश आलेला नाही. दुसरा महत्वाचा मुद्दा असा आहे तत्कालीन नगररचनाकार ज्यांनी हा दोन वर्षांमध्ये विकास आराखडा बनवायचा होता. १०/१०/२०१७ रोजी त्यांना कार्यमुक्त केलं ज्यांनी हा प्रारूप विकास आराखडा बनवण्याची त्याच्यावर जबाबदारी होती. १० ऑक्टोबर २०१७ ला कार्यमुक्त केल्यानंतर त्यांनी प्रारूप सुधारीत विकास योजना ७ फेब्रुवारी २०१८ चे गोपनीय पत्राद्वारे सादर केली. म्हणजे ऑक्टोबर ते फेब्रुवारी ७ हा प्रारूप विकास आराखडा कोणाजवळ होता. १० ऑक्टोबरला त्यांना कार्यमुक्त केलं आणि त्यांनी जो विकास आराखडा गोपनीय अवस्थेत दिलेला आहे तो ७ फेब्रुवारीला दिलेला आहे. मग हे ऑक्टोबर ते ७ फेब्रुवारी हा विकास आराखडा कुठे होता? ४ महिने हा विकास आराखड्याची परिस्थिती काय होती?

नगररचनाकार :-

मा. महापौर महोदय मा. उपमहापौर साहेब, मा. आयुक्त साहेब व सन्मा. सभागृह तत्कालीन नगररचनाकार जे होते यांनी कलम २३ व ३८ अन्वये महापालिकेने इरादा जाहिर केल्यानंतर २४ अन्वये त्यांची नगररचनाकार व नगररचना अधिकारी म्हणून नेमणूक करण्यांत आली होती. मा. सह. संचालक यांच्या मुदतीने त्यांची जेव्हा १०/१०/२०१७ ला येथून कार्यमुक्त करण्यात आले तदनंतर त्यांना जेव्हा ह्या कार्यालयाकडून विचारणा करण्यात आली की विकास योजनेचा कार्यभार त्याच्याकडेच होता. त्यामुळे त्यांना विचारणा करण्यात आली की आपण ते सबमिट करावे. ५/२ ला आपण त्यांना पत्र पाठवलं त्यांनी जे काम केलं त्याबद्दल त्यांनी ते सिलबंद लिफाफ्यातुन आपल्याकडे सबमिट केलेले आहे आणि तो जो डी.पी. आहे तो आम्ही अजून उघडलेला नाही. अजून तो सिलबंद अवस्थेतच गोपनीय अवस्थेतच ठेवलेला आहे.

अनिल सावंत :-

आयुक्त साहेब १० ऑक्टोबरला त्यांना कार्यमुक्त केल्यानंतर प्रारूप विकास आराखडा इज अ प्रॉपर्टी ऑफ म्युनिसिपाल्टी नॉट दॅट इन्डीव्ह्यूज्वल ऑफिसर. १० ऑक्टोबरला ते कार्यमुक्त झाले आणि ५ फेब्रुवारीला तुम्ही त्याला पत्र पाठवत आहेत की, तुमचा अहवाल द्या म्हणून. मग हे ४ महिने त्याच्याकडे अन ऑफिशियल तो प्रारूप विकास आराखडा होता.

मा. आयुक्त :-

या योजनेसाठी मा. सहसंचालकाच्या मान्यतेने त्यांची नगररचनाकार टी.पी.ओ. म्हणून त्याची नियुक्ती होती. त्यांनी कामकाज केलेले होते.

अनिल सावंत :-

बरोबर आहे.

मा. आयुक्त :-

उद्या तुम्हीच म्हणणार की यांनी काय काम केलेलं त्याचे डॉक्युमेन्ट कुठे आहे म्हणून तो ऑफिस कामकाजाचा भाग आहे त्यांनी जे कामकाज केलेले आहे ते कस्टडीमध्ये ठेवलेले आहे.

अनिल सावंत :-

पण आपण ते ४ महिन्यांनंतर मागितल साहेब. १० तारखेला ते कार्यमुक्त झाले.....

मा. आयुक्त :-

हेच करताना प्रशासनामध्ये ते डॉक्युमेंट बदल त्यांना खात्री झाली असेल ते कुणाच्या सहिने मागितल होतं.

नगररचनाकार :-

तत्कालीन आयुक्त जे गिते साहेब त्यांच्या स्वाक्षरीने.....

मा. आयुक्त :-

त्यांच्याकडून अहवाल मागवला होता.

अनिल सावंत :-

कधी साहेब ४ महिने नंतर मग हे ४ महिने अन ऑफिशियल डॉक्युमेंट त्यांनी आपल्याजवळ ठेवले ना.

नगररचनाकार :-

त्यांच्या कस्टडीतच होतं ते परंतु त्यांनी सिलबंद लिफाफ्यातून आपल्याकडे सबमीट केलेले आहे.

अनिल सावंत :-

ते सिलबंद लिफाफा तो नंतर सिलबंद झाला असेल १० तारखेला ते कार्यमुक्त झाल्यानंतर त्यांच्या जवळ तो विकास आराखडा राहिला कसा. ती म्युन्सीपाल्टीची डॉक्युमेंट एवढे ४ महिने त्यांच्याजवळ राहिल्यानंतर त्यांच्यामध्ये काय काय घडामोडी झाल्या असतील साहेब बऱ्याचशा पेपरमध्ये बरेचसे व्हॉट्सअपवर फिरला तो विकास आराखड्याचा फोटो व्हॉट्सअपवर फिरला हे त्या कालावधीमध्ये घडलेले आहे. मग आता त्या विकास आराखड्याची १० ऑक्टोबरपर्यंत त्यांनी काम केलं. १० ऑक्टोबर नंतर त्यांना काम करायचे अलाऊड नाही ते कार्यमुक्त झाले मग हे ४ महिने त्यांच्या जवळ तो अहवाल ठेवायची गरज काय. आपण सुध्दा ४ महिन्यांनंतर मागत आहोत.

मा. उपमहापौर :-

सावंत साहेब त्यांच्यात अशी माहिती आहे की त्यांची बदली झाली तोपर्यंत तो आराखडा महापालिकेच्या कस्टडीत होता आणि तेथून तत्कालीन आयुक्त डॉ. नरेश गिते साहेबांनी तो सिलबंद त्याची माहिती राज्यशासनाला दिली. त्यांची बदली झाल्यानंतर तो आपल्या.....

अनिल सावंत :-

१० ऑक्टोबरला तो आराखडा आपल्याजवळ होता.

मा. उपमहापौर :-

आपल्या जवळच होता.

अनिल सावंत :-

मग याच्यामध्ये.....

मा. उपमहापौर :-

आताही महापालिकेच्या कस्टडीतच आहे.

अनिल सावंत :-

आता आहे.

मा. आयुक्त :-

त्याचे स्टेट्स काय आहे ते राज्यशासना.....

जुबेर इनामदार :-

प्रशासनाने उत्तर द्याव साहेब. ह्याच कारणाला तो रद्द झाला. प्रशासनाने त्याचे स्पष्ट उत्तर द्यावे की ४ महिने तो लॉकअपमध्ये कुठेतरी गोपनिय होता कुणाच्या तरी दफ्तरीमध्ये होता. म्हणून प्रशासनाने तो राज्य शासनाने तो रद्द करायला घेतला.

मा. आयुक्त :-

त्यामध्ये असे काही वेगळे नाही. तत्कालीन आयुक्तांनी त्यासंबंधीत टि.पी.ओ ला पत्र देऊन ते हस्तगत केलेले आहे आणि टि.पी.ओ हे महापालिकेचेच होते.

अनिल सावंत :-

साहेब तुमचा गोषवारा काय म्हणतो आहे १० ऑक्टोबर २०१७ रोजी कार्यमुक्त केल्यानंतर प्रारूप सुधारीत विकास योजना ७ फेब्रुवारी २०१८ चे गोपनिय पत्राद्वारे सादर केलेले आहे म्हणजे त्यांनी तुम्हाला ७ फेब्रुवारीला सादर केले. १० ऑक्टोबरला आपल्याकडे नव्हता. नगररचना चुकीची माहिती देत आहे.

साहेब यांच्यामुळेच तारांकित प्रश्न उपस्थित केला गेला. या प्रारूप विकास आराखड्याच्या बाबतीत नगररचना विभागाने जर दिरंगाई केली असेल किंवा त्या अधिका-यांनी जर अन ऑफिशियल डॉक्युमेंट आपल्याजवळ ठेवले असेल कस्टडीमध्ये आणि त्याच्यामध्ये फेरफार झालेला असेल तर याची पूर्ण चौकशी आपण करावी आणि दोषी व्यक्तीवर कारवाई करावी. आणि मुदतवाढ आपण मागत आहेत मुदतवाढ सहा महिने मिळाल्यानंतर आपण अॅडव्हान्समध्ये मुदतवाढ मागणार किंवा शासन आणखी काय निर्देश देणार त्याचा त्वरीत पाठपुरावा करून ह्या शहराला एक चांगली आता आपण बघितली. शहराची परिस्थिती दोन तासापूर्वी चर्चा झाली सविस्तर त्याच्यावर चांगली विकास योजना कशी देता येईल. विकास आराखडा कसा बनवता येईल त्याच्यासाठी आपण जातीने लक्ष घालावे साहेब.

मा. आयुक्त :-

सुचनेची नोंद घेतली जाईल आणि त्या अन्वये कारवाई केली जाईल.

मा. महापौर :-

ठिक आहे ठराव.

प्रशांत दळवी :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची विकास योजना भागशः दि .14/05/1997 रोजी मंजूर झाली असून, वगळलेल्या भागाची विकास योजना दि.25/01/2000 रोजी मंजूर झालेली आहे. तदंतर सदरच्या मंजूर विकास योजनेमधील **MMRDA** मार्फत तयार करण्यात आलेल्या व शासनाने मंजूर केलेल्या विकास योजनेचा भाग वगळून उर्वरीत भागाची विकास योजना सुधारित करणेकामी नियोजन प्राधिकरण तथा मिरा भाईंदर महानगरपालिकेने ठराव क्र . 76, दि.15/04/2015 अन्वये महाराष्ट्र प्रादेशिक व नगररचना अधिनियम 1966 चे कलम 23 व 38 नुसार इरादा जाहिर केला होता .तदंतर उक्त अधिनियमाचे कलम 24 अन्वये विभागीय सहसंचालक , नगररचना, कोकण विभाग , नवीमुंबई यांचे पुर्वमान्यतेने नगररचना अधिकारी म्हणून तत्कालीन नगररचनाकार , मिरा भाईंदर महानगरपालिका (प्रतिनियुक्ती) यांची नियोजन प्राधिकरणाने दि .10/03/2016 चे आदेशान्वये नेमणूक केली होती.

तत्कालीन नगररचना अधिकारी यांनी मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच सुधारित विकास योजना खालील क्षेत्राचा उक्त अधिनियमाचे कलम 25 नुसार नकाशा तयार करून दि .24/06/2016 रोजीचे पत्रान्वये नियोजन प्राधिकरणाकडे विहित मुदतीत सादर केला.

उक्त क्षेत्राची प्रारूप विकास योजना , इरादा प्रसिध्दिपासून (महाराष्ट्र शासन राजपत्र प्रसिध्दी दि.26/12/2015) 2 वर्षांचे आत म्हणजेच दि .25/12/2017 या मुळ मुदतीत नियोजन प्राधिकरणाच्या मान्यतेने प्रसिध्द करणे आवश्यक होते . तथापि तत्कालीन नगररचनाकार तथा नगररचना अधिकारी यांना दि.10/10/2017 रोजी कार्यमुक्त केल्यानंतर प्रारूप सुधारित विकास योजना दि .07/02/2018 चे गोपनिय पत्रान्वये सादर केलेली आहे . सदर सादर केलेली प्रारूप विकास योजनेच्या प्रसिध्दीबाबत व वैधानिकतेबाबत नगररचना विभागाने मा . सहसंचालक यांचेकडे दि.14/02/2018 चे पत्रान्वये मार्गदर्शन अपेक्षिलेले होते. त्यावर विभागीय कार्यालयाकडून तत्कालीन नगररचनाकार तथा नगररचना अधिकारी कार्यमुक्त झाल्यानंतर त्या पदावर रुजू झालेल्या / कार्यभार असलेल्या नगररचनाकार यांनी नगररचना अधिकारी म्हणून काम करणे अपेक्षित असल्याचे कळविले आहे . तदंतर सुधारित विकास योजना प्रसिध्दीच्या अनुषंगाने महाराष्ट्र विधानसभा अर्थसंल्लापिय अधिवेशनामध्ये तारांकित प्रश्न उपस्थित करणेत आला होता.

वरील सर्व बाबींच्या अनुषंगाने सुधारित विकास योजनेची कार्यवाही पुर्ण करून ती प्रसिध्द करणेसाठी कोणती कार्यवाही करणे आवश्यक व वैधानिकदृष्ट्या योग्य राहिल याबाबत शासनास मार्गदर्शन अपेक्षिलेले आहे . तथापि सदर बाबतीत अद्याप शासनाकडून मार्गदर्शन प्राप्त झालेले नाही . त्यामुळे तत्कालीन नगररचना अधिकारी यांनी गोपनिय पत्राव्दारे सादर केलेली प्रारूप सुधारित विकास योजना अद्यापही सीलबंद लिफाफ्यात ठेवणेत आली आहे.

वर नमुद केल्याप्रमाणे प्रारूप विकास योजना इरादा प्रसिध्दीपासून 2 वर्षांच्या आत म्हणजेच दि.25/12/2017 पर्यंत प्रसिध्द झालेली नाही . करिता वैधानिकदृष्ट्या मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची प्रारूप सुधारित विकास योजना प्रसिध्द करणेसाठी कलम 26 अन्वये मुदतवाढ मिळणेकरिता शासनाकडे संदर्भ करणे आवश्यक आहे.

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची सन 2011 च्या जनगणनेनुसारची लोकसंख्या 809378 इतकी असून कलम 26(तीन) नुसार एकूण सहा महिन्याची मुदतवाढ अनुज्ञेय होवू शकते . सद्यस्थितीत मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या प्रारूप विकास योजना प्रसिध्दीबाबत येत असलेल्या वर नमुद केलेल्या वैधानिक अडचणीमुळे होत असलेला विलंब व शासनाकडून अपेक्षित असलेल्या मार्गदर्शानुसार करावयाची कार्यवाही यासाठी लागणारा कालावधी विचारात घेता तसेच दरम्यानच्या कालावधीमध्ये मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची झालेल्या निवडणूकीच्या आचारसंहितेचा कालावधी व पदवीधर मतदान निवडणूकीचा आचारसंहितेचा कालावधी वगळून दि .25/12/2017 पासून पुढील सहा महिन्याकरिता प्रारूप विकास योजना प्रसिध्दीकरिता मुदतवाढ मिळणेकरिता प्रस्ताव शासनास सादर करणेकामी व त्याअनुषंगीक सर्व कार्यवाही करणेसाठी मा . आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांना अधिकार देण्यास ही महासभा मंजूरी देत आहे .तसेच नगररचना अधिकारी यांचे नेमणूकीबाबत मा .सह संचालक, नगररचना, कोकण विभाग यांच्या अभिप्रायाशी ही सभा सहमत असून त्याप्रमाणे विद्यमान नगररचनाकार यांनी नगररचना अधिकारी म्हणून सुधारीत विकास आराखडा पुढील तीन महिन्यांच्या आत मा.महासभेत सादर करावा असा मी ठराव मांडत आहे.

दिनेश जैन :-

माझे अनुमोदन आहे.

मा. महापौर :-

ठराव मंजूर. पुढचा विषय घ्या.

प्रकरण क्र. ३९ :-

सुधारीत विकास योजना - मिरा भाईंदर महानगरपालिकाम.प्रा.व.न.र. अधिनियम, १९६६ चे कलम २६ अन्वये प्रारूप विकास योजना प्रसिध्द करणेस मुदतवाढ मिळणेबाबत.

ठराव क्र. ३९ :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची विकास योजना भागशः दि .14/05/1997 रोजी मंजूर झाली असून, वगळलेल्या भागाची विकास योजना दि.25/01/2000 रोजी मंजूर झालेली आहे. तदंतर सदरच्या मंजूर विकास योजनेमधील **MMRDA** मार्फत तयार करण्यात आलेल्या व शासनाने मंजूर केलेल्या विकास योजनेचा भाग वगळून उर्वरीत भागाची विकास योजना सुधारित करणेकामी नियोजन प्राधिकरण तथा मिरा भाईंदर महानगरपालिकेने ठराव क्र . 76, दि.15/04/2015 अन्वये महाराष्ट्र प्रादेशिक व नगररचना अधिनियम 1966 चे कलम 23 व 38 नुसार इरादा जाहिर केला होता .तदंतर उक्त अधिनियमाचे कलम 24 अन्वये विभागीय सहसंचालक , नगररचना, कोकण विभाग, नवीमुंबई यांचे पुर्वमान्यतेने नगररचना अधिकारी म्हणून तत्कालीन नगररचनाकार , मिरा भाईंदर महानगरपालिका (प्रतिनियुक्ती) यांची नियोजन प्राधिकरणाने दि .10/03/2016 चे आदेशान्वये नेमणूक केली होती.

तत्कालीन नगररचना अधिकारी यांनी मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच सुधारित विकास योजना खालील क्षेत्राचा उक्त अधिनियमाचे कलम 25 नुसार नकाशा तयार करून दि .24/06/2016 रोजीचे पत्रान्वये नियोजन प्राधिकरणाकडे विहीत मुदतीत सादर केला.

उक्त क्षेत्राची प्रारूप विकास योजना , इरादा प्रसिध्दीपासून (महाराष्ट्र शासन राजपत्र प्रसिध्दी दि.26/12/2015) 2 वर्षांचे आत म्हणजेच दि .25/12/2017 या मुळ मुदतीत नियोजन प्राधिकरणाच्या मान्यतेने प्रसिध्द करणे आवश्यक होते . तथापि तत्कालीन नगररचनाकार तथा नगररचना अधिकारी यांना दि.10/10/2017 रोजी कार्यमुक्त केल्यानंतर प्रारूप सुधारित विकास योजना दि .07/02/2018 चे

गोपनिय पत्रान्वये सादर केलेली आहे . सदर सादर केलेली प्रारूप विकास योजनेच्या प्रसिध्दीबाबत व वैधानिकतेबाबत नगररचना विभागाने मा. सहसंचालक यांचेकडे दि.14/02/2018 चे पत्रान्वये मार्गदर्शन अपेक्षिलेले होते. त्यावर विभागीय कार्यालयाकडून तत्कालीन नगररचनाकार तथा नगररचना अधिकारी कार्यमुक्त झाल्यानंतर त्या पदावर रुजू झालेल्या / कार्यभार असलेल्या नगररचनाकार यांनी नगररचना अधिकारी म्हणून काम करणे अपेक्षित असल्याचे कळविले आहे . तदंतर सुधारित विकास योजना प्रसिध्दीच्या अनुषंगाने महाराष्ट्र विधानसभा अर्थसंल्लापिय अधिवेशनामध्ये तारांकित प्रश्न उपस्थित करणेत आला होता.

वरील सर्व बाबींच्या अनुषंगाने सुधारित विकास योजनेची कार्यवाही पूर्ण करून ती प्रसिध्द करणेसाठी कोणती कार्यवाही करणे आवश्यक व वैधानिकदृष्ट्या योग्य राहिल याबाबत शासनास मार्गदर्शन अपेक्षिलेले आहे . तथापि सदर बाबतीत अद्याप शासनाकडून मार्गदर्शन प्राप्त झालेले नाही . त्यामुळे तत्कालीन नगररचना अधिकारी यांनी गोपनिय पत्राव्दारे सादर केलेली प्रारूप सुधारित विकास योजना अद्यापही सीलबंद लिफाफ्यात ठेवणेत आली आहे.

वर नमुद केल्याप्रमाणे प्रारूप विकास योजना इरादा प्रसिध्दीपासून 2 वर्षांच्या आत म्हणजेच दि.25/12/2017 पर्यंत प्रसिध्द झालेली नाही . करिता वैधानिकदृष्ट्या मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची प्रारूप सुधारित विकास योजना प्रसिध्द करणेसाठी कलम 26 अन्वये मुदतवाढ मिळणेकरिता शासनाकडे संदर्भ करणे आवश्यक आहे.

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची सन 2011 च्या जनगणनेनुसारची लोकसंख्या 809378 इतकी असून कलम 26(तीन) नुसार एकूण सहा महिन्याची मुदतवाढ अनुज्ञेय होवू शकते . सद्यस्थितीत मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या प्रारूप विकास योजना प्रसिध्दीबाबत येत असलेल्या वर नमुद केलेल्या वैधानिक अडचणीमुळे होत असलेला विलंब व शासनाकडून अपेक्षित असलेल्या मार्गदर्शानुसार करावयाची कार्यवाही यासाठी लागणारा कालावधी विचारात घेता तसेच दरम्यानच्या कालावधीमध्ये मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची झालेल्या निवडणूकीच्या आचारसंहितेचा कालावधी व पदवीधर मतदान निवडणूकीचा आचारसंहितेचा कालावधी वगळून दि .25/12/2017 पासून पुढील सहा महिन्याकरिता प्रारूप विकास योजना प्रसिध्दीकरिता मुदतवाढ मिळणेकरिता प्रस्ताव शासनास सादर करणेकामी व त्याअनुषंगीक सर्व कार्य वाही करणेसाठी मा . आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका यांना अधिकार देण्यास ही महासभा मंजूरी देत आहे .तसेच नगररचना अधिकारी यांचे नेमणूकीबाबत मा.सह संचालक, नगररचना, कोकण विभाग यांच्या अभिप्रायाशी ही सभा सहमत असून त्याप्रमाणे विद्यमान नगररचनाकार यांनी नगररचना अधिकारी म्हणून सुधारीत विकास आराखडा पुढील तीन महिन्यांच्या आत मा.महासभेत सादर करावा असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- श्री. प्रशांत दळवी

अनुमोदन :- श्री. दिनेश जैन

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४०, मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील रस्ते रुंदीकरण , फॅनिंग करणे इ. कामे करण्यासाठी मोबदला देणेबाबतचे धोरण निश्चित करणे.

प्रभात पाटील :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील विकास योजनेतील रस्ते , रुंदीकरण, फॅनिंग करणे , नविन रस्ते , आरक्षणामध्ये बाधित होणाऱ्या बाधितांना मोबदला देणेकरिता खालीलप्रमाणे समिती गठीत करण्यात येत आहे.

| अ.क्र. | समिती सदस्य | पद |
|--------|-------------|---------|
| १ | महापौर | अध्यक्ष |

| | | |
|---|----------------------|-------|
| २ | उप-महापौर | सदस्य |
| ३ | सभापती, स्थायी समिती | सदस्य |
| ४ | सभागृह नेते | सदस्य |
| ५ | विरोधी पक्षनेते | सदस्य |
| ६ | सर्व पक्षीय गटनेते | सदस्य |
| ७ | आयुक्त | सदस्य |

वरील प्रमाणे समिती गठीत करण्यात येत असून सदर समिती बाधितांना मोबदला देणेबाबत निर्णय घेईल विशेष बाब म्हणून देखील मोबदला देण्याचा समिती निर्णय घेवू शकेल . सदरची समिती कायमस्वरूपी ठेवण्यात येत असून समितीचा निर्णय अंतिम असेल असा मी ठराव मांडत आहे.

धृवकिशोर पाटील :-

माझे अनुमोदन आहे.

जुबेर इनामदार :-

साहेब इंटररेस्टिंग सबजेक्ट आहे. समिती हा ठिक आहे पर्यायी मार्ग शोधला असेल सत्ताधा-यांनी मात्र ही समिती गठीत तेव्हा होईल जेव्हा हा विषय विधीवत आहे का नाही विषय तो आहे साहेब. हा नगररचना विभागाने आपल्याला गोषवारा दिलेला आहे. समिती गठीत केली याच्या आधी आणि त्या समितीने शहरामध्ये जितके काही आरक्षणे आहेत किंवा रस्त्याच्या कडेला फॅनिंग करून फॅनिंग करताना ज्यांचे काही नुकसान होत असेल त्यांना आम्ही मोबदला देणार. चांगली गोष्ट आहे साहेब दिलेच पाहिजे देता आले पाहिजे. दिले पाहिजे पेक्षा देता आले पाहिजे. पालिकेची साहेब कामकाज हा विधीवत पध्दतीने होतो आपल्याला वाटतो त्याला सहानुभुतीपूर्वक द्यावा कुठलीही वस्तु तस होत नाही साहेब. तत्कालीन आयुक्त अच्युत हांगे साहेब ते विराजमान असताना शहरामध्ये विविध रस्ते आराखड्यातील विविध रस्ते रुंदीकरण करण्याचे काम म्हणजे आराखड्यातला रस्ता तो १० फुटाचा होता तो १८ फुट करायचा किंवा १२ फुटाचा होता तो आराखड्याप्रमाणे करायचा. हा काळ हाती घेण्यात आला होता. तेव्हा १७ रस्ते हाती घेण्यात आले होते आणि ते रस्ते करताना आराखडा आपला तयार झाला १९९७ ला आणि त्या आराखड्यावर जी लोक जी वस्ती आहे किंवा व्यवसाय आहे किंवा जी इंडस्ट्रीयल इस्टेट किंवा इंडस्ट्रीयल गाळे होते ते १९९७ आधीचे होते. शहर विकसित झाले पाहिजे आराखड्याप्रमाणे काम ही झाली पाहिजे. मात्र त्याला आपल्याला बंधन आहे. त्याला बंधन महाराष्ट्र प्रादेशिक नगररचना अधिनियमाचे आहेत. शासनाने आपल्याकडे नियमावली पाठविलेली आहे. आपण काही तयार केलेली नाही तुमच्या आणि माझ्या कार्यकालामध्ये तयार झालेली नियमावली नाही. शासनाने तयार करून तुमच्यावरती लादलेली आहे. या नियमावलीप्रमाणे तुम्हाला आपले कामकाज करायचे आहे शहर रचनाचे कामकाज करायचे आहे आणि ते करताना तुम्हाला काही अडचण आली किंवा तुम्हाला त्याच्यामध्ये काही दुरुस्त्या करायच्या असल्या तुम्हाला ते सुचवता येतील आणि ते सुचवताना तुम्हाला ३७ (१) खाली सुचवल्या पाहिजे हा नियम आहे. ह्या गोषवा-यात मला वाटत नाही साहेब कदाचित साहेब ही आपली स्वाक्षरी आहे की नाही मला कल्पना नाही. ह्या गोषवा-यामध्ये मिरा भाईंदर महापालिका क्षेत्र रुंदीकरण करण्याकरिता रस्ते रुंदीकरण करण्याकरिता कायदेशीर बाबींचा अभ्यास करून कार्यपध्दतीचा मसुदा व धोरण तयार करण्यासाठी खालील अधिका-यांची समिती गठीत करण्यात आली. श्री. माधव कुसेकर, श्री. शिवाजी बारकुंड, श्री. दिपक पुजारी, श्री. दिपक खांबित, श्री. हेमंत ठाकुर आणि श्रीम. सई वडके या सर्वांनी एकत्र येऊन एक समिती गठीत झाली. त्यांनी हे कामकाज केलेले आहे. त्याच्यामध्ये दोन वस्तुंचा उल्लेख केला. विकास नियंत्रण नियमावलीचा परिशिष्ट ४ विनियम ३३ चा याच्यामध्ये ३३ सेक्शन काय बोलतो. ०१ ते ६ याच्यामध्ये ३ नंबर सुध्दा डेव्हलपमेंट ऑफ राईट्स दे आर विल बी ग्रान्टेड टू ओनर ऑर लेसीसी पट्टाधारक किंवा मालमत्ता ज्याची असेल ओनर मुळ मालक आणि ६ नंबर व्हेन द ओनर ऑर लेसीसी मालक किंवा पट्टाधारक अल्सो डेव्हलप्स ऑर कन्स्ट्रक्ट द अॅम्प्युनिटी ऑन द सरॅंडर प्लॉट्स अॅमिनिटीमध्ये रस्तेही येऊ शकतात आणि बाकीचे ही बरेच काही विकासाची वस्तु त्या पालिका वेळोवेळी जशी कळवेल त्याप्रमाणे ते करून देता येईल. आणि त्याची डी.आर.सी. म्हणजे विकास हक्क प्रमाणपत्र पालिकेला देता येईल. हे सगळ काही याच्यामध्ये स्पष्ट असताना सुध्दा पालिकेने साहेब एक गोषवारा दिलेला आहे. आणि त्या गोषवा-यामध्ये साहेब किती जबाबदार लोकांनी जी कमिटी होती जबाबदार लोकांची आणि त्या जबाबदार लोकांनी गोषवारा दिला विकास योजनेचे रस्ते बाधित होत आहेत अशा बांधकाम खालील जागेच्या खाजगी जागा मालकास / कुलमुक्तार पत्र धारकास मिरा भाईंदर महापालिका मंजुर विकास नियंत्रण नियमावली परिशिष्ट ४ विनियम ३३ मधील तरतुद तसेच शासन नगरविकास निर्णय टी.पी.एस

१८१३-३०६७ प्रकरण क्र. १२२/१२ मनपा/कोकण/नवि-१३ दि. २९/०१/२०१६ हा साहेब २९/०१/२०१६ चा माझ्याकडे शासनाचा निर्णय आहे. याच्यामध्ये तसा कुठेच उल्लेख नाही. त्याच्यामध्येही स्पष्ट भाषेत कुठेही रजुबदल करायची गरज नाही. ट्रान्सफर ऑफ डेव्हलपमेंट राईट्स टी.डी.आर विकास हक्क प्रमाणपत्र कोणाला देता येईल व्हेन अ ओनर ऑर लेसीसी परत तेच विषय मालक किंवा पट्टाधारक इज प्रायोर ऑफ द म्युनिसिपल कमिशनर मे डेव्हलपमेंट ऑफ कन्स्ट्रक्ट दे इम्युनिटी ऑन द सरेंडर प्लॉट और लॅन्ड विच इज ऑलरेडी वेस्टेड इन द प्लानिंग ऑथोरिटी अँट इज ऑल कॉस्ट सबजेक्ट टू सच चिप्युलेशन मेबी प्रीसक्राईब अँड सॅटिस्फॅक्शन टू द म्युनिसिपल कमिशनर इथेही तोच भाग आहे. योग असा झाला जेव्हा मी हे वाचल तेव्हा मी ठाकुर साहेबांना फोन केला. ठाकुर साहेब मला हे समजल नाही कदाचित माझी चुक असेल मी काही नगररचनाकार नाही. मला तेवढा काही अनुभव नाही. माझ्या बापाने ह्या शहरामध्ये एक स्क्वेअर फुट जागा सुध्दा विकत कधी घेतली नाही. आणि माझी पण नाही. मी काही विकासकर्ता नाही म्हणून माझी कदाचित चुक असू शकते समजण्यामध्ये. त्यांनी नाही म्हटल ते बरोबर आहे हा विषय आमचा नाही. आम्हाला सार्वजनिक बांधकाम विभागाने दिलेला आहे. सार्वजनिक बांधकाम विभागाला दि. २६/२/२०१८ रोजी त्यांनी एक पत्र पाठविले होते कार्यकारी अभियंत्यांचे नाव त्याच्यामध्ये सुध्दा जागा मालकास म्हणजे पॅरा १,२,३,४ संदर्भिय पत्रकातील महापालिका क्षेत्रातील विकास योजना रस्त्यावरील रुंदीकरण नविन रस्ते आरक्षण बाधित होण्याचे बाधितांना रहिवास वाणिज्य, औद्योगिक भाड्यातील जी बांधकामे पूर्णपणे आरक्षणाचे विकास योजनेत बाधित होत आहेत अशा बांधकामाखाली जागेच्या खाजगी जागा मालकास कुलमुक्तारपत्र धारकास हा कुलमुक्तारपत्रधारक आला कुठून? आयुक्त महोदय लक्ष वेधू इच्छितो.

मा. आयुक्त :-

तुमचा मुद्दा एकच आहे की तुम्ही मुळ खाजगी जागा मालक आणि कुलमुक्तार ह्या कुलमुक्तार याला तुमचा आक्षेप आहे इतर बरेच विषय आहेत आपल्या सभागृहात.

जुबेर इनामदार :-

आक्षेप दुसरा आहे.

मा. आयुक्त :-

राईट ऑफ प्लेस जर एखाद्याला दिला तर त्याच्या वतीने तो घेऊ शकेल ना. त्याला कोणती अडचण येईल. हा एकच मुद्दा आहे. अस नाही की एका साईटला विकासक आहे दोन्ही साईटलाही आहेत.

जुबेर इनामदार :-

साहेब माझे निवेदन पूर्ण झाल्यानंतर माझी त्याच्याकडून अपेक्षा आहे त्याचे उत्तर तुम्ही आम्हाला द्याल साहेब २०१० मध्ये रवी ग्रुपला असेच एक वर्क ऑर्डर सार्वजनिक बांधकाम डिपार्टमेंटने दिलेली आहे. सार्वजनिक बांधकाम विभागाच्या लेटर हेडवर एक वर्क ऑर्डर देण्यात आली की तुम्ही शहराची रस्ता विकसित करा कॉक्रीटीकरण करा आम्ही तुम्हाला टी.डी.आर देऊ. तो ही जागा मालक नाही साहेब तो ही कुलमुक्तार पत्रधारकच होता तरी त्याला नियमबाह्य त्याने डी.आरसी देण्यात आलेली त्या विषयावर मी सभागृहामध्ये वेळोवेळी साहेब विषय आणलेला आहे. तो आज शासन दरबारी गेलेला विषय गिते साहेबांनी तो पाठवला तर सगळी कामे बंद झाली. त्याच्यामध्ये साहेब कुलमुक्तारपत्रधारक साहेब पॉवर ऑफ अटर्नी ज्याला दिली जाते त्याला डेव्हलपमेंट अॅग्रीमेंट असतो. त्याच्या बरोबर आणि त्या डेव्हलपमेंट अॅग्रीमेंटमध्ये काय उल्लेख आहे ते महत्वाचे आहे. तिथे कॉन्ट्रक्ट लॉ एम्पीमेंट होल्ड तुमचा की त्या कुलमुक्तार धारकाला पॉवर ऑफ अटर्नी देताना रजिस्टर केले नाही केले त्याच्या बाजू बऱ्याच काही आहेत. त्याला तपासणार कोण दुसरा हा विषय आलाच कुठून प्रथमतः हा विषय असा आलाच नाही पाहिजे. असा ह्याच शासन निर्णयामध्ये ठाकुर साहेबांनी जे दाखवले असेल त्याचे इन्टीप्लिटेशन आहे ना. अधिसूचना आहे. सर पॉईंट वन पॉईंट थ्री इट इन एनी कॅन्टेझीयस म्हणजे लागून असलेला लॅन्ड ऑफ द सेम ओनर इथे यांनी डेव्हलपर आणलेला तो कुलमुक्तार पत्रधारक in addition to the land under surrounded for which under surended for which develop sight is to he damage unmilty buildable the municipal commissioiner may grant transable rights TDR for surch remaning unbuildable land also if the owner develop hands is over free of cost in free of all incroachment if such land is stop prapose load then such land shall be utilize for road parking garden open space or road an amenity including bus bleas public collage अशा प्रकारे साहेब त्यांनी एकदम स्पष्ट दिलेले आहे. जी वस्तु आरक्षणाला बाधित आहे आरक्षण आहे त्याला लागून कन्टेजिस लागलेली लिगल टॉपिक आहे. म्हणजे जी आरक्षणाला लागून म्हणजे रस्त्याला बाधित डी.पी. रस्ता असेल

आराखड्यातला रस्ता असेल त्यातुन सुटलेली जागा दोन फुट, ४ फुट, १० फुट त्याला तुम्ही बांधकामाची परमिशन देणार नाही त्याला कारण भरपूर असतात. त्याला ही नियमावली लागते. इथे नियमावलीचा भाग आला अशा जागांना तुम्ही घेऊ शकता. त्यांच्याकडून आयुक्त घेऊ शकता. आमच्याकडे जी फॅनिंग चालु आहे ती आरक्षणाच्या जागेवर चाललेली नाही. रस्ता वाढवत आहेत त्यांना तुम्हाला मोबदला द्यायचा असेल तुम्हाला महापालिकेचे बऱ्याच काही कलम आहेत त्याच्यामध्ये २१२ ते २१८, ७७, ७८ एम.आर.टी.पी अॅक्ट बरेच त्याच्यामध्ये त्याचे वाचन आहेच पण ते करताना सुध्दा तुम्हाला नियमावलीचा भाग आहे. तुम्ही त्याला बोलले तुम्हाला एक माळ्याचा तुटला तर दोन माळ्याचे बांध. २२० पेक्षा जास्त ह्या शहरामध्ये पत्रकार असे बोलायला नाही पाहिजे. जस आर.टी. अॅक्टीस किंवा अशी लोक जे त्रास देतात त्यांचे आहे ना इथे कुठेतरी त्यातुन १०० टक्के तशी लोक नसतील समजून घेणारे सुध्दा लोक त्यांनी नाही समजणारे सुध्दा लोक आहेत. त्यांनी याचा व्यवसाय केलेला आहे.

मा. आयुक्त :-

त्यामध्ये सन्मा. सदस्यांना माझी विनंती राहिल. काही त्याच्यात नाला फाईड झाला म्हणजे ट्रान्सफर नसेल आणि शहर हिताच्या दृष्टीचा नसेल तरच बाहेरचे लोक त्याला प्रेशर्राईज करतात.

जुबेर इनामदार :-

बरोबर आहे.

मा. आयुक्त :-

पण इन्टेशन क्लिअर आहे. १० फुटाचा रस्ता आपण २५ फुट केलेला आहे आणि आपण त्याला तेथुन उध्वस्त केलेला आहे तर अशा परिस्थितीमध्ये काय निर्णय करायचे याच्यासाठी हा ठराव आहे.

जुबेर इनामदार :-

मान्य आहे साहेब.....

मा. आयुक्त :-

आपण धोरण केल्यानंतर शासनाच्या नियमातच त्याची अंमलबजावणी केली जाईल.

जुबेर इनामदार :-

बरोबर आहे साहेब मला हेच ऐकायचे होते.

मा. आयुक्त :-

आता आपला डी.पी. होत आहे त्याच्यात ते रुट विथ तेवढी टाकली जाणार ते आजच्या आज थोडच निर्णय होणार आहेत.

जुबेर इनामदार :-

मला हेच तुमच्या शुध्दीमुखी ऐकायचे होते.

मा. आयुक्त :-

कारण लोकांची गैरसोय दुर केली पाहिजे आणि जे सब्जेक्टेड झालेले आहेत त्यालाही न्याय भेटला पाहिजे.

जुबेर इनामदार :-

साहेब माझे याच्यामध्ये एकच मत आहे नगररचनाकारांनी गोषवारा देताना जो विषय नाही होऊ शकत ज्याचे स्पष्टीकरण इथे दिलेले आहे की कुठले रस्ते तुम्हाला अशाप्रकारे घेता येतील कुणाला देता येतील. कुलमुक्तार धारकास कोणते रस्ते किंवा कुठल्या आरक्षणांमध्ये तुम्हाला देता येतील हे स्वयंस्पष्ट असताना सरसकट आरक्षण, रस्ते, फॅनिंग हा विषय गोषवाऱ्यामध्ये नमुद करुन समिती गठीत करुन त्यांच्या अहवालानुसार कारण त्यांचे मत असे आहे आम्हाला नगररचनाकारांनी दिलेली माहिती आम्ही त्याप्रमाणे तो गोषवारा तयार केला आणि साहेब आपली नियमावली एवढी स्पष्ट आहे आणि त्याच्यामध्ये त्यांनी बरेच काही मुद्दे मांडलेले आहेत. शासनाने आपल्याला सोईस्कर करुन दिलेला तुम्हाला कुठेही काही अडचण असेल आमच्याकडे या परिशिष्ट ५ बोलतो. ३ चा ही त्यांनी question arises if any question dismiss arises is record in intomorelation of any of the regulation the matter shall be report to the state government का जात नाही. आधी त्यांना रेफर केले पाहिजे होते. दुसरा हा विषय ३७ खाली आला पाहिजे हा सरसकट महासभेची मंजूरी घेऊन आणली ठिक आहे आम्ही वाचन करतो सर्वच करत नसतील कदाचित ती करतात किंवा कोणाची काही अडचण असु शकते. म्हणजे आम्हाला तुम्ही कुठेतरी कायद्याच्या अडचणीत आणणार हा ३७ खाली विषय आला पाहिजे. तुम्हाला कुठली फेरबदलची कारवाई करायची असेल तर ३७ वन अंडर तुम्हाला हा विषय आणायला पाहिजे होता हे तुम्ही गोषवाऱ्यामध्ये आणलेला नाही. सरसकट अशा प्रकारच्या विषयाला मान्यता कुठली समिती गठीत सुध्दा करुन देता येणार नाही. हा महासभेचा धोरणात्मक विषय आहे. कुठल्या समितीकडे जाणार.

मा. आयुक्त :-

प्रशासनाकडून मी आपला खुलासा करतो हे धोरण आहे हे धोरण महासभेने निश्चित केल्यानंतर हा शासनाच्या मंजूरीला पाठवला जाईल आणि दैनंदिन रस्ते वाईडींगमध्ये काय होते आपला डी.पी. फार जुना आहे. सगळे रस्ते राईट अँगल आहेत. थोडीही साईट मारिंजिग हॅन्डबेल जे लागतो ते नाही आणि असे जे विस्थापित झालेले आहेत त्यांना न्याय देण्याबद्दल तुमच्या मनात काही शंका आहेत का?

जुबेर इनामदार :-

साहेब माझी कुठेही शंका नाही पण न्याय देताना तुम्हाला नियमात द्यावे लागेल.

मा. आयुक्त :-

नियमात बसूनच केले जाईल.

जुबेर इनामदार :-

आम्ही नियमात कुठलेही काम केले नाही. फॅनिंग करताना ज्या लोकांची जागा गेली त्यांना आपण भुसंपादन कायदानुसार काही कारवाई केली का साहेब दादागिरी, बाऊन्सर उभे करून खाली केलेली आहे. पूर्ण हिस्ट्री आहे. जितके काही रस्ते होते विकास आराखड्यातले बळजबरीने लोकांचे गाळे तोडले तेव्हा कुठे गेला मोबदल्याचा विषय तेव्हा भुसंपादन कायदा आपला कुठे गेला होता.

गिता जैन :-

किती वेळा झालेले आहे एकाला पण अजूनपर्यंत मोबदला दिला गेला नाही.

जुबेर इनामदार :-

साहेब ह्या सभागृहामध्ये एका बाजूला तुम्ही दोन महिन्यांची मुदत वाढ तुमच्याकडे डी.पी. तयार करण्यासाठी मुदतवाढ आहेत. बाजूला परत तोच नगररचनाचा विषय.....

मा. आयुक्त :-

काही ठिकाणी आपण त्यांना त्यांच्या रोड साईटमध्ये त्यांना दिलेले आहे.

मा. उपमहापौर :-

आयुक्त साहेब इनामदार साहेब असे आहे फॅनिंगचा विषय आहे त्याबरोबर आपण जेव्हा जेव्हा रस्ता रुंदीकरण केला त्या त्यावेळेला ह्या शहरामध्ये घर तुटली गेली, दुकाने तुटली गेली. आपल्याकडे कुठल्याही प्रकारची पॉलिसी नव्हती. कोणालाही दुरुस्तीची परवानगी दिली गेली नाही मी एका प्रकरणात खांबित साहेबांना घेऊन आयुक्त साहेबांकडे गेलो. त्यांना सांगितल त्यांनी सांगितल याचे दुकान तुटले आहे त्यांनी बांधून द्यावे. आम्ही परवानगी देणार नाही. आणि त्याला मी सांगितलं की तु दुकान बांधून घे. काही असेल तर मी बघतो. तो म्हणाला पत्रकार येतात, माहितीचे अधिकारवाले येतात आणि त्यांच्यावर ती लोकांना दुकान दुरुस्तीची परवानगी देता यावी घराच्या बदली घर दिले जावे किंवा त्या घराचा जेवढा भाग तुटला तेवढा वरती वाढविण्यासाठी त्याला परवानगी दिली जावी. औद्योगिक गाळा तुटला असेल औद्योगिक गाळ्याच्या बदल्यात औद्योगिक गाळा देणे किंवा त्याला डबल करण्याची परवानगी देणे इनफॅक्ट याच्यामध्ये हे आहे की सी.आर.झेड बाधित जर असेल तर शासनाच्या धोरणानुसार त्याला त्याचा मोबदला देता आला पाहिजे. ती जागा वापरली जाणार आहे आणि याच्यावरती तुम्ही एक प्रश्न केला की आयुक्त साहेब तुमची सही वाटत नाही. तत्कालीन आयुक्त बी.जी. पवार साहेबांची ती सही आहे.

मा. आयुक्त :-

हा गोषवारा उपमहापौर साहेब म्हणतात तसे बी.जी.पवार साहेबांनी दिलेला आहे. आणि हे धोरण आहे हे धोरण इम्प्लीमेंट करताना आपण आवश्यक त्या सगळ्या पूर्तता करू.

जुबेर इनामदार :-

साहेब तुम्हीही आयुक्त आहेत तुम्ही अनुभवी आयुक्त आहात बी.जी.पवार हे ही अनुभवी आयुक्त होते. आलेले सर्व आयुक्त अनुभवीच असतात. नगररचनाकार नसतात तुम्हाला दिलेल्या टिपण्या त्यांच्यावर साहेब तुम्ही शेवटी त्याच्या वरती तुमची स्वाक्षरी करता किंवा तुमचा अहवाल मांडता किंवा तुमचे निवेदन करतात ही जबाबदारी नगररचनाकाराची होती साहेब विषय देतांना स्पष्ट दिला पाहिजे होता कुलमुक्तार धारक आणला कुठून याचा अर्थ तोच झाला कुठल्यातरी विकासकांना ह्या शहराच्या.....

मा. उपमहापौर :-

त्याचा खुलासा करतील परंतु हा विषय आणण्या मागची भुमिका प्रशासन खुलासा करेल परंतु २०११ पर्यंतचा पुरावा मागून त्या संदर्भाची खातरजमा करून आपल्याला ज्याच्या त्याच्या रस्ता रुंदीकरणामध्ये किंवा एखाद्या आरक्षण डेव्हलप करतांना याच्यासाठी महानगरपालिकेची कमिटी बनवली कमिटी आपल्या सर्वांच्या गोषवा-यामध्ये आहेत आणि ही अतिरिक्त आयुक्त, शहर अभियंता यांची कमिटी

आहे. त्यांच्याकडे ह्या संपुर्ण अभ्यासाअंती मसुदा तयार करण्यात आलेला आहे याच माध्यमातून आपल्याला त्या त्या लाभार्थी जो असेल त्याला लाभ देता येईल. आणि ह्या उपर आपल्या तुमच्या आमच्या कोणाच्या काही सुचना असतील आमच्या ठरावामध्ये स्पेसिफिक मेन्शन केलेले आहे की मा. महापौर मॅडमच्या नेतृत्वाखाली त्या कमिटीमध्ये ह्या तुमच्या ज्या सुचना असतील त्यात आपले गटनेते ही त्यांच्यात आमंत्रित आहेत विरोधी पक्षनेता आमंत्रित आहेत त्यांच्यामध्ये तुम्ही तुमच्या काही सुचना असतील त्या करा आणि एक प्रश्न आहे की तुम्ही सातत्याने जोर देऊन बोलत आहेत कुलमुक्तेयार त्या बाबतीत लेसीमध्ये काय काय आंतरभाव आहे तर त्याचा खुलासा प्रशासन करेल.

नगररचनाकार :-

कुलमुक्तेयार पत्र स्पेशल पॉवर ऑफ अटर्नी मध्ये जर अशा प्रकारे जर क्लॉज असला टू सरेन्डर ऑर हॅन्ड ओव्हर द सेल प्रॉपर्टी ऑर एनी पोर्शन ऑफ द सेल प्रॉपर्टी अॅन्ड ऑर द रिझर्व्ह एरिया अॅज द केस मे टू द अॅथोरिटी कन्सन इनक्लूडिंग एम.बी.एम.सी. ऑर टारुन प्लानिंग अॅथोरिटी इन लाय देयर ऑफ टू अव्हल कॉम्पेन्शन वॉट ऑर ऐनी अदर बेनिफीट अरेजिंग देयर फॉर्म म्हणजे प्लॅनिंग अॅथोरिटी स्पेशल पॉवर ऑफ अटर्नी मध्ये आणि जो तो नोंदनीकृत करारनामा असला तर आपण त्यांना टी डी आर देतो साहेब.

जुबेर इनामदार :-

नगररचनाकार साहेब ह्या विषयामध्ये परिषिष्ट हा भाग ३३ मध्ये कुलमुक्तारधारक हा शब्द नाही कारण त्याच्यासाठी प्रोव्हिजन २९/०९/२०१६ च्या अधिसूचनेमध्ये म्हणजे लागुन असलेला जागेसाठी तेही कोणाला ओनर और डेव्हपलर्सच्या पॉवर ऑफ अटर्नी मध्ये असे क्लॉजेस असणे बंधकारक आहे. ते रजिस्टर असते बंधनकार. मालकदार असला पाहिजे. तुम्ही आणला विषय बरोबर पण ते पिरिशिष्ट त्याच्यासाठी तुम्हाला विषय आणायची गरज नव्हती फक्त मालक आणायचा होता तर हा पुरा गोषवारा संपून जातो साहेब हा स्पेशली कुलमुक्तारधारकांसाठी विशेष प्रेम म्हणून हा विषय आमच्या सर्वांच्या डोक्यावर ठेवून नगररचना विभागाने हा षडयंत्र रचलेला बोललो तरी चालेल. कारण अशा विकासकांना त्यांना द्यायचे आहे हे दुकाने चालवायचे आहेत साहेब स्पष्ट आरोप आहे. म्हणून साहेब असा गोषवारा तुम्ही तुमचा नाही म्हणून तुम्हाला आरोप करत नाही. बी जी पवार साहेबांनही तसाच विषय असेल त्यांनीही तो विषय वाचला नसेल कारण नगररचना विभागाकडून आला इतकी मोठी समिती गठीत झाली त्याच्यामागे त्या समितीने सुध्दा त्याचा अहवाल तसाच दिला समितीने अहवाल नगररचनाकाराकडे पाठविलेले पत्र त्या अनुषंगाने दिला. हा विषय शासनाकडे गेला पाहिजे. ३७ खाली गेला पाहिजे प्रथमतः तुम्हाला त्यांच्यामधून ज्यांना द्यायचे आहे रिझर्व्हेशनची जागा नाही तुम्हाला डी.आर.सी. देता येत नाही तुम्ही डी आर सी कोणाला देतात? फक्त आरक्षित जागेचे देतात तुम्हाला फॅनिंगचे देता येईल देता येणार नाही आरक्षणाची जागा नाही त्याला तुम्हाला देता.....

मा. आयुक्त :-

हो धोरण निश्चित झालेले आहे ह्या महासभेचे तो शासनाला पाठवला जाईल.

जुबेर इनामदार :-

त्याच्यामध्ये ३७ खालचा तुम्ही उल्लेख पुढे केला.

मा. आयुक्त :-

ठराव झाल्यानंतरची ती बाब आहे.

जुबेर इनामदार :-

नाही साहेब. आजपर्यंत इतके विषय झाले १८ तारखेच्या महासभेमध्ये तिकडचा रस्ता १२ फूटाचा करायचा होता ९ चा ३७ खालीच आणले का आपण आणतो ना साहेब किती रस्ते करायचे डी पी रस्ता एक करायचा हो राई, मुर्धा, मोरवाच्या ३७ खाली आणला एका बाजूला विकास आराखड्याचे काम चालू आहे जाहिर झालेला इरादा दुसऱ्या बाजूला ३७.....

मा. उपमहापौर :-

जुबेर इनामदार साहेबांच्या आरक्षणामध्ये आपल्याला अपेक्षित बदल होते आता आपण काय करतो की ज्याची किती वर्षापासून काहीना परवानग्याच दिलेल्या नाहीत काहीना परवानग्या दिलेल्या नाहीत त्या परवानग्या द्यायच्या आहेत. काही कम्प्लेन्ट केल्या जातात त्यांच्य आपल्याकडे हेयरींग लागते हे सगळ होऊ नये त्यांच्यावरती आहे. तुम्ही जे सांगत आहेत तर आपण एखादे आरक्षणाचे टीडी आर देतो त्याला पॉवर ऑफ अटर्नी होल्डरचा वापर करतो. अशातला भाग नाही तर जे पर्टीक्यूलर जे रस्त्याचे फॅनिंगमध्ये आपण जे विकसीत करतो महानगरपालिका विशेष सुस्पष्ट आहे आणि महानगरपालिका हा जो विषय घेतलेला आहे ते अधिनियम ७७ चे १,२,३, ७८ तुम्ही सांगितले २०१०,२०११,२०१२,२०१३ त्याला मान्य आहे

कारण रस्त्यात जे जे बाधित होतात तो रस्ता आपण मागे सरकवतोय. एखाद्याचे घर आपण जेवढे मागे सरकवतोय त्याचे डबल त्याला बांधता आल पाहिजे किंवा ते पुर्ण नष्ट होत असेल तुटल जात असेल तर घराच्या बदल्यात घर आणि फॅक्ट्रीच्या बदल्यात फॅक्ट्री देण्याचे प्रोव्हिजन आहे. तशा आशयाचा ठराव आणि समजा असे आहे की, एखाद्याकडे ४० स्क्वेअर मीटरचा ओपन प्लॉट आहे बाकी त्याचे बांधकाम आहे तर याच्यात स्पष्ट उल्लेख आहे की त्या ४० स्क्वेअर मीटरच्या प्लॉटचा टी.डी.आर द्यायचा आहे. मग तो कोणाला देणार त्याचा मालक आहे त्यालाच देणार. त्याच्याकडे पॉवर ऑफ अटर्नी असेल त्यालाच देणार मग पॉवर ऑफ अटर्नी होल्डरला द्यायला प्रॉब्लेम काय आहे. तुमचे त्याच्यामध्ये काही आक्षेप असेल.

जुबेर इनामदार :-

आहे ना.

मा. उपमहापौर :-

हा गंभीर विषय आहे. तुम्हाला त्याच्यात विरोध नोंदवायचा असेल तुम्हाला त्या विरोधात ठराव करायचा असेल तुम्ही करू शकता. त्या विषयात शासनाकडे दाद मागायची असेल ती मागू शकता. परंतु ह्या विषयामुळे ह्या शहरातले अनेक लोकांची घरे तुटली, दुकान तुटली व्यापार खुंटीत झाल्यात त्यांचा अधिकार त्यांना मिळावा त्यासाठी हा विषय आणलेला आहे.

जुबेर इनामदार :-

मान्य आहे साहेब चांगला विषय आहे तुम्ही तसा करावा झाले पाहिजे नाहीतर साहेब महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियमामध्ये तुम्हाला महाराष्ट्र महानगरपालिकेच्या विषयावर म्हणजे जिथे तुम्हाला याच्या बदल्यात मोबदला द्यायचा आहे.....

रिटा शहा :-

आता जे वैती साहेबांनी सांगितले की सदर विषय फक्त मोबदल्याचा विषय आहे. त्याच्यावर आपण धोरण ठरवतो आपण कोणाला कोणाची मालकी कोणाला देत नाही. महापालिकेला असा अधिकार नाही. कमिशनरला पण नाही. कुठल्या जजला पण ते अधिकार नाही की माझी जमीन त्याला द्यावी असे कुठे शास्त्रात लिहिलेले नाही कुठले अधिनियमामध्ये लिहिलेले नाही परंतु हा जो विषय तुम्ही आणलेला आहे असे खुप लोक आहेत जे काशिमिरा रोड आपला रोड वाईडिंग झाला तेव्हा खुप लोकांची दुकाने तुटली, घरे तुटली, बिल्डींग तुटली असे खुप लोक विस्थापित आहेत की ज्यांना आजपर्यंत मोबदला भेटला नाही. त्यांच्या जागेबदल जागा भेटलेली नाही. माझ्याकडे गुजराती बाई आली होती त्यांची काशिमिरा रोडवर त्यांच्या ४६९ च्या ४ त्या गुजराती फॅमिलीचे घर होते त्याची पूर्ण बिल्डींग तोडून टाकली. आपण त्यांना नुतनीकरणाचा दाखला दिला की तुम्ही परत बांधून त्या दुरुस्ती करा. त्याच्यावर त्यांनी परत बांधलं. कोणाच्या कम्पलेन्टवर त्यांचे परत तोडायला आले तोडून टाकले. आजपर्यंत कोर्टात गेलात सर्व कमिशनरकडे गेले. आजपर्यंत त्याला न्याय मिळाला नाही. म्हणून महापौर मॅडम अशा माणसांसाठी तुम्ही हा जो विषय आहे विषय पटलावर आणला त्याबद्दल तुमचे मनापासून हार्दिक अभिनंदन करते. खुप चांगला विषय तुम्ही आमच्याकडे आणलेला आहे. ह्या शहराचे लोकांना जे विस्थापित झालेले आहेत त्या लोकांना ह्या ठरावाअंतर्गत त्यांना न्याय मिळणार त्याबद्दल पुन्हा तुमचे अभिनंदन करते.

जुबेर इनामदार :-

महापौर मॅडम मी तुमचे अभिनंदन करत आहे. विषय चांगला आहे पण त्या विषयाचे विश्लेषण करणे गरजेचे आहे. आमच्याकडून काही तरी चुकीचे नियमबाह्य करून घ्यायचा प्रयत्न चालला असेल तर काय करणार माझे एकच मत आहे साहेब.

(सभागृहात गोंधळ)

मा. महापौर :-

सभी को बोलने की संधी दी जाए, आप बैठ जाईए।

धृवकिशोर पाटील :-

आयुक्त साहेब माझी आपणांस विनंती आहे की आपण आमच्या भावना ऐकून घ्या. तुम्ही सगळ्यांचे एकत्र नंतर तुम्ही बोला. साहेब हे सभागृह आहे महासभा आहे आणि प्रत्येक प्रश्नाचे आपण उत्तर देत असाल.....

मा. आयुक्त :-

एकच मुद्दा क्लिअर करतो. बहुतांशी गैरसमज दुर होतात.

धृवकिशोर पाटील :-

माझी आपणांस विनंती आहे की जे काही सदस्यांनी तुम्हाला काही सांगितलं तर त्याचे पूर्णपणे ऐकल्यानंतर त्याच्यावर तुम्ही सारांश करा. प्रत्येक प्रश्नाला किंवा प्रत्येक ह्याला उत्तर देत जाऊ नका ही महासभा लांबेल. सर विषय असा आहे की.....

(सभागृहात गोंधळ)

जुबेर इनामदार :-

प्रशासनाचा गोषवारा आहे त्यांना नाही विचारणार.....

धृवकिशोर पाटील :-

साहेब प्रत्येक गोष्टीला जर आयुक्त साहेब उत्तर देत असतील तर चुकीचे आहे मॅडम.

जुबेर इनामदार :-

प्रशासनाचा गोषवारा आयुक्त उत्तर देणार नाही तर कोण देणार.

धृवकिशोर पाटील :-

माझी आपणांस विनंती आहे की कोणत्याही सदस्याला बोलू द्या आणि बोलू दिल्यानंतर त्याचे संभाषण झाल्यानंतर त्याची जी काही क्वेरी आहे ती क्वेरी पूर्णपणे एकत्रित त्यांनी करावी. मग आयुक्तांनी खुलासा सादर करावा. मॅडम आज हर सवाल का अगर जवाब देते बैठेगं तो लंबा चलेगा।

दिनेश नलावडे :-

महापौर मॅडम दोन वर्षापूर्वी हे बांधकाम पूर्वीपासून चालू होत आयुक्त साहेब.....

मा. आयुक्त :-

महापौर महोदय सन्मा. स्थायी समिती चेअरमनचा मुद्दा रास्त आहे की कामकाज न होता सर्व सदस्यांनी त्यांचे पूर्ण मुद्दे मांडावेत आणि त्याचा खुलासा केला जाईल. त्याच्यामध्ये काही वावगे नाही.

जुबेर इनामदार :-

वैती साहेबांच्या निवेदनाला मी त्यांना अडवू शकत नाही ते माझे नेते आहेत.

धृवकिशोर पाटील :-

महापौर मॅडम माझी एक सुचना आहे की एकदा आपण जर कोणत्याही सदस्याला बोलायला दिलं त्याच कम्पलीट बोलून द्या त्याच्यानंतर आयुक्तांना खुलासा करायला सांगा.

मा. महापौर :-

ठिक आहे.

(सभागृहात गोंधळ)

दिनेश नलावडे :-

महापौर मॅडम दोन वर्षापूर्वी इंडस्ट्रीजमध्ये.....

(सभागृहात गोंधळ)

दिनेश नलावडे :-

महापौर मॅडम भाईदर पूर्वेला इंडस्ट्रीज झोन आहे त्या ठिकाणी ७५, ७४, ७८, ८० च्या अगोदरच्या इंडस्ट्रीज आहेत. त्यावेळेला आपल्या महापालिकेचा कायदा कसा गेलेला हे आज आम्हाला माहित नाही. कारण प्रत्येक कमिशनर येतील त्यावेळेला वेगवेगळा होत जातो. महापौर मॅडम आपल्याला माहित असेल कारण वैती साहेब त्यावेळेला नगरसेवक नव्हते आज मला रस्त्यावरती उतराव लागल आम्ही फेसेस घेतल्या. संपूर्ण भाईदर फिरवला इंडस्ट्रीजमध्ये नगररचनेने रोडचा सर्व्हे केला. रोड वाईडिंगमध्ये महापौर मॅडम तोच सर्व्हे एक हजार टक्के चुकीचा होता. आम्ही ठेकेदार लोकांना नेऊन तिथे सर्व इंडस्ट्रीजमध्ये दाखवलं आणि कुठलीही नोटिस न देता आम्हाला कोर्टात जाऊ न देता इंडस्ट्रीजवाल्यांना डायरेक्ट पोलीस स्टेशनचा मॉप घेऊन त्यावेळेला साहेब महापालिकेपुढे त्यावेळेला आमदार प्रताप सरनार्क साहेब रस्त्यावरती आले आणि त्यांच्यामुळे इंडस्ट्रीज वाचली. महापौर मॅडम त्यावेळेला जय अंबे नगर प्रभातताई तुमच्या प्रभागात इंडस्ट्रीज तुटली. त्यांना अजून न्याय मिळालेला नाही. त्यांचे सगळे अर्ज महापालिकेकडे आलेले आहेत. अगोदरची इंडस्ट्रीज हे कायदेशीर नव्हतं. रेग्युलर असताना त्यांचे इंडस्ट्रीज तुटले त्यांना अजून न्याय दिलेला नाही. भाईदर स्टेशन नगर सगळी बांधकाम तोडली त्यांना नोटिसा न देता त्यांची बांधकाम पुर्वीची तोडली ते पण तुमच्या महापालिकेत आलेले आहेत. त्यांना मोबदला केव्हा देणार आणि महापौर मॅडम तो विषय ह्या विषयपत्रिकेत यायला पाहिजे होता. आयुक्त साहेब अगोदर ज्यांची बांधकाम तुटलेली आहेत नोटिसा न देता त्यांच्याकडून कागदपत्र मागवून घेतलेले आहेत. नंतर त्यांचा विषय इथे पटलावरती यायला पाहिजे होता. त्यांचा मोबदला त्यांना मिळायला पाहिजे. कारण त्यांना बेघर केलेले आहे. उपमहापौर साहेब आपल्या तोंडी हे शब्द आलेले आहेत. तर तो विषय नमुद करुन घ्या.

गिता जैन :-

साहेब तुम्ही ठाण्यात किती घरे केलेले आहेत. १२ हजारचा आकडा मी ऐकलेला आहे. किती घरे झाली साहेब?

मा. आयुक्त :-

महापौर महोदया सन्मा. सदस्यांनी एकच माझा तो मुद्दा राहिला की मी एक मनात असलेले सांगतो.

गिता जैन :-

सांगा ना.

मा. आयुक्त :-

ह्या कार्यकारी अभियंत्याशी चर्चा केली. हा प्रस्ताव विकास योजनेने समाविष्ट असलेल्या रस्त्याच्या रुंदीमध्ये जे बाधित आहेत त्यांनाच हे लागू आहे. त्यामुळे तुम्ही तसे काही गैरसमज राहण्याची काहीच गरज नाही असे नाही की तिथे रस्ता रुंदीचा आपला हक्क नाही आणि तिथे काहीतरी करतो असे नाही जे डी.पी. रस्त्यामध्ये समाविष्ट आहेत आणि ज्यांचा हक्क गेलेला आहे त्यांनाच ते देण्याबद्दलचा आहे. एवढाच हा मुद्दा आहे.

गिता जैन :-

तिथे तुम्ही काय प्रोसिजर केलेली आहे?

दिनेश नलावडे :-

आयुक्त साहेब हा मुद्दा जो आहे अगोदर नगररचनेकडून जो सर्व्हे झालेला आहे संपूर्ण मिरा भाईंदरचा त्याला पूर्णविराम करा. तो कॅन्सल करा.

गिता जैन :-

साहेब ठाण्याला काय प्रोसिजर केलेली आहे ते सांगा. १२ हजार तुम्ही घरे दिली कशी दिली साहेब? आज रस्ता तोडायच्या आधी घरे दिली की नाही. रस्ता करायला घरे तोडायच्या आधी घरे दिली होती की नाही? यस ऑर नो. मग आपल्याकडे असे का होत नाही. तुम्ही तोडून टाका तुम्ही वर बांधून टाका तुम्ही असे करून टाका का? साहेब घराच्या ऐवजी तुम्ही घराची चावी द्या. कोणी तुम्हाला थांबवणार नाही आपल्याकडे काय होते आपण पहिला तोडतो मग त्यांची ॲप्लीकेशन येतात की, पहिला त्यांना विचारतो. तुमच्या नावावर सातबारा आहे का तुम्हाला परमिशन कशी द्यायची मग साहेब मला एक सांगा एवढ्या वर्षाआधी आता पण तुम्ही जुनी बिल्डींग बघणार तर सातबारा कोणाच्या नावावर बिल्डींगमध्ये कोण राहतो डेव्हलपर्स कोण तिसराच मग तुम्ही ते कसे करता तेव्हा काय होते. परत रि-डेव्हलपमेंटची परमिशनसाठी काय विचारतो साहेब तसेच आपण सिंगल हाऊसलाही विचारतो. तुमचा पुरावा काय तुमची जिथे जमीन होती तिथे काय डी.आर.सी. त्यांना आपण कधीच देत नाही. जे राहतो पण तेव्हा त्यांनी खरेदी केलेली असते. पण प्रॉब्लेम हा आहे की पहिला आपण असे काही करत नव्हतो. रजिस्ट्रेशन करत नव्हतो वगैरे काही त्यांनी त्या जागेचे पैसे दिलेले आहेत साहेब परत त्यांना तो मोबदला भेटत नाही. दुसरे आता तुम्ही मी त्या दिवशी नव्हती. उत्तनचा रोड पास केला मला साहेब एक सांगा तिथे रोड वाईडींगमध्ये ज्यांचे घर जाणार.

मा. उपमहापौर :-

घराच्या बदली घर देण्याचे प्रावधान आपल्याकडे आहे. आतापर्यंत १५० पेक्षा अधिकच्या लोकांना बाधित झालेल्या लोकांना घरे दिलेली आहेत. तुम्ही जो मुद्दा सांगितला.....

गिता जैन :-

मी २०० पेक्षा जास्त दाखवते. ज्यांना घराच्या बदली घर भेटलेले नाही त्यांचे काय?

मा. उपमहापौर :-

हा विषय त्याचसाठी आहे.

गिता जैन :-

मी शहराच्या विकासासाठी सांगतच नाही. मी फक्त हे सांगत आहे की.....

मा. उपमहापौर :-

तो विषय त्याचसाठी आहे आणि तुम्ही आता उत्तनचा विषय आणायचे इथे काही कारण नाही.

गिता जैन :-

उपमहापौर साहेब महापौर बसलेले आहेत आसनावर आणि त्यांनी मला सांगावे मला काय विषय बोलायचे आहे आणि काय नाही. तुम्ही पहिला मध्ये बोलायच्या आधी महापौरांची आज्ञा घेतलेली नाही. तो

विषय मी इथे काढत नाही. पण मला फक्त तेवढे सांगायचे आहे साहेब आपल्याकडे जेव्हा जेव्हा घर गेलेले आहेत. अजुनपर्यंत खुप घरे गेलेली आहेत त्यांना अजुन आपण घरे दिलेली नाहीत. साहेब एक साधे गाळेधारक त्यांचा गाळा खाली गेला. रोडवर आलेला आहे त्यांना जर रिपेअर करायचे असेल तर नगररचना विभाग सांगतो आम्ही परमिशन देणार नाही. तो बिचारा तसाच रिपेअर करायला जातो की काय काय होते मला तुम्हाला सांगायची गरज नाही तिथे कोण कोण पोहोचतो. मग ते तरी तुम्ही देऊ शकत नाही ते तुम्ही देत नाही. नगररचना विभागाला तुम्ही विचारा की गाळा रिपेअर करायची परमिशन देता का? तेव्हा ते सांगतात तो गाळा तुमच्या नावावर नाही मग काय करायचे त्यांनी ते खाली एवढे त्यांना त्यांची हाईट आता ७-७, ८-८ फुट राहिलेली आहे. आणि एवढी मोठी मोठी मशिनी आहेत. आपण कन्सीडर करत नाही. मग तेव्हा तुम्ही कागद विचारतात तेव्हा तुम्ही सांगतात तुमच्या नावावर नाही मग हे तुम्ही देणार का पहिला ते क्लिअर करा की कोणाच्या नावावर देणार ज्याच्या नावावर सातबारा आहे त्यांना देणार आता राहते घर आहे त्यांना देणार ही पॉलिसी तुम्ही क्लिअर करा. अजुनही किती अशी माणसे आहेत ते भटकत आहेत त्यांना घर मिळालेले नाही ज्यांची दुकाने मिळालेली नाहीत ती पॉलिसी तुम्ही क्लिअर करा.

मा. उपमहापौर :-

मॅडम ऐकून घ्या पहिला ते वाचा त्यात काय लिहिलेले आहे २०११ पर्यंत जो राहतो तो जमिनिचा मालक नाही.

गिता जैन :-

साहेब मी तुम्हाला काय विचारलेले की ज्यांच्या नावावर जमीन नाही तो उठून तुमच्याकडे परत मागणार तेव्हा तुम्ही काय देणार तुम्ही रोड वार्डिंग करा. मी अगेन्स्ट नाही पण एक पॉलीसी डिसाईड करा की २०११ पर्यंत मी त्याला अॅग्री आहे पण त्यानंतर तो जमीन धारकाला तेव्हा काय एक पॉलिसी नक्की करा मी तेच सांगत आहे साहेब. आय अॅम नॉट अगेन्स्ट एनी डेव्हलपमेंट.

मा. महापौर :-

ठिक आहे गिताजी आयुक्त जी आप नोंदणी करीए की जिसको नही दिया उसकी नोंदणी करके.....

जुबेर इनामदार :-

साहेब मोबदला घराच्या ऐवजी घर देणे ह्या महापालिकेच्या ह्या शहरामध्ये महापालिकेने दिलेली आहेत. ही खरी वस्तुस्थिती आहे. आपल्याकडे घरे किती उपलब्ध आहेत ह्याच महासभेमध्ये बी.एस.यू.पी. च्या योजनांचा विषय आहे. त्याच्यामध्ये आपल्याकडे घरे नाहीत म्हणून आम्ही त्यांची झोपडपट्टी खाली करू शकत नाही. व्यवस्था नाही बरोबर आहे. ट्रान्झिट कॅम्पमध्ये मी पाठवलेले आहे. ३ हजार रुपये भाडे ते देता येत नाही. बी.एस.यू.पी. योजना कोळमडली म्हणून आम्ही दुसरी योजनांकडे चाललो बोलताना बरेच काही बोलता ती वास्तु घेऊ शकत नाही. साहेब दुसरे असे आहे जागेचा विषय इथे डी.आर.सी. चा दिलेला आहे. विकास हक्क प्रमाणपत्र तुमच्या गोषवा-यामध्ये नमुद केलेले आहे. माझा विषय तोच आहे. घराऐवजी घरे द्या, बंगल्याऐवजी बंगले द्या. गाळे, कारखान्याच्या ऐवजी फॅक्ट्रया द्या. आम्ही कुठे नाही म्हणतो साहेब. हा विषय विकास हक्क प्रमाणपत्र कुलमुक्तेदार धारकाला तुम्हाला देता येत नाही मी त्यावर बोलतो दुसरे तसे काही करायचे असेल तुम्ही कोणाला बोलता वरती बांधायचे आहे नियमात बसते का. नगररचनेने लिहून द्यावे बांधा देणार नाही. आणि अशा काहीतरी उलट सुलट गोषवारे देतात म्हणून साहेब तसे जर काही करायचे असेल कुठलाही बदल महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियमामध्ये जे काही तरतुदी आहेत. नगररचनेच्या त्याच्यामध्ये कुठलाही बदल करावा लागला तर साहेब आपल्याला ३७ खाली जावे लागते. महाराष्ट्र प्रादेशिक नगररचना अधिनियम १२६ चे पालन करावे लागेल. साहेब आम्हाला वाटते त्या दिशेने आम्ही काही काम करू शकत नाही.

मा. महापौर :-

इस विषय पे बहुत चर्चा हो गई है। आप अपना ठराव पढिए यह विषय आयुक्त साहब के पास जाएगा फिर निर्णय आएगा आप अपना ठराव पढिए।

अनिल सावंत :-

महापौर मॅडम, आयुक्त साहेब हे कुलमुख्यार पत्रधारक की अधिपत्रधारक याचे मिसयुज कशाप्रकारे होऊ शकते त्याचे छोटेस उदाहरण देतो. जास्त काही मला बोलायचे नाही त्यालाच आमचे ऑब्जेक्शन आहे. साहेब १९८८ सालची शितलनगर वसाहत आहे. १९८८ साली झालेली महानगरपालिकेने माझ्याजवळ पत्र दिले आहे की आम्ही अर्ज अजून घेतलेला नाही. वसाहत झाली १९८८ साली ओ.सी. मिळाली तिथले गार्डन आम्ही डेव्हलप केले. पालिकेने पैसे लावले. रस्ते पालिकेने बनविले त्याठिकाणी

आमच्या एका नगरसेवकाला बटरफ्लाय पार्क बनवायचे होते. स्वतःच्या खर्चाने त्यासाठी पालिकेची परवानगी मागितली. चार महिन्यांनंतर परवानगी मिळाली चार महिने साहेब असेच तोंड दिले. आणि त्यानंतर ज्यावेळी बटरफ्लायची झाडे म्हणजे आपल्या पालिकेने डेव्हलप केलेली गार्डन आर.जी. तिथे पालिकेची नंबर प्लेट आहे तिथे महापौरांचे नाव आहे. १० बाय १० चे इथे आम्ही ज्यावेळेला झाडे लावत होतो. त्यावेळी एकाचा फोन येतो की ह्या वस्तीतले आर.जी आणि रोडचा अधिकार पत्रधारक मी आहे त्या ठिकाणी तुमच्यावर ट्रेस पारिंगचा गुन्हा दाखल करीन. हा प्रकार कसा घडू शकतो नगररचना जवळ याचे उत्तर नाही. आरोग्य विभागाकडे याचे उत्तर नाही किंवा वृक्षप्राधिकरण अधिकाऱ्याकडे याचे उत्तर नाही. म्हणजे १९८८ साठी पासून पालिका तिथे खर्च करत आहे. गार्डन, रस्ते, स्ट्रीट लाईट सर्व आणि आता कोणीतरी येऊन सांगतो की पॉवर ऑफ अटर्नी मी घेतलेली आहे. माझी मालकीची आहे. आर.जी. आणि रस्ते पण साहेब फक्त आर.जी. नाही रस्ते पण आणि तिथला जो मुळ विकासक आहे त्याला फोन केला तो म्हणतो मी त्याला देऊन टाकला. पॉवर ऑफ अटर्नी म्हणजे त्या जागेचा खरा मालक कोण? आणि हा जर उद्या प्रस्ताव झाला तर याचे मिसयुज किती होतील साहेब शहरामध्ये.

मा. महापौर :-

ठिक आहे आयुक्त साहेब ते बघून घ्या.

जुबेर इनामदार :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील रस्ते, रुंदीकरण करण्याकरीता व कायदेशीर बाबींचा अभ्यास करून कार्यपध्दतीचा मसुदा व धोरण तयार करण्यासाठी अधिकाऱ्यांची समिती गठीत करण्यात आली होती.

- १) श्री. माधव कुसेकर - अतिरिक्त आयुक्त
- २) श्री. शिवाजी बारकुंड - शहर अभियंता
- ३) श्री. दिपक पुजारी - उप आयुक्त, अनधिकृत बांधकाम नियंत्रण विभाग
- ४) श्री. दिपक खांबित - कार्यकारी अभियंता, बांधकाम विभाग
- ५) श्री. हेमंत ठाकूर - नगररचनाकार
- ६) श्रीम. सई वडके - विधी अधिकारी

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील विकास योजनेतील रस्ते रुंदीकरण, फॅनिंग, नवीन रस्ते, आरक्षणामध्ये बाधित होणाऱ्या बाधितांना मोबदला देणेबाबत गोषवा-यामध्ये १ ते १२ व अ/ब मसुदा तयार केलेला आहे.

महानगरपालिका क्षेत्रात विकासयोजना रस्ते रुंदीकरण, नवीन रस्ते, आरक्षणामध्ये बाधित होणाऱ्या बाधितांना रहिवास भागातील जी बांधकामे पूर्णपणे आरक्षणाने / विकास योजना रस्त्याने बाधित होत आहेत अशा बांधकामात खालील जागेच्या खाजगी जागा मालकास/ कुलमुखत्यारपत्र धारकास मिरा भाईंदर महापालिका मंजूर विकास नियंत्रण नियमावली परिशिष्ट ४ विनियम ३३, तसेच शासनाचे नगरविकास विभागाने निर्णय क्र. टीपी.एस १८१३/३०६७/प्र.क्र. १२२/१२/मनपा/कोकण/नवी-१३, दि. २९/०९/२०१६ अन्वये निर्गमित केलेल्या निर्णयानुसार विकास हक्क हस्तांतरण प्रमाणपत्र देणे. तसेच जे बांधकाम अंशतः बाधित होत आहेत त्यांना उर्वरीत जागेत त्यांच्या मुळ बांधकाम क्षेत्राएवढे बांधकाम विकास नियंत्रण नियमावलीतील तरतुदीनुसार व महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम कलम २६४ अनुसार परवानगी देणे. रस्ता रुंदीकरणातील जागा ताब्यात घेण्यासाठी महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम कलम ७७-१,२,३ व ७८-१,२,३ नुसार कार्यवाही करणे. महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम कलम २०९, २१०, २११, २१२, २१३ नुसार जागा ताब्यात घेण्याची प्रक्रिया करणे. घर/दुकान/औद्योगिक गाळे धारक व जमीन मालक वेगवेगळे असल्यास घर/दुकान/औद्योगिक गाळे धारक यांना बाधित क्षेत्राएवढे घर/दुकान/औद्योगिक गाळा दिल्यानंतर जमीनमालक वारसाहक्क प्रमाणपत्राची मागणी करणार आहेत. त्यावेळी सदर जागेतील घर/दुकान/औद्योगिक गाळे धारकांना दिलेला मोबदला वगळून विकास हक्क प्रमाणपत्राची मागणी करणार आहेत. त्यावेळी सदर जागेवरील घर/दुकान/औद्योगिक गाळे धारकांना दिलेला मोबदला वगळून विकास हक्क प्रमाणपत्र जमीन मालकांना देणे योग्य राहिल. अन्यथा मनपाचे दुहेरी नुकसान होईल. तसेच महाराष्ट्र प्रादेशिक नगररचना अधिनियम १२६ नुसार कारवाई करण्यात यावी व बांधकाम दि. ०९/०९/२०११ पूर्वीचे पुरावे असणे आवश्यक आहे असे गोषवा-यामध्ये मुख्य मुद्दे प्रशासनाने प्रस्तावित केले.

विकास नियंत्रण नियमावली, परिशिष्ट ४, विनियम ३३ नुसार १-१२ अन्वये विकासहक्क प्रमाणपत्र जागा मालक अथवा पट्टाधारक ह्यांनाच प्रदान करण्याची तरतुद आहे व ती महाराष्ट्र शासन अधिसूचना क्रमांक टीपी.एस १८१३/३०६७/प्र.क्र. १२२/१२/मनपा/कोकण/नवी-१३, दि. २९/०९/२०१६ मध्येही कायम आहे. कुलमुखत्यारपत्र धारकास कोणतीही मोबदल्याच्या स्वरूपात हक्क प्रमाणपत्र देण्याची तरतुद नाही.

मिरा भाईंदर शहराची विकास योजना (वगळलेला भाग सोडून) दि. १५/०४/१९९७ रोजी मंजूर होवून दि. १५/०७/१९९७ पासून अंमलात आलेली आहे. विकास नियंत्रण नियमावलीत शासन निर्णय क्रमांक टीपी.एस १२०८/१३४६/प्र.क्र.२६७/०८/नवी-१२, दि. २९/ १२००९ अन्वये फेरबदल मंजूर झाले आहेत.

महानगरपालिका क्षेत्रात एकूण १९ महसुली गांवांचा समावेश असून मिरा भाईंदर महानगरपालिका प्रशासन शहरातील विविध मंजूर आराखड्यातील विविध रस्ते रुंदीकरण करण्याची कामे घेतली आहेत. सदरचे रस्ते ग्रामपंचायत काळापासून अस्तित्वात आहेत व त्यांना लागून व्यावसायिक गाळे व रहिवाशी इमारत आहेत आणि ते सन १९९७ साली मिरा भाईंदर महानगरपालिकेचा शहर विकास आराखडा अंमलात आले तेव्हाही त्याच जागी कायम होते.

महाराष्ट्र प्रादेशिक नगररचना अधिनियम अंतर्गत बाधीत विकास आराखड्यातील रस्ते भुसंपादन करणे गरजेचे आहे. मनपाला बळजबरीने जागा ताब्यात घेता येत नाही व जागा मालकालाही कायदेशीर प्रक्रिया पूर्ण केल्याशिवाय चटईक्षेत्र किंवा विकास हक्क प्रमाणपत्र प्रदान करता येत नाही. मोबदला भुसंपादन अधिनियम १९९४ (पुढे काही बदल झाल्यास) व महाराष्ट्र प्रादेशिक नगररचना अधिनियम १९६६ ला अनुसरून द्यावे लागेल. भारतीय घटना आर्टिकल ३००अ नुसार महानगरपालिकेस आरक्षित जागा विकसित करावयाची असल्यास भुसंपादन कायदा अन्वये कार्यवाही करणे बंधनकारक आहे व मुळ मालकास तथा पट्टाधारकास, ताबा धारकास त्याच्या जागेमधून काढून टाकता येणार नाही व कायदेशीर प्रक्रिया अवलंबवूनच पुढील कारवाई करणे नियमाप्रमाणे अनिवार्य आहे. मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या मंजूर शहर विकास आराखड्यामधेही आरक्षित जागा भुसंपादन करून घेण्यासाठी न्याय प्रक्रिया पूर्ण करणे सक्तीचे आहे.

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेची विकास योजना भागशः दि. १४/०५/१९९७ रोजी मंजूर झालेली असून वगळलेल्या भागाची विकासयोजना दि. २५/०१/२००० रोजी मंजूर झाली आहे. तदनंतर सदरच्या मंजूर विकास योजनेमध्ये एमएमआरडीए मार्फत तयार करण्यात आलेल्या व शासनाने मंजूर केलेल्या विकास योजनेचा भाग वगळून उर्वरीत भागाची विकास योजना सुधारीत करणेकामी नियोजन प्राधिकरण तथा मिरा भाईंदर महानगरपालिका ठराव क्र. ७६, दि. १५/०४/२०१५ अन्वये महाराष्ट्र प्रादेशिक नगरविकास अधिनियम १९६६ चे कलम २३ व ३८ नुसार इरादा जाहिर केला. तदनंतर उक्त अधिनियमाचे कलम २४ अन्वये विभागीय संचालक, नगररचना, कोकण विभाग, नवी मुंबई यांचे पूर्वमान्यतेने नगररचना अधिकारी म्हणून तत्कालीन नगररचनाकार मिरा भाईंदर महानगरपालिका (प्रतिनियुक्ती) यांची नियोजन प्राधिकरणाने दि. १०/०३/२०१६ च्या आदेशान्वये नेमणूक केली आहे. तात्कालीन नगररचनाकार तथा नगररचना अधिकारी यांना दि. १०/१०/२०१७ रोजी कार्यमुक्त केल्यानंतर त्या पदावर रुजू झालेल्या / कार्यभार असलेल्या नगररचनाकार यांनी नगररचना अधिकारी म्हणून काम करण्याचे अपेक्षित असल्याचे मा. संचालक यांनी मनपाच्या दि. १४/०२/२०१८ च्या पत्राच्या अनुषंगाने कळविले आहे.

तरी मिरा भाईंदर शहरासाठी सुधारीत विकास आराखडा तयार करणेकामी इरादा जाहिर करण्यात आलेले आहे. तसेच, आजच्या महासभेच्या विषयपत्रिकेवर विकास योजना प्रसिध्दी मुदतवाढीचा प्रस्ताव मान्यतेसाठी आहे. प्रशासनाने सदर विषय विधीवतरीत्या सुधारीत आराखडा प्रसिध्द होईपर्यंत प्रलंबित ठेवणे नियमित आहे. प्रशासनाने दिलेला गोषवारा संभ्रम निर्माण करणारा व मिरा भाईंदर विकास नियंत्रण नियमावलीच्या नियमांचा उल्लंघन करणारा आहे. नियमावलीमध्ये नियमावलीच्या भोषेचा अर्थात काही संभ्रम निर्माण झाल्यास नियमावलीच्या परिशिष्ट ५/३ अन्वये शासनाकडे माहिती अपेक्षित करता येईल अशी तरतुद आहे. तसेच नियमावलीच्या नियमात काही बदल करावयाचा असल्यास एमआयटीपी ३७-१ अन्वये प्रस्ताव सादर करणे बंधनकारक आहे. तरी, सदरचा गोषवारा सदोष असल्याने रद्द करण्यात येत आहे असा मी ठराव मांडत आहे.

राजु भोईर :-

माझे अनुमोदन आहे.

मा. महापौर :-

सचिव साहेब दोन ठराव आलेले आहेत. मतदान घ्या.

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४० करिता दोन ठराव आलेले आहेत. पहिला ठराव सुचक श्रीम. प्रभात पाटील, अनुमोदन श्री. धृवकिशोर पाटील. दुसरा ठराव सुचक श्री. जुबेर इनामदार, अनुमोदन श्री. राजु भोईर. प्रथम दुसरा ठराव मी मतदानास टाकतो. सुचक श्री. जुबेर इनामदार ह्यांनी मांडलेल्या ठरावाच्या बाजूने जे असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत. ह्या ठरावाच्या विरोधात असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत.

सुचक श्रीम. प्रभात पाटील ह्यांनी मांडलेल्या ठरावाच्या बाजूने जे असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत. ह्या ठरावाच्या विरोधात असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत. तटस्थ कोणी असेल त्यांनी हात वर करायचे आहेत.

मा. महापौर :-

सुचक श्रीम. प्रभात पाटील यांनी मांडलेल्या ठरावाच्या बाजूने ५६, विरोधात २९, तटस्थ ० इतकी मते पडलेली आहेत. सुचक श्रीम. प्रभात पाटील यांचा ठराव बहुमतांनी मंजूर करण्यांत येत आहे.

प्रकरण क्र. ४० :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील रस्ते रुंदीकरण , फॅनिंग करणे इ . कामे करण्यासाठी मोबदला देणेबाबतचे धोरण निश्चित करणे.

ठराव क्र. ४० :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील विकास योजनेतील रस्ते , रुंदीकरण, फॅनिंग करणे , नविन रस्ते , आरक्षणामध्ये बाधित होणाऱ्या बाधितांना मोबदला देणेकरीता खालीलप्रमाणे समिती गठीत करण्यात येत आहे.

| अ.क्र. | समिती सदस्य | पद |
|--------|----------------------|---------|
| १ | महापौर | अध्यक्ष |
| २ | उप-महापौर | सदस्य |
| ३ | सभापती, स्थायी समिती | सदस्य |
| ४ | सभागृह नेते | सदस्य |
| ५ | विरोधी पक्षनेते | सदस्य |
| ६ | सर्व पक्षीय गटनेते | सदस्य |
| ७ | आयुक्त | सदस्य |

वरील प्रमाणे समिती गठीत करण्यात येत असून सदर समिती बाधितांना मोबदला देणेबाबत निर्णय घेईल विशेष बाब म्हणून देखील मोबदला देण्याचा समिती निर्णय घेवू शकेल . सदरची समिती कायमस्वरूपी ठेवण्यात येत असून समितीचा निर्णय अंतिम असेल असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- श्रीम. प्रभात पाटील

अनुमोदक :- श्री. धुवकिशोर पाटील

| अ.क्र. | ठरावाच्या बाजूने | अ.क्र. | ठरावाच्या विरोधात | तटस्थ |
|--------|---------------------------|--------|----------------------------|-------|
| १ | मेहता डिंपल विनोद | १ | भोईर राजू यशवंत | निरंक |
| २ | वैती चंद्रकांत सिताराम | २ | आमगावकर हरिशचंद्र रामचंद्र | |
| ३ | पाटील धुवकिशोर मन्साराम | ३ | पाटील प्रविण मोरेश्वर | |
| ४ | गेहलोत हसमुख मोहनलाल | ४ | परेरा कॅटलीन एन्थोनी | |
| ५ | जैन गीता भरत | ५ | नलावडे दिनेश दगडु | |
| ६ | पाटील प्रभात प्रकाश | ६ | शिर्के अनंत गेणू | |
| ७ | सिंह मदन उदितनारायण | ७ | शेख अशरफ मोहम्मद इब्राहीम | |
| ८ | यादव मिरादेवी रामलाल | ८ | मेहरा राजीव ओमप्रकाश | |
| ९ | शाह रिटा सुभाष | ९ | सावंत अनिल दिवाकर | |
| १० | हसनाळे ज्योत्सना जालींदर | १० | इनामदार जुबेर अब्दुल्ला | |
| ११ | गोहिल शानू जोरावर सिंह | ११ | पाटील जयंतीलाल गुरूनाथ | |
| १२ | डॉ. पाटील प्रिती जयप्रकाश | १२ | घरत तारा विनायक | |
| १३ | भोईर सुनिता शशिकांत | १३ | पाटील अनिता जयवंत | |
| १४ | पाटील वंदना मंगेश | १४ | गोविंद हेलन जॉर्जी | |
| १५ | सॉस नीला बर्नाड | १५ | गुप्ता कुसुम संतोष | |
| १६ | रावल मेघना दिपक | १६ | भोईर भावना राजू | |
| १७ | मोकाशी दिपाली आनंदराव | १७ | पाटील धनेश परशुराम | |
| १८ | जैन सुनिता रमेश | १८ | शेख रुबीना फिरोझ | |

| | | | |
|----|-----------------------------|----|---------------------------|
| १९ | अरोरा दीपिका पंकज | १९ | डिसा मर्लिन मर्विन |
| २० | नाईक विविता विवेक | २० | सपार उमा विश्वनाथ |
| २१ | भावसार वंदना संजय | २१ | परदेशी गिता हरीश |
| २२ | बेलानी हेमा राजेश | २२ | सय्यद नुरजाहाँ नाझर हुसेन |
| २३ | भोईर विणा सुर्यकांत | २३ | पाटील नरेश तुकाराम |
| २४ | सोनार सुरेखा प्रकाश | २४ | पाटील वंदना विकास |
| २५ | मुखर्जी अनिता बबलू | २५ | पाटील संध्या प्रफुल्ल |
| २६ | शिंदे रुपाली वसंत (मोदी) | २६ | भोईर कमलेश यशवंत |
| २७ | म्हात्रे परशुराम पदमाकर | २७ | अहमद साराह अकरम |
| २८ | म्हात्रे मोहन गोपाळ | २८ | बगाजी शर्मिला विन्सन्ट |
| २९ | शाह राकेश रतिशचंद्र | २९ | बांड्या एलायस दुमिंग |
| ३० | शेट्टी अरविंद आनंद | | |
| ३१ | सिंग श्रीप्रकाश जिलेदार | | |
| ३२ | तिवारी अशोक सूर्यदेव | | |
| ३३ | अग्रवाल सुशील गोपीकिशन | | |
| ३४ | भूपताणी रक्षा सतीश (शाह) | | |
| ३५ | शाह सीमाबेन कमलेश | | |
| ३६ | रकवी वैशाली गर्जेद्र | | |
| ३७ | कांगणे मीना यशवंत | | |
| ३८ | परमार हेतल रतिलाल | | |
| ३९ | दळवी प्रशांत ज्ञानदेव | | |
| ४० | म्हात्रे विनोद काशिनाथ | | |
| ४१ | म्हात्रे नयना गजानन | | |
| ४२ | भोईर जयेश भानुदास | | |
| ४३ | शेट्टी गणेश गोपाळ | | |
| ४४ | थेराडे संजय अनंत | | |
| ४५ | राय विजयकुमार सिस्थन नारायण | | |
| ४६ | जैन राजेंद्र भवरलाल | | |
| ४७ | विराणी अनिल रावजीभाई | | |
| ४८ | जैन दिनेश तेजराज | | |
| ४९ | गजरे दौलत तुकाराम | | |
| ५० | मांजरेकर आनंद दत्ताराम | | |
| ५१ | कासोदारिया अश्विन शामजीभाई | | |
| ५२ | दुबे मनोज रामनारायण | | |
| ५३ | खंडेलवाल सुरेश जगदीश | | |
| ५४ | पांडेय पंकज सूर्यमणि | | |
| ५५ | भोईर गणेश गजानन | | |
| ५६ | पारधी सुजाता यशवंत | | |

ठराव बहुमताने मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४१, राष्ट्रीय महामार्गालगत मिरागाव, सिल्वर सरीता, क्रिष्णस्थळ, मुन्शी कम्पाऊंड, लक्ष्मी बाग, हाटकेश इ. भागातील पाण्याचा निचरा होण्यासाठी आवश्यक उपाययोजना करणेबाबत सुरेखा सोनार :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका हद्दीच्या पुर्वेस संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान (National Park) असुन सदर उद्यानाच्या भागातील डोंगर दऱ्यातुन वाहणारे पावसाचे पाणी हे मुख्यतः दहीसर चेकनाका, मिरा गावठण, महाजनवाडी, विठ्ठल मंदिर नाला, लक्ष्मीबाग, साई पॅलेस हॉटेल जवळील नाल्यातुन राष्ट्रीय महामार्ग क्र.08 ओलांडुन मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील पेणकरपाडा, मुन्शी कम्पाऊंड, क्रिष्णस्थळ, मिरागांव, सिल्व्हर सरीता, हटकेश या भागातील नाल्यातुन घोडबंदर खाडीस मिळतो

राष्ट्रीय महामार्ग क्र .08 ते घोडबंदर, हटकेश उद्योग नगर, क्रिष्णस्थळ, मिरागांव, मुन्शी कम्पाऊंड, सिल्व्हर सरीता, लक्ष्मीबाग या भागात मोठ्या प्रमाणावर गृहनिर्माण संकुले तयार झालेली असुन लोकवस्ती देखील वाढत आहे. संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यानातील पावसाचे पाणी याच भागातील नाल्यातुन जात असल्याने जास्त पाऊस झाल्यास तसेच समुद्रास भरती असल्याने पाणी थांबल्यास हा सर्व भाग जलमय होऊन 7 ते 8 फुट पाणी तुंबुन राहते व इमारतीमध्ये पाणी जाऊन रहीवाशांचे अतोनात हाल होत असतात.

संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यानातुन मिरा-भाईंदर शहरात येणारे पावसाचे पाणी शहरात येऊ न देणे यासाठी तज्ञ सल्लागार नेमुन त्यांच्यामार्फत अभ्यास करुन व कामाचे नियोजन करुन कामाचा सविस्तर प्रकल्प अहवाल तयार करणे व महासभेपुढे सादर करणे यासाठी मा.विशेष महासभा दि.16/10/2017 ठराव क्र.06 अन्वये मान्यता प्रदान करण्यात आलेली आहे. त्यानुसार 5 इलेमेन्ट डीझाईन सेल या सल्लागाराची नेमणुक करण्यात आलेली आहे.

मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेने नेमलेल्या सदर सल्लागाराने प्रत्यक्ष परिसराची पहाणी करुन तसेच आवश्यक माहिती जमा करुन जागेवर सर्वेक्षण करुन सदर कामाबाबत प्राथमिक अहवाल सादर केलेला आहे. सदर अहवालाचे सादरीकरण करण्यात आले आहे. सदर कामाचा सविस्तर प्रकल्प अहवाल तयार करुन मा. महासभेपुढे सादर करण्यात यावा. दरम्यानच्या काळात खालील उपाययोजना केल्यास शहरात जाणारे पाणी कमी होऊ शकेल व सिल्व्हर सरीता मागील नाल्यातील पाणी कमी होईल.

वेस्टर्न व दाराज धाबा या हॉटेल समोरुन व शेजारुन वाहणारे नाले हे फिरुन पुन्हा सिल्व्हर सरीता मागील नाल्यास मिळतात. त्यामुळे सदर नाल्यावर प्रचंड ताण येतो. सदर ताण कमी करण्यासाठी राष्ट्रीय महामार्ग सर्व्हीस रस्त्यालगत काशिगांव नाका एच.पी. पेट्रोल पंप ते दाराज धाबा पर्यंत नाला बांधुन तो नाला घोडबंदर खाडीकडे जाणाऱ्या 60 मीटर रुंदीच्या रस्त्यालगत प्रस्तावित नाल्यास जोडल्यास सदर नाल्यातुन घोडबंदर खाडीकडे पाणी जाऊ शकेल. सदर कामासाठी रु.15,89,74,751/- एवढा खर्च अपेक्षित आहे.

घोडबंदर (वेस्टर्न हॉटेल) येथुन खाडीपर्यंत बांधावयाच्या नाल्यापैकी 1.80 कि.मीटर लांबीचा नाला मुंबई महानगर प्रदेश विकास प्राधिकरणामार्फत (MMRDA) मंजुर केलेल्या 60 मीटर रुंद रस्त्याच्या कामात धरण्यात आलेला असुन सदर रस्त्यालगतच्या नाल्याचे कामास सुरुवात करण्यात येणार आहे. सदर स्थिती प्रस्तावित एच.पी. पेट्रोल पंप ते दाराज धाबापर्यंत राष्ट्रीय महामार्ग क्र .8 सर्व्हीस रोडलगत नाला बांधणेच्या खर्चास ही सभा प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देत आहे. सदर कामासाठी अर्थसंकल्पात पुर्नविनियोजनाव्दारे आवश्यक तरतूद करुन निविदा मागवावी व पुढील पावसाळ्यापूर्वी सदर काम पूर्ण करावे.

विणा भोईर :-

माझे अनुमोदन आहे.

अनिल सावंत :-

महापौर मॅडम आयुक्त साहेब ज्यावेळेस १६ ऑक्टोबरला हा ठराव झाला टेक्नीकल टीम नेमुन सर्व्हेक्षण करावे आणि ह्या कामाचे स्वरुप वगैरे याच्यासाठी हा ठराव झाला. त्यावेळी ह्या शहरामध्ये ज्या-ज्या ठिकाणी पाणी तुंबते त्या-त्या ठिकाणी पाहणी करुन अहवाल सादर करावा असे त्या ठरावामध्ये नमुद

करण्यात आले आणि ते अपेक्षित होते. ह्या नाल्याचे काम व्हायलाच पाहिजे ते फार गरजेचे आहे. परंतु या नाल्याचा ज्याला फायदा होणार आहे त्याठिकाणी तुम्ही बघा अजून कित्येक बिल्डींगला प्रॉपर्टी टॅक्स लागलेला नाही. कित्येक नविन कस्ट्रक्शन होत आहेत. मगाशी मी उल्लेख केला १९८८ पासूनची शितलनगर कॉम्प्लेक्स आहे. १९८८ सालापासून लोक तिथे टॅक्स भरत आहेत. ह्या आजपासूनच्या पावसामध्ये ३ वेळा साहेब पूर्ण फस्ट फ्लोअर, ग्राऊंड फ्लोअर त्यांच्या पाण्याखाली गेला होता. पूर्ण ग्राऊंड फ्लोअर संपूर्ण दुकानांमध्ये २-२, ३-३ फुट पाणी घरांमध्ये पाणी एवढे नुकसान झाले होते. आणि त्यावेळी अपेक्षा ही होती की मॅडम आपल्याजवळ सुध्दा काही तक्रारी आल्या असतील. शितल नगर परिसराचे पाणी भरते शितल नगर, गिता आर्केड वगैरे त्या परिसरात होली क्रॉस स्कुल ह्या परिसरामध्ये पूर्ण पाण्याचा प्रेशर त्याठिकाणी आलेला आहे. आणि आमची अपेक्षा ही होती की त्याच्या साईटचा जो नाला होता तो अमृत योजनेमध्ये ऑलरेडी सॅक्शन झालेला आहे. आणि ह्या पावसाच्या अगोदर तो नाला झाला असता ऑक्टोबरमध्ये हा ठराव झालेला आहे. त्याच्या अगोदर जर हा नाला झाला असता तर पुष्कळ रिलीफ त्या लोकांना मिळाले असते. तर त्याचा कुठे उल्लेखच नाही. १९८८ सालापासून लोक राहत आहेत. त्यांच्यासाठी सुविधा प्राप्त करून देणे आपले कर्तव्य नाही का किती वर्षे ते टॅक्स भरत आहेत. आणि नविन जे इमारती होणार लोकं आता राहायला येणार आहेत. त्यांच्यासाठी आपण पैसे खर्च करू तर करायलाच पाहिजेत. करा ना पण जुन्या लोकांचा पण विचार करा.

दिपक खांबित :-

मा. महापौरांच्या परवानगीने बोलतो आपण जो महासभेला ठराव केला होता त्याप्रमाणे आपण कन्सीडर नेमलेला आहे आणि प्रचंड मोठ्या स्वरूपाची कामे आहेत पूर्ण नॅशनल पार्कचा सर्व्हे बाकीचा जो एरिया तुम्ही म्हटले आपण घेतलेला मिरा गाव, सिल्व्हर सरिता, कृष्णा स्थळ याच्यासोबतच शितल नगरचा पाठीमागचा नाला वगैरे याचे सर्व्हेक्षणाचे काम चालू आहे. जो सिल्व्हर सरिताचा नाला आहे जो पाणी फिरून फिरून दाराच्या धाब्याचा.....

अनिल सावंत :-

साहेब तो तुम्ही कराच त्याला आमचा विरोध नाही फक्त हे कधी करणार ते सांगा.

दिपक खांबित :-

साहेब आम्ही लवकरच सादर करू. एका महिन्यात सादर करू साहेब.

मा. महापौर :-

ठराव मंजूर पुढचा विषय घ्या.

प्रकरण क्र. ४१ :-

राष्ट्रीय महामार्गालगत मिरागाव , सिल्वर सरिता , क्रिष्णस्थळ, मुन्शी कम्पाऊंड , लक्ष्मी बाग , हाटकेश इ. भागातील पाण्याचा निचरा होण्यासाठी आवश्यक उपाययोजना करणेबाबत

ठराव क्र. ४१ :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका हद्दीच्या पुर्वस संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान (National Park) असून सदर उद्यानाच्या भागातील डोंगर दऱ्यातुन वाहणारे पावसाचे पाणी हे मुख्यत : दहीसर चेकनाका, मिरा गावठण, महाजनवाडी, विठ्ठल मंदिर नाला , लक्ष्मीबाग, साई पॅलेस हॉटेल जवळील नाल्यातुन राष्ट्रीय महामार्ग क्र.08 ओलांडुन मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील पेणकरपाडा, मुन्शी कम्पाऊंड, क्रिष्णस्थळ, मिरागांव, सिल्व्हर सरिता, हटकेश या भागातील नाल्यातुन घोडबंदर खाडीस मिळतो

राष्ट्रीय महामार्ग क्र .08 ते घोडबंदर , हटकेश उद्योग नगर , क्रिष्णस्थळ, मिरागांव, मुन्शी कम्पाऊंड, सिल्व्हर सरिता, लक्ष्मीबाग या भागात मोठ्या प्रमाणावर गृहनिर्माण संकुले तयार झालेली असून लोकवस्ती देखील वाढत आहे. संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यानातील पावसाचे पाणी याच भागातील नाल्यातुन जात असल्याने जास्त पाऊस झाल्यास तसेच समुद्रास भरती असल्याने पाणी थांबल्यास हा सर्व भाग जलमय होऊन 7 ते 8 फुट पाणी तुंबुन राहते व इमारतीमध्ये पाणी जाऊन रहीवाशांचे अतोनात हाल होत असतात.

संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यानातुन मिरा -भाईंदर शहरात येणारे पावसाचे पाणी शहरात येऊ न देणे यासाठी तज्ञ सल्लागार नेमून त्यांच्यामार्फत अभ्यास करून व कामाचे नियोजन करून कामाचा सविस्तर प्रकल्प अहवाल तयार करणे व महासभेपुढे सादर करणे यासाठी मा.विशेष महासभा दि.16/10/2017 ठराव

क्र.06 अन्वये मान्यता प्रदान करण्यात आलेली आहे . त्यानुसार 5 इलेमेन्ट डीझाईन सेल या सल्लागाराची नेमणुक करण्यात आलेली आहे.

मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेने नेमलेल्या सदर सल्लागाराने प्रत्यक्ष परिसराची पहाणी करून तसेच आवश्यक माहिती जमा करून जागेवर सर्वेक्षण करून सदर कामाबाबत प्राथमिक अहवाल सादर केलेला आहे. सदर अहवालाचे सादरीकरण करण्यात आले आहे . सदर कामाचा सविस्तर प्रकल्प अहवाल तयार करून मा. महासभेपुढे सादर करण्यात यावा . दरम्यानच्या काळात खा लील उपाययोजना केल्यास शहरात जाणारे पाणी कमी होऊ शकेल व सिल्व्हर सरीता मागील नाल्यातील पाणी कमी होईल

वेस्टर्न व दाराज धाबा या हॉटेल समोरून व शेजारून वाहनारे नाले हे फिरून पुन्हा सिल्व्हर सरीता मागील नाल्यास मिळतात. त्यामुळे सदर नाल्यावर प्रचंड ताण येतो. सदर ताण कमी करण्यासाठी राष्ट्रीय महामार्ग सर्व्हीस रस्त्यालगत काशिगांव नाका एच .पी. पेट्रोल पंप ते दाराज धाबा पर्यंत नाला बांधून तो नाला घोडबंदर खाडीकडे जाणाऱ्या 60 मीटर रुंदीच्या रस्त्यालगत प्रस्तावित नाल्यास जोडल्यास सदर नाल्यातून घोडबंदर खाडीकडे पाणी जाऊ शकेल. सदर कामासाठी रु.15,89,74,751/- एवढा खर्च अपेक्षित आहे.

घोडबंदर (वेस्टर्न हॉटेल) येथून खाडीपर्यंत बांधावयाच्या नाल्यापैकी 1.80 कि.मीटर लांबीचा नाला मुंबई महानगर प्रदेश विकास प्राधिकरणामार्फत (MMRDA) मंजूर केलेल्या 60 मीटर रुंद रस्त्याच्या कामात धरण्यात आलेला असून सदर रस्त्यालगतच्या नाल्याचे कामास सुरुवात करण्यात येणार आहे . सद्यस्थिती प्रस्तावित एच .पी. पेट्रोल पंप ते दाराज धाबापर्यंत राष्ट्रीय महामार्ग क्र .8 सर्व्हीस रोडलगत नाला बांधणेच्या खर्चास ही सभा प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देत आहे . सदर कामासाठी अर्थसंकल्पात पुर्नविनियोजनाव्दारे आवश्यक तरतूद करून निविदा मागवावी व पुढील पावसाळ्यापूर्वी सदर काम पूर्ण करावे.

सुचक :- श्रीम. सुरेखा सोनार

अनुमोदन :- श्रीम. विणा भोईर

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४२, आजारी पक्षांच्या उपचारासाठी जागा उपलब्ध देणेबाबत.

अनिल सावंत :-

महापौर मॅडम याच्यामध्ये तो जो ठराव आहे त्या ठरावाला आमचा विरोध नाही. पण पक्षी आणि प्राणी पण करा.

मा. महापौर :-

प्राणी पॉसिबल नाही.

अनिल सावंत :-

कुठची मोठी जागा लागणार आहे? प्राणी म्हणजे पाळीव.....

मा. महापौर :-

तिथे जागा पाहिजे ना.

अनिल सावंत :-

पाळीव प्राणी तिथे कोणी घेऊन येत नाही. रस्त्यावरचे स्ट्रीक डॉग वगैरे आहेत त्यांच्यासाठी होऊ शकतो ना.

मा. महापौर :-

ठिक आहे ठरावामध्ये नमुद करा.

मनोज दुबे :-

मिरा भाईंदर क्षेत्रात आजारी पक्षी यांच्यावर उपचार करण्यासाठी रुग्णालय उपलब्ध नाहीत. त्यामुळे शहरातील बऱ्याच सेवाभावी, जीवदया संस्था या आजारी पक्षांवर मोफत उपचार करणेकरीता पुढाकार घेत

आहेत. परंतु या विविध संस्थांना आजारी पक्षांवर उपचार करणेकामी जागा उपलब्ध नसल्यामुळे उपचार करणे गैरसोयीचे होत आहे.

याकरीता विविध संस्थांनी आजारी पक्षांच्या उपचारासाठी महानगरपालिकेकडे जागा उपलब्ध करून देण्याची मागणी केली होती. त्याप्रमाणे अहिंसा चॅरीटेबल ट्रस्ट या संस्थेला भाईंदर पश्चिम डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर रस्त्यालगत असलेल्या अग्निशमन दलाच्या आवारात जागा उपलब्ध करून दिलेली असून या जागेत सदर सेवाभावी संस्थांमार्फत स्वखर्चाने उपचार केले जात आहेत. परंतु सदर इमारतीची पुर्नबांधणी अंतर्गत सदर शेड काढण्यात येणार असून अहिंसा चॅरीटेबल ट्रस्ट या संस्थेने मागणी केल्यानूसार पर्यायी भाईंदर (प.) रेल्वे समांतर 100 फीट रस्त्यावर, अग्निशमन कार्यालयातील मोकळ्या जागेत तात्पुरत्या स्वरूपात शेड बांधून उपलब्ध करून देण्यात यावे.

त्याचप्रमाणे मिरारोड येथे आजारी पक्षांच्या उपचाराकरीता जागा उपलब्ध करून मिळणेकरीता अनेक सेवाभावी जीवदया संस्थांनी अर्ज केला किंवा करतील त्यानुसार त्यांना शांतीनगर येथील एस.टी.पी. प्लान्ट जवळील कोपन्यामध्ये शेड बांधून जागा उपलब्ध करून देणेबाबत मा. आयुक्त यांनी प्राप्त झालेले अर्ज मा. स्थायी समिती पुढे ठेवून मंजुरी घेवून त्यांना जागा उपलब्ध करून द्यावी. तसेच सदर जागेचा मालकी हक्क महानगरपालिकेकडे राहिल व आजारी पक्षांच्या उपचारासाठी मागणीनुसार आवश्यक प्रक्रीया व करारनामा करून जागेचा ताबा देण्यात यावा असा मी ठराव मांडत आहे.

हेतल परमार :-

माझे अनुमोदन आहे.

मा. महापौर :-

ठराव मंजूर पुढचा विषय घ्या.

प्रकरण क्र. ४२ :-

आजारी पक्षांच्या उपचारासाठी जागा उपलब्ध देणेबाबत.

ठराव क्र. ४२ :-

मिरा भाईंदर क्षेत्रात आजारी पक्षी यांच्यावर उपचार करण्यासाठी रुग्णालय उपलब्ध नाहीत. त्यामुळे शहरातील बऱ्याच सेवाभावी, जीवदया संस्था या आजारी पक्षांवर मोफत उपचार करणे करीता पुढाकार घेत आहेत. परंतु या विविध संस्थांना आजारी पक्षांवर उपचार करणेकामी जागा उपलब्ध नसल्यामुळे उपचार करणे गैरसोयीचे होत आहे.

याकरीता विविध संस्थांनी आजारी पक्षांच्या उपचारासाठी महानगरपालिकेकडे जागा उपलब्ध करून देण्याची मागणी केली होती. त्याप्रमाणे अहिंसा चॅरीटेबल ट्रस्ट या संस्थेला भाईंदर पश्चिम डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर रस्त्यालगत असलेल्या अग्निशमन दलाच्या आवारात जागा उपलब्ध करून दिलेली असून या जागेत सदर सेवाभावी संस्थांमार्फत स्वखर्चाने उपचार केले जात आहेत. परंतु सदर इमारतीची पुर्नबांधणी अंतर्गत सदर शेड काढण्यात येणार असून अहिंसा चॅरीटेबल ट्रस्ट या संस्थेने मागणी केल्यानूसार पर्यायी भाईंदर (प.) रेल्वे समांतर 100 फीट रस्त्यावर, अग्निशमन कार्यालयातील मोकळ्या जागेत तात्पुरत्या स्वरूपात शेड बांधून उपलब्ध करून देण्यात यावे.

त्याचप्रमाणे मिरारोड येथे आजारी पक्षांच्या उपचाराकरीता जागा उपलब्ध करून मिळणेकरीता अनेक सेवाभावी जीवदया संस्थांनी अर्ज केला किंवा करतील त्यानुसार त्यांना शांतीनगर येथील एस.टी.पी. प्लान्ट जवळील कोपन्यामध्ये शेड बांधून जागा उपलब्ध करून देणेबाबत मा. आयुक्त यांनी प्राप्त झालेले अर्ज मा. स्थायी समिती पुढे ठेवून मंजुरी घेवून त्यांना जागा उपलब्ध करून द्यावी. तसेच सदर जागेचा मालकी हक्क महानगरपालिकेकडे राहिल व आजारी पक्षांच्या उपचारासाठी मागणीनुसार आवश्यक प्रक्रीया व करारनामा करून जागेचा ताबा देण्यात यावा असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- श्री. मनोज दुबे अनुमोदन :- श्रीम. हेतल परमार

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४३, प.पु.डॉ. केशव बळीराम हेडगेवार भवन (स्थानिक संस्था कर कार्यालय) मधील काही जागा तहसिलदार कार्यालयाकरिता उपलब्ध करून देणेबाबत राकेश शहा :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात मौजे भाईंदर सर्व्हे क्र .278/5,6,1ब, 277/7अ,7ब,7क जुना 676/5,6,1ब, 677/7अ,7ब,7क या आरक्षण क्र.97 मार्केट मध्ये समावेशक आरक्षणातून 819.21 चौ. मीटर क्षेत्राचे तळ + एक मजल्याची इमारत बांधून महानगरपालिकेकडे हस्तांतर झालेली आहे. सदर इमारतीच्या तळ मजल्यावर मार्केट सुरु करण्याची प्रक्रीया सुरु असून पहिल्या मजल्यावर सद्यस्थितीत पोलिस पथक कार्यालय आहे. सदर पोलिस पथकास इतरत्र जागा देण्यात यावी व पहिल्या मजल्यावर तहसिलदार कार्यालयासाठी तात्पुरत्या स्वरूपात (नविन तहसिलदार कार्यालय होऊन स्थलांतरीत होईपर्यंत) जागा उपलब्ध करून देण्यास ही सभा मंजूरी देत आहे . यापूर्वी मा. जिल्हाधिकारी ठाणे यांच्या मागणी नूसार आरक्षण क्र.249 या जागेतील महानगरपालिकेची इमारत शासकीय कामासाठी देण्यात आलेली आहे. तथापी सदर जागेचा अजूनपर्यंत वापर सुरु करण्यात आलेला नाही . त्याचपमाणे सदर इमारती मधील सर्व जागा जिल्हाधिकारी ठाणे पुरस्कृत कौशल्य विकास व अॅप्रॅन्टीसशीप केंद्रासाठी लागत नाही . तरी जिल्हाधिकारी यांनी एक महिन्याची मुदत देऊन सदर इमारती कौशल्य विकास व अॅप्रॅन्टीसशीप केंद्र सुरु करण्याबाबत कळविण्यात यावे व सदर मुदतीत काम सुरु न झाल्यास सदर जागेचा ताबा परत घेण्यात यावा . तसेच यापूर्वी तहसिल कार्यालयाकरिता दिलेली जागा रद्द करण्यात यावी व पं.पु.डॉ. केशव बळीराम हेडगेवार भवन या इमारतीमध्ये पहिल्या मजल्यावर तात्पुरत्या स्वरूपात तहसिलदार कार्यालयास जागा देण्यात येत आहे असा मी ठराव मांडत आहे.

दिनेश जैन :-

माझे अनुमोदन आहे.

मा. महापौर :-

ठराव मंजूर. पुढचा विषय घ्या.

प्रकरण क्र. ४३ :-

प.पु.डॉ. केशव बळीराम हेडगेवार भवन (स्थानिक संस्था कर कार्यालय) मधील काही जागा तहसिलदार कार्यालयाकरिता उपलब्ध करून देणेबाबत.

ठराव क्र. ४३ :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात मौजे भाईंदर सर्व्हे क्र .278/5,6,1ब, 277/7अ,7ब,7क जुना 676/5,6,1ब, 677/7अ,7ब,7क या आरक्षण क्र.97 मार्केट मध्ये समावेशक आरक्षणातून 819.21 चौ. मीटर क्षेत्राचे तळ + एक मजल्याची इमारत बांधून महानगरपालिकेकडे हस्तांतर झालेली आहे. सदर इमारतीच्या तळ मजल्यावर मार्केट सुरु करण्याची प्रक्रीया सुरु असून पहिल्या मजल्यावर सद्यस्थितीत पोलिस पथक कार्यालय आहे. सदर पोलिस पथकास इतरत्र जागा देण्यात यावी व पहिल्या मजल्यावर तहसिलदार कार्यालयासाठी तात्पुरत्या स्वरूपात (नविन तहसिलदार कार्यालय होऊन स्थलांतरीत होईपर्यंत) जागा उपलब्ध करून देण्यास ही सभा मंजूरी देत आहे . यापूर्वी मा. जिल्हाधिकारी ठाणे यांच्या मागणी नूसार आरक्षण क्र.249 या जागेतील महानगरपालिकेची इमारत शासकीय कामासाठी देण्यात आलेली आहे. तथापी सदर जागेचा अजूनपर्यंत वापर सुरु करण्यात आलेला नाही . त्याचपमाणे सदर इमारती मधील सर्व जागा जिल्हाधिकारी ठाणे पुरस्कृत कौशल्य विकास व अॅप्रॅन्टीसशीप केंद्रासाठी लागत नाही . तरी जिल्हाधिकारी यांनी एक महिन्याची मुदत देऊन सदर इमारती कौशल्य विकास व अॅप्रॅन्टी सशीप केंद्र सुरु करण्याबाबत कळविण्यात यावे व सदर मुदतीत काम सुरु न झाल्यास सदर जागेचा ताबा परत घेण्यात यावा . तसेच यापूर्वी तहसिल कार्यालयाकरिता दिलेली जागा रद्द करण्यात यावी व पं.पु.डॉ. केशव बळीराम हेडगेवार भवन या इमारतीमध्ये पहिल्या मजल्यावर तात्पुरत्या स्वरूपात तहसिलदार कार्यालयास जागा देण्यात येत आहे असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- श्री. राकेश शाह

अनुमोदन :- श्री. दिनेश जैन

ठराव सर्वानुमते मंजूर
सही/-
महापौर
मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४४, **मिरा भाईंदर महानगरपालिकेमार्फत राबविण्यात आलेल्या बी.एस.यु.पी. योजनेतील कामे प्रधानमंत्री आवास योजनेत घेवून पूर्ण करणेबाबत विचार विनिमय करून निर्णय घेणे**

जुबेर इनामदार :-

ठरावाच्या आधी आयुक्तांनी याचे निवेदन करावे. खरोखर ज्वलंत विषय आहे. हा झालाच पाहिजे कुठल्यातरी माध्यमातून व्हायला पाहिजे. आमची तयारी आहे.

ज्योत्सना हसनाळे :-

आता जे इनामदार साहेबांनी सांगितले की आधी चर्चा करा आणि नंतर ठराव करा. चालेल हरकत नाही तुम्ही चर्चा करा मी पण तुमच्या चर्चेमध्ये सहभागी आहे.

चंद्रकांत वैती :-

त्यांचे म्हणणे असे आहे की प्रशासनाने निवेदन करावे तर प्रशासनाने निवेदन करावं.

मा. आयुक्त :-

ठरावाला मान्यता आहे असे ते म्हणत आहेत.

चंद्रकांत वैती :-

आमच्याकडून निवेदन पाहिजे असेल तर आम्ही सादर करतो आयुक्तांनी सादर केले तर आयुक्त करतील.

ज्योत्सना हसनाळे :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेमार्फत राबविण्यात आलेल्या बी.एस.यु.पी. योजनेबाबत खालीलप्रमाणे विस्तृत माहिती सादर करण्यात आलेली आहे.

- १) जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय नागरी पुनरुत्थान अभियानांतर्गत “शहरी गरीबांना मुलभूत सुविधा पुरविणे” (BSUP) या उपकार्यक्रम अंमलबजावणी बाबत महाराष्ट्र शासन गृहनिर्माण विभाग यांनी दि. २५ जून २००७ शासन निर्णय अन्वये सुचना निर्गमित केल्या आहेत.

राज्य शासनाच्या मार्गदर्शक सुचना

सन २००१ च्या जनगणनेनुसार देशात सुमारे २८५.३५ दशलक्ष म्हणजे देशाच्या एकुण लोकसंख्येच्या २७.८ टक्के लोक शहरात राहात आहेत. स्वातंत्र्यानंतर देशाच्या लोकसंख्येत तिप्पट वाढ झालेली असून शहरी भागातील लोकसंख्येत पाचपट वाढ करणा-या गरीब जनतेच्या लोकसंख्येत सुध्दा वाढ झालेली आहे. सन२००१ च्या जनगणनेनुसार देशातील झोपडपट्टीवासीयांची एकुण लोकसंख्या ६१.८ दशलक्ष इतकी झालेली इतकी झालेली आहे.

शहरातील झोपडपट्टीवासीयांच्या वाढत्या लोकसंख्येमुळे शहरातील मुलभूत सोयी व सुविधावर अतोनात ताण पडत आहे. यानुसार केंद्र शासनाने जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय नागरी पुनरुत्थान अभियानांतर्गत “शहरी गरीबांना मुलभूत सुविधा पुरविणे” (BSUP) या उपकार्यक्रम राबविण्याचा निर्णय घेतला आहे.

कार्यक्रमाची उद्दिष्टे

- १) कार्यक्रमात समाविष्ट असलेल्या शहरातील गरिब जनतेसाठी पुरविण्यात येणा-या मुलभूत सुविधाचा एकात्मिकत विकास करण्यावर लक्ष केंद्रीत करणे.
- २) शिक्षण,आरोग्य,व सामाजिक सुरक्षा पुरविणे.
- ३) मालमत्तेची निर्मीती व मालमत्तेचे व्यवस्थापन.
- ४) आवश्यक तेवढ्या निधीची गुंतवणुक करणे.
- ५) नागरी सुविधा व सोयी पुरविणे.

कार्यक्रमाचा कालावधी.

सन.-२००५-२००६ पासून ७ वर्ष.(प्रकल्पास मुदतवाढ ३१ मार्च २०१७)

निधी उपलब्धता

केंद्र शासनाचा वाटा एकुण प्रकल्प खर्चाच्या ५०%

मागासवर्गिय/ सर्वसाधारण १० ते १२ %

उर्वरीत राज्य शासन व स्थानीक स्वराज्य संस्था.

अंमलबजावणी रुपरेषा

दि.०१/०१/१९९५ च्या लाभार्थीना प्राधान्याने सहभागी करुन घेणे.

प्रस्तावाची अंमलबजावणी अ) निव्वळ पायाभुत सुविधा पुरविणे ब)गहनिर्माण प्रकल्प

लाभार्थ्यांचे अंशदान वसुल करण्याची जबाबदारी स्थानीक स्वराज्य संस्थाची असेल.

निवासी झोपडीधारकांना किमान २६९ चा.फु. बांधकाम क्षेत्रफळाइतका (२२५ चा.फु.चटई क्षेत्र) गाळा देण्यात येईल.

शासकीय जमिनीवरिल झोपड्याच्या जागेवर घरे बांधण्यासाठी अकषीक परवानगी आवश्यक नाही.

नोंदणी फी पुर्णपणे माफ करणे.

- २) मिरा-भाईदर महानगरपालिकेने सदर प्रकल्प राबविणेस मा. महासभा दि. २०/११/२००९ ठराव क्र. ३६ अन्वये प्रशासकिय व आर्थिक मान्यता प्रदान केली.
- ३) त्यानुसार मिरा-भाईदर महानगरपालिकेने केंद्र शासनाच्या जवाहरलाल नेहरु नागरी पुर्नरुत्थान अभियानांतर्गत “शहरी गरिबांना मुलभूत सुविधा पुरविणे” हा उपक्रम हाती घेण्याचे ठरविले. महानगरपालिका क्षेत्रातील बहुतांशः झोपड्या या खाजगी जागेवर व सी.आर.झेड ने बाधीत असल्याने शासकीय जागेवर वसलेल्या जनतानगर व काशी चर्च या फक्त दोनच झोपडपट्ट्या अस्तित्वात होत्या. त्यामुळे सदर दोन झोपडपट्ट्यांची निवड सदर उपक्रमासाठी करण्यात आली.
- ४) मा. स्थायी समिती ठराव क्र. ११८ दि. १७/०२/२००९ नुसार दि.२६/०९/२००९ च्या कार्यादेशानुसार मे. पुनित आर्किटेक्ट, ठाणे यांची तांत्रिक सल्लागार म्हणून नेमणुक करण्यात आली. सदर सल्लागारामार्फत सविस्तर प्रकल्प अहवाल तयार करुन म्हाडा मार्फत केंद्रशासनाकडे मान्यतेसाठी सादर करण्यात आला. सदर प्रकल्प हा जिल्हाधिकारी यांच्या मालकिच्या जागेवर असल्याचे नमुद करुनच प्रकल्प सादर करण्यात आला होता.

सदर रु. २७९.५५ कोटी किंमतीच्या प्रकल्पास दि. ११/११/२००९ रोजी केंद्र शासनाची मान्यता प्राप्त झाली. सदर योजनेचा मंजूर वित्तीय आकृती बंध खालील प्रमाणे होता.

| अ.क्र. | तपशिल | केंद्र हिस्सा | राज्य हिस्सा | मनपा हिस्सा | लाभार्थी हिस्सा | एकूण |
|--------|---------------|-------------------|----------------------|-------------------|-------------------|-----------------|
| १) | घराची किंमत | ६५२१.५९ (५० %) | ३९१२.९६ (३० %) | ११७३.८८ (९%) | १४३४.७५ (११ %) | १३०४३.१८ |
| २) | मुलभूत सुविधा | ४९०८.४० (५०%) | रु.२४५४.१९ (२५ %) | २४५४.१९ (२५ %) | - | ९८१६.७८ |
| ३) | संक्रमण शिबीर | - | १४८८.९६ (५० %) | १०६५.०८ (५० %) | - | ५०९५.४४ |
| ४) | इतर | - | - | २५४१.४० | - | |
| | एकूण | ११४२९.९९ | ७८५६.१२ | ७२३४.५६ | १४३४.७५ | २७९५५.४२ |

प्रकल्पाचे उपांगे खालील प्रमाणे आहे.

- १ एकूण झोपडपट्टी - दोन (१) जनतानगर
(२) काशीचर्च
- २ लाभार्थ्यांची संख्या - ४१३६ (१) जनतानगर ३६६५
(२) काशीचर्च ४७१

| | | | |
|---|--------------------------------------|---|--|
| ३ | पुरविण्यात येणाऱ्या सदानिकेचे स्वरूप | - | सदनिका 1 BHK स्वरूपाची असून त्यामध्ये Living in Room, Bedroom, Kitchen, W.C. Bath, Passage, Balcony. यांचा समावेश आहे |
| ४ | चटई क्षेत्र | - | २५ चौ.मी (२६९ चौ.फुट)/प्रति लाभार्थी |
| ५ | पुरविण्यात येणाऱ्या पायाभूत सुविधा | | <ul style="list-style-type: none"> i. अंतर्गत रस्ते ii. पाणीपुरवठा व मलनिःस्सारण iii. पथदिवे iv. बालवाडी (७) v. समाजमंदिर (६) |
| ६ | घराच्या किंमती | | |
| | प्रत्यक्ष घराची किंमत | | रु. ३.४६ लक्ष प्रती घर |
| | पायाभूत सुविधा किंमत | - | रु. ३.३० लक्ष प्रती घर |
| | एकूण घराची किंमत (पायाभूत सुविधांसह) | - | रु. ६.७६ लक्ष प्रती घर |

| अ.क्र. | निधीचा स्रोत | केंद्र शासना प्रमाणे मंजूर निधी | प्राप्त निधी | |
|--------|------------------|---------------------------------|--------------|----------------|
| | | | दिनांक | रक्कम |
| १ | केंद्र शासन | ११,४२९.९९ | नोव्हें.२०१० | २८५६.०० |
| | | | जुलै २०१५ | ११७०.०८ |
| २ | राज्य शासन | ७,८५६.१२ | एप्रिल २०११ | १९६४.०३ |
| | | | जुलै २०१५ | ८०४.०३ |
| ३ | मिरा भाईंदर मनपा | ७,२३४.५६ | - | - |
| ४ | लाभार्थी | १,४३४.७५ | - | - |
| | एकूण | २७,९५५.४२ | | ६७९४.१४ |

सदर योजनेकरीता केंद्र व राज्य शासनाकडून रु.६७.९४ कोटी एवढा निधी महानगरपालिकेस प्राप्त झालेला आहे. आजपावेतो रक्कम रु.७२.०८ कोटी एवढा खर्च महानगरपालिकेमार्फत पुढील प्रमाणे खर्च करण्यात आलेला आहे.

प्राप्त अनुदान व झालेला खर्च

| अ.क्र. | केंद्रशासन व राज्य शासन यांच्याकडून आलेला निधी | इमारत क्र.०१ चे काम पूर्ण व त्यावरील झालेला खर्च | इमारत क्र.०१ सोडून प्रकल्पावरील झालेला खर्च | एकूण खर्च |
|--------|--|--|---|----------------|
| १ | रु. 67.94 कोटी | रु.8.34 कोटी | रु.63.74 कोटी | रु. ७२.०८ कोटी |

अंमलबजावणी यंत्रणा.

१) महानगरपालिका

सदर प्रकल्पासाठी महाराष्ट्र शासन, केंद्र शासन यांच्याशी समन्वय साधून प्रकल्प व्यवस्थापक सल्लागार, प्रकल्प व्यवस्थापन सल्लागार (पी.एम.सी) व पॅकेजनिहाय ठेकेदार यांच्याकडून सदर प्रकल्पातील काम करून घेणे, पाठपुरावा करणे व शासनास वेळोवेळी अहवाल पाठविणे.

२) प्रकल्प व्यवस्थापक सल्लागार

सदर प्रकल्पासाठी मे. पुनीत आर्किटेक्ट यांची सल्लागार म्हणून नेमणूक करण्यात आलेली असून त्यांची खालीलप्रमाणे जबाबदारी आहे.

अ) सविस्तर प्रकल्प अहवाल, अंदाजपत्रक तयार करणे, राज्य व केंद्र शासनाची मान्यता घेणे.

ब) सविस्तर निविदा फॉर्म, कागदपत्र तयार करणे, सुपरव्हिजन करणे.

३) प्रकल्प व्यवस्थापन सल्लागार (पी.एम.सी)

सदर प्रकल्पाच्या तांत्रिक बाबी तपासणीसाठी प्रकल्प व्यवस्थापन सल्लागार म्हणून मे. टेक्नो कन्सल्टंट, नवी-मुंबई यांची विहित कार्यवाही करून मा. स्थायी समिती सभा ठराव क्र.१३९, दि.२५/०२/२०१० च्या मंजूरीने दि. २६/०३/२०१० रोजीच्या कार्यादेशान्वये नेमणुक करण्यात आली आहे. त्यांची खालीलप्रमाणे जबाबदारी आहे.

अ) प्रकल्प व्यवस्थापन सल्लागार

ब) प्रकल्प अंतर्गत तांत्रिक सल्ला देणे, कागदपत्र छाणणी, प्रकल्पांतर्गत तांत्रिक व इतर व्यवस्थापन करणे, सुपरव्हिजन करणे.

४) प्रकल्पातील कंत्राटदार

सदर कामाच्या निविदा मागवून मा. स्थायी समिती सभा दि.०५/०८/२०१० ठराव क्र. ३६ अन्वये कंत्राटदार यांना खालील प्रमाणे कार्यादेश देण्यात आले. प्रकल्प जलद गतीने पूर्ण करण्याच्या उद्दीष्टाने प्रकल्पाचे काम चार पॅकेजमध्ये विभागून खालीलप्रमाणे देण्यात आले आहे.

(रुपये कोटीत)

| पॅकेज | नेमलेला कंत्राटदार | निविदा किंमत (कोटीत) | सदनिका | कार्यादेश व दिनांक |
|---------------|--|----------------------|--------|--------------------|
| जनता नगर जे १ | मे. शायनो कार्पोरेशन - टोस्कॉनो इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रा.लि. (जे.व्ही) | १०६.७३ | १३३६ | दि.२८/१२/२०१० |
| जनता नगर जे २ | मे. डिव्हीनिटी (जे.व्ही) | ९३.३० | ११५६ | दि.२४/११/२०११ |
| जनता नगर जे ३ | मे.श्रीजी कन्स्ट्रक्शन व बिटकॉन इंडीया इन्फ्रास्ट्रक्चर डेव्हलपर्स प्रा.लि. (जे.व्ही) | ९३.२८ | ११७३ | दि.२७/१२/२०१० |
| काशीचर्च | मे. डी. के. इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रा.लि., सुमेर कार्पोरेशन, एस.व्ही. जिवानी, स्ट्रेक्रिट. लि. (जे.व्ही) | ३७.२४ | ४७१ | दि.२८/१२/२०१० |

इतर विभागाची परवानगी

१) पर्यावरण विभाग

सदर प्रकल्पास पर्यावरणाच्या दृष्टीने पर्यावरण विभागाची आवश्यकता असल्याने सदर विभागाच्या मान्यतेसाठी प्रस्ताव सादर करून दि.२५/०१/२०११ रोजी मान्यता प्राप्त करून घेण्यात आली. सदर मान्यता ५ वर्षासाठी होती. पर्यावरण विभागाची वाढीव मान्यता प्राप्त नसल्याने प्रकल्पाचे काम सुरु ठेवता येणार नाही.

२) राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण

सदर प्रकल्पास दि.२८/०७/२०१० च्या पत्रान्वये राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण परवानगी प्राप्त आहे.

३) जमीन विक्रीची परवानगी

सदर प्रकल्पामध्ये शासनाच्या निकषानुसार महानगरपालिकेस हिश्याची रक्कम रुपये ७२.३४ कोटी उभारावयाची होती. तसेच प्रकल्प वर्धनक्षम (Viable) होण्यासाठी महाराष्ट्र शासन नगरविकास विभाग मंत्रालय, मुंबई यांचे शासन निर्णय क्र.टिपीएस ११०७/अनौ.३६/प्र.क्र.१३५/०८/नवि-५ दि. २४ डिसेंबर २००८ मधील तरतुदीनुसार २.५ चटईक्षेत्र निर्देशांक लागू करून त्यातील २५ % चटईक्षेत्र विक्री घटकासाठी वापरून अतिरिक्त निधीची उभारणी करण्यात येणार होती. त्यानुसार महानगरपालिकेच्या प्रस्तावास मा. मुख्य अभियंता म्हाडा यांनी त्यांचे कार्यालयीन पत्र क्रमांक जा.क्र.२/उमुअ/ जेएनएनयु आरएम/६८९/१० दि.३०/०९/२०१० अन्वये मंजूरी दिलेली असून जमीन विक्रीची परवानगी दिलेली आहे.

शासनाची जबाबदारी

सदर प्रकल्पातील कामाचा पाठपुरावा करणे. स्थानिक स्वराज्य संस्थाना सदर प्रकल्पासाठी निधी उपलब्ध करून देणे. सदर प्रकल्प कालमर्यादीत असल्यामुळे कामासाठी पाठपुरावा करणे. प्रकल्पातील कामाबाबत महाराष्ट्र शासन व केंद्रशासनास अहवाल देणे.

महानगरपालिकेची जबाबदारी

पॅकेजनिहाय ठेकेदार यांच्याकडून सदर प्रकल्पातील इमारतीचे बांधकामाचे काम पूर्ण करून घेणे, पाठपुरावा करणे व शासनास वेळोवेळी अहवाल पाठविणे.

कंत्राटदाराची जबाबदारी

निवीदा मंजुरी नुसार प्रकल्पातील पॅकेजनिहाय इमारतीचे काम पूर्ण करणे, प्रकल्पातील प्रत्यक्ष जागेवरील झोपड्या हटविणे, संक्रमण शिबीराचे बांधकाम करणे, लाभार्थींना संक्रमण शिबीरामध्ये स्थलांतरीत करणे, भाडेत्वावरील लाभार्थींना भाडेचे धनादेश देऊन स्थलांतरीत करणे.

म्हाडाची भूमिका

महाराष्ट्र शासनाने बि.एस.यु.पी प्रकल्पासाठी म्हाडाची नोडल एजन्सी म्हणून नियुक्ती केलेली आहे. सदर प्रकल्पातील कामाचा आढावा घेणे, निधी वितरण करणे व केंद्रशासनास प्रकल्पाच्या कामाचा अहवाल पाठविणे.

शासनाचे मार्गदर्शन

Cost Escalation

(गृहनिर्माण विभागाचे दि.११/०६/२०१५ चे पत्र)

शहरी गरीबांना मुलभूत सुविधा पुरविणे या कार्यक्रमाच्या मार्गदर्शक सुचनानुसार प्रकल्पात अनुज्ञेय नाही. तसेच प्रकल्पाच्या अंमलबजावणीचा व त्यासाठी महानगरपालिकेस कराव्या लागणा-या अतिरीक्त खर्चाची कोणतीही रक्कम बी.एस.यु.पी.कार्यक्रमातून केंद्र व राज्यशासन देऊ शकणार नाही.

प्रकल्पास मुदतवाढ

(गृहनिर्माण विभागाचे दि.१९/११/२०१६ चे पत्र)

केंद्र शासनाच्या सुचनेनुसार बी.एस.यु.पी. प्रकल्प विहित कालावधीत पूर्ण करणे आवश्यक आहे. सबब आपली मुदतवाढीची विनंती अमान्य करण्यात येत असून सदर प्रकल्प वेळेत पूर्ण करण्याची दक्षता घ्यावी.

(गृहनिर्माण विभागाचे दि.१७/११/२०१६ चे पत्र)

प्रकल्पाच्या मुदतवाढीसाठी आपण केलेली विनंती मान्य करता येणार नाही. सबब सदर प्रकल्प वेळेत पूर्ण करण्याची दक्षता घ्यावी.सबब दि. १९/११/२०१६ च्या पत्रान्वये देण्यात आलेले उत्तर अंतिम असून त्यामध्ये निश्चित केलेला प्रकल्प पूर्ण करणे केंद्र शासनाच्या कार्यक्रमानुसार आवश्यक आहे.

सदर प्रकल्पास ३१ मार्च २०१७ पर्यंत केंद्र शासनाने मुदतवाढ दिलेली होती. प्रकल्पातील इमारतीचे काम पाहता इमारतीचे काम पूर्ण करण्यास पुढील २-३ वर्षांचा कालावधी लागणार आहे. परंतु शासनाने प्रकल्पास मुदतवाढ दिलेली नाही. सदर प्रकल्पाबाबत मा. मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र राज्य यानी दि.१४ जुन २०१७ रोजी सदर प्रकल्पाचे काम प्रधानमंत्री आवास योजनेमधून पूर्ण करणेबाबत सुचना दिलेल्या आहेत.

CSMC बैठक

केंद्रीय गृहनिर्माण आणि शहरी दारिद्र्य निर्मुलन मंत्रालयाद्वारे दि. २०/०३/२०१५ रोजीच्या सी.एस.एम.सी.च्या बैठकीमध्ये मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या बी.एस.यु.पी. प्रकल्पाबाबत चर्चा करण्यात आली होती. सदर बैठकीत त्यावेळी सुरु असलेल्या २३५१ घरकुल पूर्ण करणेबाबत निर्णय घेण्यात आला असून योजना बंद झाल्यामुळे निधी मिरा भाईंदर महानगरपालिकेस मिळणार नाही. तसेच उर्वरित १७८५ घरकुलांसाठी महानगरपालिकेने स्वतः च्या निधीतून खर्च करणेबाबत निर्देश दिलेले आहेत. सदर प्रकल्पामध्ये मुळ मंजुरीनुसार G+8 च्या इमारती (४१३६ सदनिका) बांधण्यात येणार होत्या. परंतु प्रकल्प Insitu असल्यामुळे लाभार्थींना स्थलांतरीत करून इमारतीच्या कामास सुरुवात करण्यास विलंब झाला आहे. सदर प्रकल्पाच्या ठिकाणी उंच डोंगर असल्यामुळे सदर डोंगराची खोदाई करण्यास विलंब झाला आहे. सदर प्रकल्प २३५१ सदनिकासाठी सिमीत केल्यामुळे स्थलांतरीत केल्या लाभार्थींना प्राधान्याने सामावून घेण्यासाठी G+16 च्या इमारती बांधण्याचा मा. महासभा दि.१३/०७/२०१५ ठराव क्र.३२ नुसार घेण्यात आलेला आहे. प्रकल्पामध्ये मुळ मंजुरीनुसार G+8 च्या दोन इमारतीचे काम सुरु आहे.उर्वरित इमारती G+16 बाबतचे सुधारीत नकाशांना नगरचना विभागाची मंजुरी प्राप्त आहे.

संक्रमण म्हणजे भाडे व शिफटींग

मा. महासभा, मा. स्थायी समिती सभा तसेच सविस्तर प्रकल्प अहवालामध्ये संक्रमण शिबीराची व्यवस्था केलेल आहे.

- संक्रमणमध्ये भाडेचे लाभार्थी व शिफटींगचे लाभार्थी या दोन्ही चा समावेश आहे. सदर ठरावात २ वर्षांच्या भाडेची तरतुद असली तरी पुढील वाढीव कालावधीसाठी सुध्दा प्रतिपुर्ती करावी लागणार आहे.
- १) मिरा-भाईंदर महानगरपालिका राबवित असलेला बी एस यु पी प्रकल्प हा In situ प्रकारात मोडत असल्याने जोपर्यंत लाभार्थ्यांसाठी तात्पुरत्या निवासाची व्यवस्था होत नाही तोपर्यंत प्रत्यक्ष इमारत बांधणीच्या कामास सुरुवात करता येत नाही. प्रकल्प प्रस्तावात यासाठी लाभार्थ्यांना रु. ३०००/- प्रति माह प्रमाणे दोन वर्षांसाठी घर भाडे देण्याची तरतुद आहे. निविदा बोलावितेवेळी ५०% लाभार्थ्यांसाठी संक्रमण शिबिर व ५०% लाभार्थ्यांसाठी घरभाडे देणे असे प्रस्तावित आहे.
- २) काशीमिरा / मिरा रोड परिसरात एवढ्या मोठ्या संख्येने व तेही ज्यांना मिळणा-या भाड्याच्या रक्कमेत घर मिळणे दुरापस्त वाटत असल्याने संक्रमण शिबिर हाच पर्याय उरत असल्याने १३१७ संक्रमण खोल्या बांधण्यात आलेल्या आहेत.
- ३) आतापर्यंत भाडेतत्वावर व संक्रमण शिबीरात स्थलांतर केलेल्या लाभार्थ्यांच्या २०४२ झोपड्या तोडण्यात आलेल्या आहेत.

प्रकल्पाची किंमत

बी.एस.यु.पी.योजनेमधील इमारत बांधकामास अपेक्षित खर्च **1,81,863 X 27,986.40** चौ.मी.=**508.96** कोटी एवढा खर्च अपेक्षित आहे. बी.एस.यु.पी.प्रकल्पाच्या दरानुसार **24.94** कोटी एवढा खर्च वास्तुविशारद, आर.सी.सी.तंत्र व प्रकल्प व्यवस्थापन सल्लागार या बाबीसाठी होणार असून एकूण प्रकल्पाची किंमत **533.91** कोटी एवढी होत आहे.

| झालेल्या कामाचे मुल्यांकन | आतापर्यंत झालेला खर्च | कंत्राटदारास घावयाची रक्कम |
|---------------------------|-----------------------|----------------------------|
| रु.82.64 कोटी. | 72.08 कोटी | 10.56 कोटी |

मा.विशेष महासभा (दि.१३/०७/२०१५ठराव क्र.३२)

- १) सदर योजना केंद्र शासनाच्या मुळ मंजूरी नुसार ४१३६ सदनिका करीता प्रकल्प राबवून प्रकल्प पूर्ण करण्यात यावा.
- २) बी.एस.यु.पी. प्रकल्प धोरणानुसार बी.एस.यु.पी. योजना वर्धनक्षम करण्याकरीता शासन निर्णयातील तरतूदीनुसार २.५ चटईक्षेत्र निर्देशांक वापरण्याची मुभा मनपास प्रदान करण्यात आलेली आहे.
- २.५ चटईक्षेत्र निर्देशांक लागू केल्यानंतर त्यामधील प्रथमतः १५ % च.क्षे.नि विक्री घटकाकरीता वापरण्याचे अधिकार मनपास असून वाढीव १०% च.क्षे.नि. (विक्री घटकाकरीता कमाल २५ %) घटकाकरीता वापरण्यास मा. उपाध्यक्ष म्हाडा यांच्या परवानगीने मुभा देण्यात आलेली आहे. तथापी सदर प्रकल्प पूर्ण करण्यास २५% व्यतिरीक्त २१% वाणिज्य वापराची परवानगी मिळून एकूण ४६% वाणिज्य वापराची परवानगी शासनाकडून घ्यावी असा ठराव पारीत करण्यात आला आहे.
- ३) संक्रमण शिबीराची व्यवस्था व रेंटल हाऊसींगच्या सदनिकामध्ये लाभार्थींना स्थलांतरीत करण्याची जबाबदारी बाबत खालील प्रमाणे नमुद आहे.
- ५) मुळ निविदेतील अटी शर्तीनुसार सदर लाभार्थींना भाडे देण्याची जबाबदारी संबंधीत ठेकेदाराची आहे.

तथापी सदर प्रकल्पास विलंब झाल्याने २ वर्षापेक्षा वाढीव कालावधीसाठी मनपामार्फत भाडे घावे लागणार आहे. सदर भाडे महानगरपालिकेकडून देण्यास ही सभा मान्यता देत आहे. वरील ठरावानुसार कंत्राटदाराना सुधारीत कार्यादेश देण्यात आलेले होते.

अतिरिक्त वाणिज्य वापरासाठी शासनास प्रस्ताव

वरीलप्रमाणे सदर योजना राबविताना आलेल्या अडचणी, त्यामुळे कामास झालेला विलंब व काम पूर्ण करण्यासाठी लागणारा निधी सदर योजनेस पात्र लाभार्थ्यांच्या झोपड्या तोडून त्यांना स्थलांतर केल्याने त्याचे पुर्नवसन करणे, याबाबत आढावा घेतला असता सदर योजना ही महानगरपालिकेस निधी उपलब्ध करून देऊन पूर्ण करावा लागणार आहे. शासनाकडून सदर योजना २३५९ सदनिकासाठी सिमीत केल्याने शासन अनुदान देखील मंजूरीपेक्षा कमी मिळणार आहे. त्यामुळे मंजुर ४९३६ सदनिका बांधण्याच्या दृष्टीने शासनाकडून विहित मर्यादेपेक्षा जादा चटईक्षेत्र वाणीज्य वापरासाठी मंजूर करून घ्यावा लागेल. सदर योजनेच्या मंजूर नकाशात बदल करून ४९३६ सदनिका बांधण्यासाठी शासन अनुदान वगळता इतर निधी वाणीज्य वापरतुन उभा करावा लागेल. त्यासाठी शासनाकडे अतिरिक्त ५०% वाणिज्य वापरासाठी परवानगी मागितलेली होती सदर प्रस्तावास मान्यता मिळालेली नाही.

विलंबाची कारणे.

- १) सदर प्रकल्प हा सरकारी जागेवर करावयाचा असल्याने जागा मागणीचा प्रस्ताव मा. जिल्हाधिकारी ठाणे यांच्याकडे दि.३१/०८/२००९ रोजी सादर करण्यात आला. सदर जागा ताब्यात मिळविण्यासाठी मा. जिल्हाधिकारी कार्यालय ठाणे, मा. विभागीय आयुक्त कोकण भवन, महसुल विभाग, महाराष्ट्र शासन यांच्याकडे पाठपुरावा व पत्रव्यवहार केल्यानंतर सदर जागेचा आगाऊ ताबा मा. जिल्हाधिकारी ठाणे यांनी महानगरपालिकेस दि.०५/०४/२०११ रोजी दिला व तद्नंतर शासनाची जागा हस्तांतरणास दि.१६/११/२०११ रोजी अंतिम मान्यता प्राप्त झाली.
- २) मिरा-भाईदर महानगरपालिका राबवित असलेला बी एस यु पी प्रकल्प हा In situ प्रकारात मोडत असल्याने जोपर्यंत लाभार्थ्यांसाठी तात्पुरत्या निवासाची व्यवस्था होत नाही तोपर्यंत प्रत्यक्ष इमारत बांधणीच्या कामास सुरवात करता येत नाही. प्रकल्प प्रस्तावात यासाठी लाभार्थ्यांना रु. ३०००/- प्रति माह प्रमाणे दोन वर्षासाठी घरभाडे देण्याची तरतुद आहे. निविदा बोलावितेवेळी ५०% लाभार्थ्यांसाठी संक्रमण शिबिर व ५०% लाभार्थ्यांसाठी घरभाड देणे असे प्रस्तावित होते. सदर तरतुद सविस्तर प्रकल्प अहवाल (DPR) मध्ये करण्यात आलेली आहे.
- ३) सदर प्रकल्पांतर्गत संक्रमण शिबिर ट्रक टर्मिनलच्या आरक्षणावर प्रस्तावित असल्याने सदर आरक्षणाचा काही भाग हा महाराष्ट्र प्रादेशिक नगररचना, अधिनियम १९६६ चे कलम ३७ अन्वये फेरबदल करणे आवश्यक होते. त्या अनुशंगाने मा. महासभा दि. २०/११/२००९ ठराव क्र. ३६ अन्वये मंजूरी घेऊन फेरबदलाचा प्रस्ताव राज्य शासनाकडे पाठविण्यात आला. या बाबत सातत्याने पाठपुरावा केल्यानंतर नगरविकास विभाग अधिसूचना क्रमांक टीपीएस-१२११/२४८/प्र.क्र.२९४/११/ नवि-१२ दि. २७/०३/२०१२ अन्वये १२,२३९ चौ.मीटर क्षेत्रावर संक्रमण शिबिराचे आरक्षण मंजूर करण्यात आले आहे.
- ४) जनतानगर येथील जे-३ व जे-१ पॅकेजमधील झोपड्या हटवुन त्याठिकाणी उंच ३० मी. चा डोंगर खोदाई करणे व सदर माती टाकण्यास महानगरपालिकेकडे जागा उपलब्ध नव्हती. सदर भागातील खाजगी जमीन मालकाच्या परवानगी नुसार माती भराव करण्यात आला. सदर डोंगर खोदाईच्या कामास झालेल्या विलंबामुळे इमारतीचे काम विलंबाने सुरु झालेले आहे.
- ५) जे-३ पॅकेजमधील डोंगरखोदाईमुळे इमारतीच्या बाजुस धोकादायक स्थिती झाल्यामुळे भविष्यात कुठलीही दुर्घटना घडु नये या अनुअंशगाने मा. आयुक्त यांच्या मंजूरीने सदर भागात Reatining wall चे काम करण्यात आले आहे.
- ६) झोपडपट्टी धारकांचा सर्वेक्षणास विरोध असल्याने सर्वेक्षण वहीत वेळेत पूर्ण न होता त्यास अधिक कालावधी लागणे.
- ७) झोपडपट्टीच्या जवळच संक्रमण शिबीर पाहीजे, अतिरिक्त संक्रमण शिबीराची मागणी करणे. संक्रमण शिबीराची खोली अपूरी आहे म्हणून शिबीरात जाण्यास विरोध करणे.
- ८) झोपडी खाली करण्याच्या पूर्वी सदनिकाचे लॉटरी व रजिस्ट्रेशन करावे असा आग्रह असणे. रजिस्ट्रेशन झालेनंतरच झोपडी खाली करणे.

- ९) पात्र झोपडी धारक स्वतःच्या पात्र झोपडीत पार्टीशन, नवीन दरवाजा बसविणे, नवीन बांधकाम करणे व त्यास नवीन नंबर देणे बाबत मागणी करणे व पात्र झोपडी खाली करण्यास नकार देणे

१) भाडेचे २ वर्ष पुर्ण

प्रकल्पामध्ये लाभार्थीना भाडेचा २ वर्षाचा ३०००/- प्रमाणे रु.७२०००/- देण्याची तरतुद आहे. सदर भाडेचे २ वर्ष पुर्ण झालेले ओहत व सदर लाभार्थीना पुढील कालावधीसाठी भाडेचे धनादेश देण्याची गरज आहे. भाडेत्वावर गेलेल्या 1044 मधुन लोढा अक्वा इमारतीमध्ये 569 लाभार्थीना स्थलांतरीत केलेले आहे. व जे-3 पॅकेजमधील इमारत क्र.1 मध्ये 75 लाभार्थीना सदनिकाचा ताबा देण्यात आलेला आहे. उर्वरित 400 लाभार्थीना व झोपडी तोडलेले पण भाडे किंवा शिफ्टींग न मिळालेले 193 असे मिळून 593 लाभार्थीना भाडे देणे बाकी आहे.

प्रकल्पातील भाडेच्या लाभार्थींचा तपशिल

| अ.क्र. | पॅकेज | लाभार्थी संख्या | एकुण रक्कम | प्रदान करण्यात आलेली भाडेची रक्कम | उर्वरित प्रदान करावयाची भाडेची रक्कम |
|--------|----------------|-----------------|---------------|-----------------------------------|--------------------------------------|
| १ | जे-१ | १५५ | ९०,८१,०००/- | - | ९०,८१,०००/- |
| २ | जे-२ | १२६ | ७५,१२,०००/- | - | ७५,१२,०००/- |
| ३ | जे-३ | २९२ | १,७९,२२,०००/- | ९६,७८,०००/- | ८२,४४,०००/- |
| ४ | काशिचर्च पॅकेज | २० | १५,४२,०००/- | - | १५,४२,०००/- |
| | एकुण | ५९३ | ३,६०,५७,०००/- | ९६,७८,०००/- | २,६३,७९,०००/- |

भाडेच्या लाभार्थींचा तपशील

| अ.क्र. | भाडेचे लाभार्थी | संक्रमण शिबीर लाभार्थी | इमारत क्र.01 मधील ताबा दिलेले भाडेचे लाभार्थी | एकुण स्थलांतरीत लाभार्थी | उर्वरित 2 वर्ष पुर्ण झालेले भाडेचे लाभार्थी व भाडे किंवा शिफ्टींग न मिळालेले लाभार्थी | जुन 2017 पर्यंत होणारी भाड्याची रक्कम (भाडेचे - 400 व भाडे किंवा शिफ्टींग न मिळालेले 193 लाभार्थी) असे एकुण 593 |
|--------|-----------------|------------------------|---|--------------------------|---|---|
| 1 | 1044 | 1087 | 75 | 2042 | 593 | 2,63,79,000/- |

रेंटल हाऊसींग स्कीम

सदर प्रकल्पअंतर्गत लाभार्थीना संक्रमण शिबीर व भाडेत्वावर स्थलांतरीत करुन इमारतीच्या कामास सुरुवात करण्यात आली आहे. प्रकल्पास विविध कारणामुळे विलंब झालेला आहे. सदर झालेल्या विलंबामुळे भाडे तत्वावरील लाभार्थीचे भाडेचे २ वर्ष पुर्ण झालेले असुन पुढील भाडेसाठी लाभार्थी पाठपुरावा करत आहेत. प्रकल्पाचा कालावधी पुर्ण झालेला असुन यापुढे शासनाकडुन निधी मिळणार नाही. सदर प्रकल्पातील भाडेत्वावरील लाभार्थीमधील ५६९ लाभार्थीना एम.एम.आर.डी.ए कडुन प्राप्त रेंटल हाऊसींगच्या सदनिकामध्ये तात्पुरत्या स्वरुपात स्थलांतरीत केलेले आहे. रेंटल हाऊसींग मधील सदनिका शासनाने परवडणारी घरे या योजनेमध्ये परावर्तीत केलेले आहे. एम.एम.आर.डी.ए. कडुन रेंटल हाऊसींग स्कीम मधुन प्राप्त होणा-या सदनिकामध्ये भाडेत्वावरील लाभार्थीना स्थलांतरीत करणेबाबत मा. महासभा दि. १३/०७/२०१५ मध्ये ठराव पारित केलेला आहे. भाडेत्वावरील व झोपड्या तोडलेल्या ५९३ लाभार्थीना स्थलांतर करण्यासाठी रेंटल हाऊसींग च्या इमारतीची गरज आहे.सद्यस्थितीत डेल्टा गार्डन, मौजे महाजनवाडी येथील इमारती अंतीम टप्प्यात आहेत. सदर इमारतीचा ताबा लवकरात लवकर घेणेबाबत नगररचना विभागास अवगत करण्यात येत आहे.

भाडेचे रक्कम RTGS द्वारे

मा.महासभा दि.२०/११/२००९ ठराव क्र.३६ व मा.स्थायी समिती सभा दि.०५/०८/२०१० ठराव क्र.३१ अन्वये सदर लाभार्थीना संक्रमण म्हणजे संक्रमण शिबीर खोली / भाडे द्यावयाची तरतुद असल्याने सदर लाभार्थीच्या खातेवर महानगरपालिकेमार्फत RTGS द्वारे भाड्याची रक्कम जमा करण्यात आली आहे. सदर लाभार्थीची झोपडी तोडण्यात आली असून सदर लाभार्थी भाडेच्या सदनिका मध्ये राहत आहेत. त्यामुळे सदर लाभार्थी संक्रमण शिबीर खोली अथवा भाड्याची मागणी करत आहेत. सद्यास्थितीत महानगरपालिकेकडे संक्रमण शिबीर खोल्या नसल्याने सदर लाभार्थीना भाडे देणे गरजेचे होते. त्यामुळे भाडेचे २ वर्ष पुर्ण होणा-या १९५ लाभार्थीच्या बँक खातेवर RTGS द्वारे मार्च २०१६ पर्यंत भाडेची रक्कम जमा करण्यात आली आहे. उर्वरित ५९३ मधील १८४ लाभार्थीचे जुन २०१७ पर्यंतच्या भाडेची रक्कम मे. श्रीजी बिटकॉन (जेव्ही) यांच्या चालु देयकातून कपात करून लाभार्थीच्या बँक खातेवर RTGS द्वारे जमा करण्यात आली आहे.

योजनेची सद्यस्थिती :-

| अ.क्र. | पॅकेज | कामाचा तपशिल | इमारत बांधकामासाठी ठेकेदारास प्रदान करण्यात आलेले देयक | सद्यास्थितीत ठेकेदारास उर्वरित बाकी प्रदान करावयाचे देयक | पॅकेज मधील 1918 सदनिकाचे काम पुर्ण करण्यासाठी लागणारा खर्च |
|--------|-------|--|--|--|--|
| १ | जे-१ | १) इमारत क्र. ०६, २९४ सदनिका , सदर इमारतीचे RCC चे काम १६ व्या मजल्या पर्यंत पुर्ण झाले आहे. १५ व्या मजल्यापर्यंत Brick Work चे काम पुर्ण झाले आहे . सद्यस्थितीत काम बंद आहे. २) इमारत क्र. ०७, ३६२ सदनिका, सदर इमारतीचे खोदकाम ६०% पुर्ण झाले आहे. | रु.14,27,62,223/- | रु.8,25,15,029/- | रु.99,21,54,139/- |
| २ | जे-३ | १) इमारत क्र. ०१, (१७९ सदनिका) ची सर्व कामे पुर्ण झाली असून १७९ पात्र लाभार्थीना सदनिकाचा ताबा देण्यात आला आहे. २) इमारत क्र. ०२, २९९ सदनिका, सदर इमारतीचे ३ र्या मजल्यापर्यंतचे RCC चे काम पुर्ण झाले आहे. सद्यस्थितीत काम बंद आहे. ३) इमारत क्र. ०३, २९९ सदनिका , सदर इमारतीचे RCC चे काम ८ व्या मजल्या पर्यंत पुर्ण झाले आहे. ५ व्या मजल्यापर्यंत Brick Work चे काम पुर्ण झाले आहे . सद्यस्थितीत काम बंद आहे. ४) इमारत क्र. ०४, २९९ सदनिका , सदर इमारतीचे RCC चे काम १ ला मजल्या पर्यंत RCC चे | रु.52,85,42,379/- | रु.2,20,96,945/- | रु.103,60,66,415/- |

| | | | | | |
|-------------|----------------|---|--------------------------|--------------------------|---------------------------|
| | | काम पुर्ण झाले आहे. सद्यस्थितीत काम बंद आहे. ५) इमारत क्र. ०५, २९९ सदनिका, सदर इमारतीचे खोदकाम ५०% पुर्ण झाले आहे. फुटींग स्टाफ कॉलम आणि प्लॅथ चे काम पुर्ण झाले आहे. सद्यस्थितीत काम बंद आहे. | | | |
| ४ | काशिचर्च पॅकेज | काशिचर्च इमारत क्र.०४, १२९ सदनिका,सदर इमारतीचे ६०% RCC चे काम ८ व्या मजल्यापर्यंत पुर्ण झाले आहे. सदर इमारतीचे Brick work चे काम ७ व्या मजल्यापर्यंत पुर्ण झाले आहे. सद्यस्थितीत काम बंद आहे. | रु.४,९५,२०,०६८/- | रु.९,९३,६४१/- | रु.९,९४,९२,५५४/- |
| एकुण | | | रु.७२,०८,२४,६७१/- | रु.१०,५६,०५,६१५/- | रु.२१२,७७,१३,१०८/- |

Reatining wall

जनतानगर येथील जे-३ पॅकेज संजय गांधी राष्ट्रीय उद्याना लगत असून सदर भागात २५ मी. उंचीचा डोंगर होता. इमारतीच्या बांधकामासाठी सदर डोंगर खोदाई करण्यात आली. सदर डोंगर खोदाईमुळे सदर भागात धोकादायक स्थिती निर्माण झाली होती, या स्थितीत डोंगराचा भाग कोसळण्याची शक्यता होती त्यामुळे इमारतीच्या बांधकामाचे काम करणे अत्यंत धोकादायक होते, त्यामुळे सदर ठिकाणी Reatining wall बांधणे गरजेचे होते. त्यानुसार तत्कालीन मा. आयुक्त यांच्या मंजूरीने तांत्रिक सल्लागाराच्या अभिप्रायानुसार सदर Reatining wall चे काम पुर्ण करण्यात आले आहे. सदर Reatining wall च्या कामामुळे इमारत क्र. १ चे काम पुर्ण होऊन लाभार्थीना सदर इमारती मधील सदनिकाचा ताबा देण्यात आला आहे. **सदर** Reatining wall बांधण्याच्या खर्चास ही सभा मान्यता देत आहे.

विधी विभागाचा अभिप्राय

As Per clause 21 (a)(Page No.60) of chapter - V Conditions of Contract tender document Engineer - in - Charge shall be entitle (Other than default on the part of Bidder for which the corporation is entitled to rescind the contract) to stop the whole or part of work by giving a notice in writing to bidder of such desire and upon the receipt of such notice the bidder shall forthwith stop the work wholly or in part if required after having due Regards to appropriate stage at which the work should be stopped the Bidder Shall have no claim to any payment or compensation what so-ever by Reason of in pursuance of any notice as aforesaid on account of any stoppage or curtailment except to the extent specified hereunder sub clause (b) & (C)

As Per the aforesaid clause the contractor shall not be entitle to claim any payment or compensations from corporation for such stoppage.

In case the Contractor raised any Dispute against such notice stoppage he has to refer dispute to Arbitration as per clause 27 (disputes & Arbitration) (page No.44) under Indian Arbitration Act.

Since the said BSUP Project has already been delayed and in case the present Contractor on receiving stoppage notice from the corporation raises any disputes which may cause further delay the corporation can allow the present Contractor (Who are not defaulter & willing to do work as per new policy) to participate in the new contract.

So it is advisable to give prior notice to the Contractors as per the provision of clause 21 (a) of tender document.

विधी अधिकारी यांनी वरिलप्रमाणे अभिप्राय दिल्यानुसार विषयांकित प्रकल्प प्रधान मंत्री आवास योजनेतुन प्रस्तावित करणेबाबतच्या प्रस्तावास मान्यता मिळल्यानंतर निविदेतील तरतुदीनुसार संबंधीत ठेकेदार यांना नोटीस देऊन पुढील कार्यवाही प्रस्तावित करण्यात येईल. विस्थापीत झालेले व विस्थापीत न झालेले बी.एस.यु.पी.प्रकल्पाचे लाभार्थीबाबत प्रधानमंत्री आवास योजनेमध्ये प्रस्ताव सादर करणे. जनतानगर व काशिचर्च येथील झोपडी तोडुन स्थलांतर केलेल्या लाभार्थींना व सद्यस्थितीत जागेवर असलेल्या लाभार्थींना प्रधानमंत्री आवास योजनेत सामावुन घेणेसाठी मा. महासभेच्या मंजूरीनंतर मे. पुनित आर्किटेक्ट या सल्लागाराकडून मंजुर दराने सविस्तर प्रकल्प अहवाल शासनास सादर करण्यात येईल.

प्रधानमंत्री आवास योजना

सदर प्रकल्प वेळेत पूर्ण करता यावा यासाठी मा.महासभेच्या मान्यतेने कंत्राटदाराना सुधारीत दर मंजुर करुन देण्यात आले तथापी शासनाकडून ५०% वाणिज्य वापर परवानगी न आल्याने व योजनेस मुदतवाढ न दिल्याने, महानगरपालिकेची स्वतःचा निधी टाकून योजना पूर्ण करण्याची क्षमता नसल्याने सदर सुधारीत दरानुसार प्रकल्प पूर्ण होणार नाही.

मा.मुख्यमंत्री यांच्याकडे दि.१४ जुन २०१७ रोजी झालेल्या बैठकीत मा.मुख्यमंत्री यांनी सदर योजना प्रधानमंत्री आवास योजनेतुन पूर्ण करावी असे निर्देश दिले. त्या अनुशंगाने या विभागामार्फत बी.एस.यु.पी.योजनेतर्गत प्रत्यक्ष झालेले काम, कामावर झालेला खर्च, बी.एस.यु.पी.योजनेत शासनाकडून प्राप्त झालेले अनुदान (एक इमारतीचा हिस्सा वगळून) शासनास परत द्यावे लागणार असल्याने, तसेच महानगरपालिकेस भविष्यात स्वतःच्या निधीतुन काही ही खर्च येऊ नये यासाठी प्रत्यक्षात प्रधानमंत्री आवास योजनेतुन काम पूर्ण करण्यासाठी लागणारा चटई क्षेत्र याची माहिती व अभ्यास करुन शासनाकडे प्रस्ताव पाठवून मंजुर झाल्यानंतर उर्वरित सर्व कामासाठी नव्याने निविदा प्रसिध्दी करावी लागेल. तत्पुर्वी बी.एस.यु.पी. योजनेतर्गत सुरु असलेली कामे व कंत्राटे रद्द करावी लागतील. बी.एस.यु.पी. योजना बंद झाल्याने व शासनाकडून प्रकल्पात कोणतही मुदतवाढ, अनुदान, Escalation इ. देण्याबाबत असमर्थता दर्शविल्याने सदर प्रकल्प प्रधानमंत्री आवास योजनेतुन करावा लागणार आहे २.५० चटई क्षेत्र फक्त बी.एस.यु.पी.योजने पुरतीच मर्यादीत होते, तथापी प्रधानमंत्री आवास योजनेतुन प्रकल्प प्रस्तावित केल्यास २.५ ते ४ चटई क्षेत्र पर्यंत परवानगी मिळू शकेल.

शासन निर्णय क्र.प्रआयो.2017/प्र.क्र.4/गृहनिधो-2 दि.14 मार्च 2017 गृहनिर्माण विभाग यांच्या मार्गदर्शन सुचनानुसार विविध अमंलबजावणी यंत्रणानी तयार केलेले प्रस्तावाच्या अनुषंगाने जादा FSI देणे जमिनीचे क्षेत्र व उपलब्ध ते नुसार आरक्षणाीत बदल करणे स्थानिक स्वराज्य संस्थेकडे असलेली वित्तीय तरतुद व नविन तंत्रज्ञान आत्मसात करणे इ . साठी व प्राप्त प्रस्ताव छाननी करण्याकरीता उपसमिती यांचेकडे सविस्तर प्रकल्प अहवाल सादर करुन मान्यता घेणे शक्य आहे. प्रधानमंत्री आवास योजनेतर्गत सदर प्रकल्पासाठी चटई क्षेत्र निर्देशक जास्तीत जास्त 4.00 FSI लागणार आहे. सदर वाढीव FSI साठी महाराष्ट्र शासनतर्गत Maharashtra State New Housing Policy & Action Plan, 2015 मध्ये प्रकरण क्र. 3, 3.5 (ii) यानुसार आपण शासनाकडे 4.00 पर्यंत FSI ची मागणी करुन शकतो. व शासन वरील नियमानुसार आपणांस वाढीव FSI ची मान्यता देऊ शकते.

अनुदान तपशिल

प्रधानमंत्री आवास योजनेतर्गत राज्य शासन व केंद्र शासन यांच्याकडून अपेक्षित अनुदान **3957 x 200000 =79.14 cr.** एवढे अनुदान अपेक्षित आहे. सदर योजना राबविताना बि.एस.यु.पी.प्रकल्पातील प्राप्त अनुदान न परत केल्यास एकुण **रु.124.807** कोटी एवढ्या निधीची आवश्यकता असणार आहे.

लाभार्थी व बांधकाम क्षेत्रफळ

- बी.एस.यु.पी.योजनेतर्गत जनतानगर व काशिचर्च येथील एकुण पात्र लाभार्थींची संख्या **4136** एवढी आहे.
- सदर योजनेतुन प्रत्यक्ष इमारत क्र.01 मध्ये **179** सदनिका तयार करून लाभार्थ्यांना ताबा देण्यात आलेला आहे.
- सद्यस्थितीत एकुण **3957** लाभार्थ्यांना घर देणे बाकी आहे. प्रकल्पातील उर्वरित लाभार्थींसाठी स्वतंत्र योजना करावी लागेल, सदर योजना पुर्ण करण्यासाठी प्रधानमंत्री आवास योजनेत प्रस्तावित करावी लागेल.
- सदर योजनेमध्ये एकुण बांधकाम क्षेत्र **1,81,863 Sq.mt** एवढे आहे.

प्रधानमंत्री आवास योजनेमध्ये होणारे बांधकाम

बी.एस.यु.पी प्रकल्पातील सद्यस्थितीत झालेले बांधकाम सोडून उर्वरित इमारतीचे काम पुर्ण करण्यासाठी बांधकामाबाबत मा. महासभेच्या मंजूरीनंतर मे. पुनित आर्कीटेक्ट, प्रकल्प व्यवस्थापक यांचेकडून सविस्तर प्रकल्प अहवाल सादर करण्यात येईल.

पंतप्रधान आवास योजना राबविण्याचा तपशील

सदर योजना पंतप्रधान आवास योजनेतर्गत राबविल्यास एकुण **4.00** चटई क्षेत्र निर्देशांक वापरून जनतानगर व काशिचर्च येथील जागेवर **2,64,686.08** चौ.मी एवढे चटई क्षेत्र मंजूर होणे शासनाकडून अपेक्षित आहे. बी.एस.यु.पी योजनेतर्गत **4136** घरासाठी **1,42,071.33** चौ.मी. एवढा चटई क्षेत्र लागणार असून उर्वरित **1,22,614.75** चौ.मी. एवढे चटई क्षेत्र विक्रीस उपलब्ध होऊ शकते. सदर उर्वरित **1,22,614.75** चौ.मी.चटई क्षेत्र सदर जागेच्या चालू वर्षातील सरासरी रेडी रेक्नर दरानुसार **रु.26,910.00** चौ.मी. असे धरल्यास महानगरपालिकेस एकुण **329.96** कोटी एवढे उत्पन्न मिळू शकते. शासनाकडील प्रधानमंत्री आवास योजनेतर्गत येणारे **रु.79.14** कोटी अनुदान असे एकुण **409.10** कोटी प्रकल्पासाठी निधी उभा करता येऊ शकतो. महानगरपालिकेस स्वतः चा **रु.124.807** कोटी एवढा निधी उपलब्ध करावा लागेल. सदर योजना पुर्ण करण्यासाठी जागेची विक्री झाल्यानंतर **36** महिन्यांचा कालावधी अपेक्षित आहे.

केंद्र शासनाने **4136** सदनिकांचा प्रकल्प **2351** सदनिकासाठी सिमित केलेला आहे. सदर **2351** सदनिकासाठीचे इमारतीच्या बांधकामाचे काम विविध टप्प्यावर सुरु असून सदर प्रकल्पातर्गत पॅकेज निहाय इमारतीच्या बांधकामावर व डोंगर खोदकाम इ. कामासाठी प्राप्त निधी खर्च झालेला असून तो संबंधित ठेकेदारांना वितरीत केला आहे. सद्यस्थितीत इमारतीचे काम वेगवेगळ्या टप्प्यावर असून यांची माहिती मुद्दा क्र.03 दर्शविण्यात आलेली आहे. सदर निधी खर्च झालेला असून शासनास अनुदान परत करणे शक्य नसल्याबाबत शासनास कळवावे लागणार आहे. वरील नमुद रुपये **59.60** कोटी इतका निधी **BSUP** प्रकल्पावरच खर्च झाला असून तो शासनास परत करणे शक्य नाही.

सदर प्रकल्पातर्गत सुरु अस लेल्या जे - 1 पॅकेजमधील **294** सदनिकांची इमारत , जे - 3 पॅकेजमधील इमारत क्र.02 मधील **299** सदनिका, इमारत क्र.03 मधील **299** सदनिका, इमारत क्र.04 मधील **299** सदनिका व इमारत क्र .05 मधील **299** सदनिका तसेच काशिचर्च पॅकेज मधील इमारत क्र.04 मधील **129** सदनिका अशा मिळुन **1619** सदनिकांची कामे संबंधित कंत्राटदाराकडून महानगरपालिकेच्या स्वनिधी अथवा कर्ज निधितुनच पुर्ण करून घेण्यात यावीत . अथवा सदर इमारतीच्या कामासाठी सदर इमारतीच्या एकुण क्षेत्राच्या **25%** क्षेत्र वाणिज्य वापरासाठी अनुज्ञेय असल्याने सदर जागा विकुन सदर कामांना निधी उपलब्ध करून देण्यात यावा.

बी.एस.यू.पी. प्रकल्पातील उर्वरित सदनिका ह्या प्रधानमंत्री आवास योजनेतुन पुर्ण करण्यासाठी सल्लागाराकडून सविस्तर प्रकल्प अहवाल तयार करुन पुढील मान्यतेसाठी शासनास सादर करावा . व शासनाच्या मंजूरी नंतर आवश्यक सर्व प्रक्रिया पार पाडून पुढील कालावधीत सदर योजना पुर्ण करण्यास ही सभा प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देऊन प्रशासकीय कार्यवाहीचे सर्व अधिकार मा . आयुक्त यांना देत आहे.

मिरादेवी यादव :-

माझे अनुमोदन आहे.

अनिल सावंत :-

महापौर मॅडम हा गोषवारा आलेला आहे. प्रशासनाचा त्याच्यामध्ये विधी विभागाचा अभिप्राय आहे संपूर्ण गोषवारा मराठीमध्ये आहे आणि विधी विभागाचा अभिप्राय इंग्रजीमध्ये कशाला. काही स्पेशल आहे का विधी विभाग आपल्या पालिकेचा नाही आहे?

मा. महापौर :-

तसे काही नाही.

अनिल सावंत :-

ते इंग्रजीमध्ये कशाला दिले महापौर मॅडम आयुक्त निवेदन देतील त्यावेळी हे काही मुद्दे आहेत त्याच्यासाठी त्यामध्ये अंतर्भाव करतील अशी अपेक्षा करतो. बी.एस.यू.पी. आणि जे.एन.एन.यू.आर.एम. अतिशय चांगल्या योजना यु.पी.ए. सरकारच्या काळात झाल्या की शहरी भागाला त्याचा फायदा झाला २००८ साली मला वाटत हा ठराव झाला आणि साधारण मला वाटतं ७ वर्षांमध्ये ही योजना पूर्ण होणार होती. कार्यादेश दिले गेले टेक्नीकल पर्सन टेक्नीकल टिम अपॉईंट केली गेली. त्यासाठी जवळ-जवळ ६० ते ७० करोड रुपये पालिकेचे खर्च झाले. फी किती दिली ३ ते ४ टक्के त्याला तो जो अॅडव्हाइजर होता. लाईसेन्सीक ऑथोरिटी त्याला दिले गेले. कन्सलटन्ट त्यानंतर किती इमारती पूर्ण झाल्या अशी एक चांगली योजना त्यावेळी कार्यान्वीत व्हावी. यासाठी हा ठराव पालिकेतर्फे सुध्दा केला गेला होता. ५० टक्के अनुदान केंद्र आणि राज्यशासनाचे मिळणार होते. पण ही योजना काही पूर्ण होऊ शकली नाही. आज अक्षरशः त्या योजनेचे साहेब धिंडवळे निघत आहेत. लोकांना बेघर केलेले आहे. लोकांना घर नाही ट्रान्झिक्ट केअरची परिस्थिती लाईन वाईट आहे आणि ही योजना पूर्ण होणार की नाही आज बी.एस.यू.पी. योजना आपण पंतप्रधान आवास योजना म्हणून करतो. २०१४ ह्या इंडियन गर्व्हमेंटने आल्यानंतर त्यांनी त्या योजनेचे नाव बदलले उद्या २०१९ मध्ये दुसरे गर्व्हमेंट आले की आणखी काहीतरी नाव बदलेल मग ह्या योजनेचे काय होणार आहे. त्यामुळे पालिकेने मनावर घेऊन फक्त केंद्र आणि राज्य शासनाच्या निर्णयावर अवलंबून न राहता ही योजना आपल्याला शहरासाठी कशी करता येईल. त्यादृष्टीने विचार करावा आणि त्याचे अंतर्भाव आपल्या निवेदनात व्हावे अशी मी विनंती करतो.

जुबेर इनामदार :-

साहेब योजना पूर्ण झाली पाहिजे. ह्या मतांशी सर्वच लोकप्रतिनिधी आहेत त्या गोरगरिबांना साहेब आम्ही फक्त आशा देऊ शकलो आणि ७० लोकांना आम्ही फक्त स्थलांतरीत करू शकलो. साहेब हा विषय पूर्ण वाचला किंवा याच्या आधी आमच्याकडे विषय आलेले आहेत. बी.एस.यू.पी. चे आपल्याला वाढीव चटई क्षेत्र करून घेतले पाहिजे. वाढीव चटई क्षेत्राला आपण मार्केटमध्ये विकू. बाजारामध्ये विकू. त्याच्यातुन मिळालेले उत्पन्नामध्ये बी.एस.यू.पी. योजना पूर्ण करू. आता पंतप्रधान आवास योजनेमध्ये आपण २.५ च्या ऐवजी ४ वन इज टू फोर याची संकल्पना करतो की अशाप्रकारे आपल्याला मिळालेल्या उत्पन्नामधून प्रकल्प पुरा करू. आयुक्त महोदय साहेब याच्यावर लक्ष वेधू इच्छितो पूर्ण योजना तुम्ही बघितली तर त्याला मोठे कारणभूत हा विषय आहे ते सल्लागार आहेत एक नंबरचे चोर ह्या सल्लागारांमुळे वाट लागली. ह्या पूर्ण योजनेची साहेब डी.पी.आर तयार कोणी केला. सल्लागाराने म्हणजे त्याची तांत्रिक बाजू कोणी तपासायची सल्लागाराने त्याचे पैसे आपण त्यांना देणार होतो. मी दिले शासनाच्या माध्यमातून झाले ते ही दिले. ती भिंत उभी करावी लागेल किंवा ती जमीन बरोबर नाही किंवा तो डोंगर फोडावा लागणार आहे. हे सगळ निवोजन त्या सल्लागाराने आधी करायला पाहिजे होते. त्याला अडचण कशी होते पालिका त्या सल्लागरांच्या विश्वासावर बसून आणि अशा योजना हाती घेतो. आणि ते आपले सल्लागार पैसे घेऊन बाजूला होतात आणि शेवटी परिस्थिती अशी होते त्या योजना पूर्ण होत नाही. म्हणून साहेब पुढची योजना करताना पंतप्रधान आवास योजना सुध्दा करताना जो काही सल्लागार ठेवा. त्याला सांगा तुझी योजना पूर्ण झाली तर तुला पैसे मिळतील नाही तर तेवढ्या पैशाची त्याच्याकडून बँक गॅरंटी घेऊन ठेवा साहेब.

नाही तर ही योजना तुमची पूर्ण होत नाही. ह्या सल्लागाराला पोसायचे पालिकेने बंद करावे आणि खरोखर त्या दिशेने काम कराल अशी आमची तुम्हाला विनंती आहे.

मा. आयुक्त :-

मा. महापौर महोदय सन्मा. सदस्यांनी ह्या ठरावाला दोन्ही सदस्यांनी अनुमती दिली. त्यांचा आक्षेप.....

मिरादेवी यादव :-

आयुक्त साहेब यह योजना २००९ से चालू है। २०१२ में घर खाली कराया गया। २०१२ से आज २०१८ चल रहा है आज यह विषय प्रधानमंत्री आवास योजना में जो जा रहा है यह किसकी मजबुरी है। मिरा भाईदर महानगरपालिका प्रशासन का है या पब्लिक का है बार बार विषय पब्लिक के उपर जा रहा है। पब्लिक घर खाली नहीं किया, लेट किया ऐसा कुछ नहीं है। २०१२ से खाली किए है ६ साल का उनको घर बनाने का मौका मिला ६ साल में अभी वह घर बना नहीं पाए। १० बाय १० का जो शिफ्टिंग उनको दिए है। आज वह परिस्थिती आएगी वह भी गुजारा करने के लिए पब्लिक को हमने विश्वास प्रशासन के विश्वास में मैं साथ दी। वह लोगो के घर खाली करवाई आज वह शिफ्टिंग में ६ साल में जो छोटे बच्चे थे वह बड़े बच्चे हुए किसीकी शादी हो गई आज अकेला परिवार उस शिफ्टिंग में नहीं रह सकता है तो डबल परिवार वहाँ पर कहाँ खडा करेगा। यह पहली बात और दुसरी बात हर साल बी.एस.यू.पी. योजना के टेंडर निकालते है शिफ्टिंग के लिए लोडा में कुछ लोगो को भाडे पे दिए है। उनके लिए कोई भी परिस्थिती में उनको जो कमी पडेगा तो हम रिपेअरींग करके देंगे या कुछ भी मगर एक भी बार ऐसा कुछ होने के लायक वहाँ कोई गया नहीं जब १० बार हम पिछे लगकर तो एक बार कही जाकर के जनशौचालय फोटो निकाल के कही एखाद घर को फोटो निकाल के व्हाट्सअप पे देते है। काम पुरा हो गया ऐसा काम पुरा हुआ नहीं है। आज वहाँ पे जाकर देखो की किसीका दरवाजा सही है क्या किसी का प्लायवुड नहीं है। वह सही है क्या आज एक एक जन के घर बड़े बड़े साप जाके घुस रहे है। बाहर से घुस रहे है। दरवाजे से जा रहे है। प्लायवुड के बाहर से जा रहे है। इतनी वहाँ की परिस्थिती खराब है। आज जो सोच रहे है की प्रधानमंत्री आवास योजना में देने के लिए बाकी लोग २४ लोग या २२ लोग जो घर खाली किए है। उनके लिए जो आज भी चाबी रख रहे है की हम बनाके देंगे। यही विचार अगर पहले रखे होते तो आज यह परिस्थिती नहीं आती। आज इतनी परिस्थिती वहाँ की है आज भी मुझे विश्वास नहीं है मेरी परिस्थिती ऐसी है की पब्लिक के तरफ जाते हुए मेरे आख में पानी आता है और इधर हम प्रशासन में आते है हम अधिकारीयो के मुँह देखके पागल बनके घुमना पडता है। आज वह परिस्थिती देखके आज कोई भी इन्सान वहाँ पे जाएगा मगर उनसे खडा नहीं रहा जाएगा। उनकी परिस्थिती देखके फिर भी हम वहाँ दो तीन साल का टाईम दे रहे है। क्या हम यही झेलने के लिए गरीब जनता को खाली कराया था? आज भी हमको टाईम टू टाईम लिखके दिया जाए की हम जो जगह देख रहे है यही जगह पहला बेचने का समज गए की हमारी चिंता नहीं है की हम बी.एस.यू.पी. योजना में हम पुरा कर पायेंगे तो वही जगह बेचके अगर पुरा किया होता तो आज पुरा हो गया होता। साहब आज मुझे लिखित में चाहिए की हम उनको साल भरमें देढ साल में दो साल में हम जो घर बना के दे रहे है पब्लिक को हम कुछ जगह लायक रहे तो अच्छी बात है और नहीं तो कसम से मैं भगवान कसम बोलती हूँ। अगर यह टाईम नहीं मिला तो हम इधर ही पब्लिक के सामने आत्महत्या करुंगी प्रशासन.....

ज्योत्सना हसनाळे :-

महापौरांच्या परवानगीने बोलते साहेब हा विषय हसण्याचा नाही अगदी सिरीयस विषय आहे. मिरादेवी किंवा नगरसेविका म्हणून मी म्हणा ह्या परिस्थितीतून अतिशय भयानक परिस्थितीतून आम्ही जात आहोत. कारण लोकांची घरे खाली करताना २००९ साली आपण हा ठराव आणला ह्या महापालिकेमध्ये ठराव क्र. ३६ त्यानुसार बी.एस.यू.पी. योजना मिरा भाईदर शहरामध्ये ही लागू झाली इथे झोपड्या ह्या खाजगी होत्या म्हणून ही योजना आपण इतर ठिकाणी न लावता फक्त आमची काशीची झोपडपट्टी आणि जनता नगर झोपडपट्टी ह्या झोपडपट्टीमध्ये आपण ही योजना लागू केली. लागू करत असताना प्रभाग क्र. ७५ ची मी नगरसेविका होती. मिरादेवी मॅडम ही ७६ ची नगरसेविका होती त्यावेळेला असे ७५, ७६ असे प्रभाग होते. आम्ही ठराव झाल्यानंतर जेव्हा ही योजना अंमलात आली. त्यावेळेला आम्ही तिथल्या लोकांना सांगितले की तुम्हाला घराच्याऐवजी झोपड्यांच्या ऐवजी तुम्हाला फ्लॅट मिळणार आणि त्या आशेने आणि आमच्या शब्दांवरती विश्वास ठेऊन त्या तेथील नागरीकांनी ती घरे खाली करण्याचे ठरवले त्या झोपडपट्टीमध्ये कुठली सुविधा नव्हती असे नाही. रस्ते, लाईट, पाणी, शौचालय, अंगणवाडी परत आरोग्य केंद्र सर्व सुखसुविधी त्या झोपडपट्टीमध्ये होत्या. जनता नगर झोपडपट्टीमध्ये आपण लाखो करोडोचा खर्च

जनता नगर झोपडपट्टीमध्ये केला होता. परंतु ही बी.एस.यू.पी योजना नागरीकांकरिता होती आणि ती आपण केंद्र शासन, राज्य शासन, महापालिका आणि आमचे गोरगरिब जनता ह्यांचा पैसा जो तिथे लागणार होता त्या निधीतून ही योजना पूर्ण होणार होती. म्हणून आम्ही त्या योजनेला मान्यता दिली आणि ती योजना अंमलात आणावी म्हणून आम्ही त्याला सहकार्य केले परंतु ही योजना जेव्हा चालू झाली ह्या योजनेचे काम जेव्हा चालू झाले जसं आता जुबेर इनामदार साहेबांनी सांगितले की जो सल्लागार नेमला होता त्याने व्यवस्थित सल्ला न दिला की कुठे काय झाले ते आम्हाला ही माहिती नाही. परंतु आज ह्या १२ पानाचा जो इथे अहवाल सादर केलेला आहे महापालिकेच्या ज्याने पण गोषवारा दिला असेल किंवा सादर केला असेल या प्रस्तावामध्ये नागरीकांवरती रोष दाखवलेला आहे. नागरीकांनी घरे खाली केली नाही. नागरीकांनी विलंब लावला. सगळा नागरिकांना दोष लावला परंतु आपल्या स्वतः वरती दोष कोणीच घेतला नाही. अधिकाऱ्यांनी आपल्यावरती दोष घेतला नाही की आपली चूक कुठे झालेली आहे. आपण कुठे कमी पडलेलो आहोत. आपल्याकडे ज्या पध्दतीने ह्या ठिकाणी काम करायला पाहिजे होते कामकाज करायला पाहिजे होते त्या पध्दतीने कामकाज झालेले नाही. बी.एस.यू.पी. चे टेंडर मंजूर झाले पण तुमच्याकडे शिबीर बनवण्याचे नियोजन हे नव्हते. म्हणजे लोकांना जो शिफटींग करायला पाहिजे होते त्यासाठी जे संक्रमण शिबीर पाहिजे होते त्याचे नियोजन काहीच नव्हते. डोंगराळ भाग होता त्या डोंगराळ भागाचा माती रॉयल्टीचा तुमच्याकडे काही पध्दतीने प्रोव्हिजन नव्हते. निघालेली माती कुठे टाकायची त्यासाठी तुमच्याकडे काहीही प्रोव्हिजन नव्हते. फॉरेस्टची परवानगी तुम्ही घेतलेली नव्हती. म्हणजे ह्या काही तांत्रिक बाबी होत्या ह्या कोणी आपल्याला सांगायला तयार नाही. अधिकाऱ्यांनी हे का गोषवा-यामध्ये म्हटलेले नाही की आमच्याकडून पण चुकी झाली. तुम्ही इथे नागरीकांवरती चुकी दाखवली बघा कुठलीही योजना ही महापालिकेचे अधिकारी, नगरसेवक, मान्यवर, पदाधिकारी आणि तेथील जनता मिळून हे करणार होते. म्हणून अशा पध्दतीने केवळ नागरिकांवरती दोष देऊन चालणार नाही. तर ह्या ठिकाणी आपण ही कुठेतरी कमी पडलो हे असे आपण नमुद करायला पाहिजे किंवा मान्य करायला पाहिजे. त्याठिकाणी अनेक अडचणी होत्या. आम्ही स्वतःताही पाहिले बुध्द विहार तिथे होता. काही लोकांनी त्याही गोष्टीला विरोध केला की बुध्दविहार काढायचे नाही. परत तिथे धार्मिक स्थळे होती, मंदिरे होती. त्या काढायच्या टाईमाला सुध्दा अडथळा आला. लोकांनी त्याठिकाणी पण विरोध केला. ह्या सगळ्या बाबी होत्या म्हणून उशीर झाला. सगळ आम्ही मान्य केलेले आहे. परंतु आज १० वर्ष झाली ९ वर्ष झाली जरी ही योजना पूर्ण करू शकलो नाही केंद्र शासनाचे पैसे येऊन परत गेले आणि आता अनुदानही आपल्याला परत द्यावे लागणार आहे. तर अशा वेळेला आज आपल्याला ह्या गोष्टींसाठी विचार करावा लागणार आहे. मी तो उराव वाचला. प्रधानमंत्री आवास योजनेमध्ये आपल्याला द्यायचे आहे पण कुठेतरी माझ्याही मनात शंका आहे की तीन वर्षांचा कालावधी आपण यात म्हटलेला आहे तर तीन वर्षांच्या कालावधीमध्ये ही पंतप्रधान आवास योजना खरच पूर्ण होईल का? हा तर साहेब माझा पहिला प्रश्न आहे. तुमच्याकडून मला उत्तर अपेक्षित आहे दुसरी गोष्ट अशी की तुम्ही तुमच्या गोषवा-यात म्हटलेले आहे की एका बिल्डींगला ८ करोड ३२ लाख रुपये लागतात. एक नंबरची बिल्डींग जी आपण पूर्ण केली त्या ठिकाणी १७९ लोकांना घराचा आपण ताबा दिलेला आहे आणि त्या बिल्डींग पूर्ण करण्याला ८ करोड ३२ लाख रु. जर खर्च झालेला आहे तर आता सद्यस्थितीमध्ये त्या ठिकाणी ६ इमारतीचे काम सुरु आहे. काही पॅडींग आहेत काही अर्धवट आहेत, काही झालेले आहे. थोड थोड बाकी आहे तर अशा बिल्डींग पूर्ण करायला आपल्याला किती पैसे लागतील? हा माझा दुसरा प्रश्न आहे तर अशा इमारती पूर्ण करायला जर आपल्या महापालिकेच्या बजेटमध्ये जी तरतुद केलेली आहे बी.एस.यू.पी. योजना पूर्ण करण्याकरिता १०० करोडची तरतुद केलेली आहे. त्या तरतुदीमधून जर सध्या सुरु असलेल्या बिल्डींगचे काम पूर्ण करून घेतले तर आमच्या लोकांना लवकरात लवकर त्या घरामध्ये रहायला मिळेल आणि जो इतर भाग आहे जो आपण तिथे करणार आहोत त्यांना पंतप्रधान आवास योजनेमध्ये आपण हे घेतले तर जास्तीत जास्त चांगले होईल आणि आमच्यावरती जो नगरसेवक वरती लोकांचा रोष येतो मग मी असु दे, सचिन असु दे किंवा आमची सुजाता पारधी असु देत किंवा मिरादेवी असु देत ह्या ठिकाणी आम्ही प्रतिनिधी म्हणून जातो. लोक आम्हाला तोच एक प्रश्न करत असतात की आम्हाला घरे कधी मिळणार. कारण लोकांचेही बरोबर आहे घराचे स्वप्न बघून कितीतरी लोक त्याठिकाणी मेली आणि कितीतरी प्रश्न त्या ठिकाणी उपस्थित झाले काही लोकांनी गळफास घेतले. काही लोकांनी आत्महत्या केल्या असे प्रकार ह्या योजेच्या अंतर्गत झालेले आहेत. कितीतरी मुले.....

मा. महापौर :-

ठिक आहे आयुक्त साहेब उत्तर देऊन टाका.

ज्योत्स्ना हसनाळे :-

मॅडम तुम्हाला सत्यपरिस्थिती ऐकावे लागेल. तुम्ही ऐकायची भुमिका जरा घ्या प्रत्येक ठरावावर आम्ही बोलत नाही इथे प्रत्येक ठरावावर बोलणारी व्यक्ती पण आहेत.....

मा. महापौर :-

तुम्हाला ह्या प्रश्नाचे उत्तर पाहिजे तर तुम्हाला देत आहोत तुम्ही बसुन जा.

मा. आयुक्त :-

तुम्ही भावनिक बोलत आहेत तुम्ही मुद्दे मांडा ना.

ज्योत्स्ना हसनाळे :-

प्रश्न भावनिकतेचा नाही साहेब प्रश्न असा आहे की जर ही पंतप्रधान आवास योजना ३ वर्षांमध्ये तुम्ही पूर्ण करणार असाल किंवा खरोखर त्या ठिकाणी त्या पध्दतीचे लोकांना घरे मिळणार असतील तरच ह्या योजनेला हात घाला अन्यथा ही योजनेचा हा ठराव इथेच आपण संपवून टाकूया. कारण आम्हाला तिथे कारवाई पाहिजे. लोकांना त्याचे उत्तर पाहिजे. लोकांना आपल्या स्वतःची हक्काची घरे पाहिजे. प्रश्न हा आहे साहेब आणि तिथे नगरसेविका म्हणून आम्हाला प्रश्नाची उत्तरे द्यावी लागतात. अधिकारी सगळेच प्रश्न पूर्ण करतात अशातला भाग नाही त्याच्यामध्ये माझा एक विषय असा आहे एम.एम.आर.डी.ए कडून जर आपल्याला घर मिळाली असतील तर ती घरे आपण आता सध्या अस्तित्वात असलेल्या लोकांची शिफटींगमध्ये जी लोक आहेत त्यांना त्याठिकाणी स्थलांतरीत करावे व ज्यांना भाडे मिळालेले नाहीत त्यांना चेक मिळालेला नाही. त्यांना तिथे स्थलांतरीत केलं तर कमीत कमी हे बाकीचे काम होईपर्यंत लोकांना एक दिलासा मिळेल की आम्हाला सध्या व्यवस्थित ठिकाणी राहायला मिळालेले आहे. कारण पावसाच्या परिस्थितीमध्ये त्यांना त्या खोलीमध्ये राहणे कठीण जात आहे. तरी केवळ तुम्ही ह्या बाबतीमध्ये विचार केला तर आणखीन बरे होईल. असे मी आपणांस सांगते मॅडम आणि आयुक्त साहेब तुम्हाला सुध्दा माझी ही कळकळीची विनंती आहे.

मिरादेवी यादव :-

कमिशनर साहेब अभी जो भाडे के लोग जो दरदर भटक रहे है तो उनके लिए क्या सोचा है उनको भाडा दे रहे है या कही शिफ्ट कर रहे है। उनके लिए क्या सोचा है।

दिपक खांबित :-

मा. महापौरांच्या परवानगीने बोलतो आपली जी बी.एस.यू.पी. योजना केंद्र शासनाने मंजूर केली त्यामध्ये ४१३६ सदनिका होत्या याच्यामध्ये २ झोपडपट्ट्या होत्या काशी चर्च आणि दुसरी जनता नगर. जनता नगरमध्ये आपण टेंडर काढताना ३ पॅकेजेस केले आणि एक काशी असे चार पॅकेज आपण काढले याचा प्रोजेक्ट जो होता तो आपला २७९ करोडचा होता. त्यानंतर हे प्रत्यक्ष जे काम करत होते टेकडी तोडून करायचे होते. हे सगळ्यांना माहिती आहे की टेकडी होती त्यावर सगळी लोक होती. त्यांना शिफटींग करायचे होते आपल्याकडे कुठलेही ट्रान्झिस्ट कॅम्प नव्हते आणि जी जागा होती ती कलेक्टर लॅन्ड होती जी काही वस्तुस्थिती आहे ती केंद्र शासनाला सादर केली होती की आमच्याकडे जागा नाही ही कलेक्टर लॅन्ड आहे. त्याप्रमाणे त्या प्रोजेक्ट मंजूर केले त्यानंतर आम्ही जागा मागणी केली. जागा आम्हाला २०१२ ला कलेक्टरने आमच्या नावावर केली त्यानंतर आपण त्या बिल्डींगची कामे सुरु करायला गेले असता ट्रान्झिस्ट नव्हते मग आपण घोडबंदरला जे ३२६ रिझर्व्हेशन आहे त्याच्यामध्ये आपण जवळ जवळ १०८७ आपण ट्रान्झिस्ट तयार केले. त्यामध्ये लोकांना पाठवले त्यानंतर १०४४ लोकांनी भाडे घेतलेले आहे. त्याला आपण गेल्यावर्षी गेल्या मार्चपर्यंत त्यांना आपण भाडे दिले तर अशाप्रमाणे ती योजना सुरु केली होती. लोकांच्या काही प्रमाणात विरोध होता. स्थानिक नगरसेवकांना वगैरे घेऊन जो काही विरोध होता तो आम्ही काढला आणि योजना सुरु केली त्यानंतर हे करता करता बराच वेळ गेला त्यानंतर आम्ही योजनेसाठी मुदतवाढ मागितली त्याच्यात कॉस्ट, खर्च वगैरे वाढला शासनाकडे मागितले शासनाने सांगितले की आम्ही कुठल्याही प्रकारे तुम्हाला ह्या योजना होऊ देणार नाही आणि तुम्हाला ही योजना पूर्ण करायची असेल तर तुमचा पैसा लावायचा जवळ जवळ ४०० ते ५०० कोटीची योजना झालेली आहे. एवढा आपल्याकडे पैसा नाही. यावरती मग मुख्यमंत्री महोदयांकडे मिटींग झाली त्याच्यात आम्ही सांगितले की ही योजना जी आहे ती पी.एम.यू.आय मध्ये कन्व्हर्ट करा आणि त्याप्रमाणे हा प्रस्ताव तयार केला सगळी वस्तुस्थिती नमुद करुन आम्ही ही तुमच्यापुढे प्रस्ताव ठेवलेला आहे हा प्रस्ताव मंजूर झाल्यानंतर आपण ही स्किम पूर्ण ह्याच्यात किती मॅक्झीमम एफ.एस.आय. लागतो कारण पी.एम.यू.आय मध्ये आपल्याला जास्तीत जास्त एफ.एस.आय. मिळतो. शासनाची कमिटी ४ पर्यंत मिळतो त्याच्यापुढे आपल्याला मिळू शकेल. आणि याच्यामध्ये आपल्याला कुठलाच खर्च यायला नाही पाहिजे. याप्रमाणे आपण ती योजना तयार करु. शासनाला सादर करुन त्याप्रमाणे करुया.

मा. आयुक्त :-

हे आता ४१३६ साठी आहे की २००० साठी आहे.

दिपक खांबित :-

४१३६ साठी करायची आहे साहेब.

मिरादेवी यादव :-

कमिशनर साहब कितने लोगो को भाडा दिया था मार्च २ साल में कितने लोगो को भाडा दिया था?

मा. आयुक्त :-

१०४४.

मिरादेवी यादव :-

नही साहब मैं गए मार्च का बोल रही हूँ।

दिपक खांबित :-

अभी जो भाडा देना है वह ५५३ लोगो को देना है।

मिरादेवी यादव :-

मैं मार्च का बता रही हूँ। कितने लोगो को भाडा दिया था?

दिपक खांबित :-

१०४४ जो है उसमे से ५६९ को हम लोगाने लोढा में दिया और अभी १२९ लोगो को जो एक बिल्डींग पुरी हुई उसमे रहने के लिए दे दिया और अभी शिफ्टिंग जो देना है भाडा जो देना है ४०० लोगो को देना बाकी है।

मिरादेवी यादव :-

४०० लोगो को देना बाकी है। जो मार्च में भाडा दिया था कौनसे महिने का भाडा दिया था। जो भाडा दिया था किसीको ४ महिना का गया है, किसीको ५ महिना का भाडा गया है।

दिपक खांबित :-

भाडा देना बाकी है।

मिरादेवी यादव :-

अगर प्रधानमंत्री योजना को हम झोपडपट्टी मे ले रहे है भाडे पर भी ४ से ५ हजार भाडा जा रहा है और कुछ लोगो को जे.सी.बी वाले को भाडा दिया वह भी ३-४ महिना ५ महिने का बाकी लोग ऐसे ही भटक रहे है। एक का हार्ट अटैक का ऑपरेशन हुआ है।

मा. आयुक्त :-

भाडे का मुद्दा ध्यान में आया और दुसरा कुछ है क्या? जो बात नहीं हुई वैसा मुद्दा है क्या?

मिरादेवी यादव :-

बात जब शुरू में खाली कराने का तो १८ महिने का टाईम दिया था की १८ महिने में बनाके दे रहे है अभी फिर उनको वापीस ३ साल का टाईम दिया है तो हम कैसे विश्वास करे की यह ३ साल मे भी वापस घर मिलेगा।

मा. आयुक्त :-

मा. महापौर महोदय, उपमहापौर महोदय, सन्मा. सदस्यांनी ह्या ठरावाला एकमताने जरी मान्यता दिली तर काही मुद्दे उपस्थित केलेले आहेत. प्रशासनाने त्याची नोंद घेतलेली आहे. यामध्ये ज्या लोकांचे भाडे प्रलंबित आहेत त्याचा निर्णय तात्काळ केला जाईल. पहिला मुद्दा आणि आता बी.एस.यू.पी. योजना बंद झालेली आहे. मार्च २०१७ मध्ये ही योजना बंद झालेली आहे तर आपल्याला पर्याय नाही. आपले जे निर्णय प्रलंबित राहिलेले आहेत त्याला कायम करण्यासाठी आपणाला टेकओव्हर पंतप्रधान योजनेत करणे क्रमप्राप्त आहे. मा. मुख्यमंत्री महोदयांसमोर याचा डिटेल आढावा झाला. त्यांच्या निर्देशाप्रमाणे हा गोषवारा आपल्यासमोर सादर केलेला आहे आणि काल उपमहापौर महोदय आम्ही दोन्ही सदस्य माझ्याकडे आल्या होत्या. त्यांची भावना त्यांच्याशी निगडित याच्यासाठी आहे की त्यांना योजना कार्यान्वीत करताना त्यांचा सिंहाचा वाटा आहे. ती लोक खाली करण्यासाठी आणि लोक खाली करत नाही. सहजासहजी आपल्या योजना इन्सीट्यु म्हणजे जिथे झोपडपट्टी आहे तिथेच ते विकसित करायचे आहे. म्हणून आपल्याला सगळ्यात मोठा चॅलेन्ज होता आणि सगळ्या लोकांचे एकमत बनले एवढे कॉमन गोष्ट नाही ते तुमच्या पुढाकाराची आमची निश्चित दखल ठेऊ आणि पुढच्या पंतप्रधान आवास योजनेमध्ये काल आपली जी चर्चा झाली त्याचा एक टाईम बाऊंड प्रोग्राम तयार करून आपल्याला मॅक्झिमम ह्या योजना रुपांतरीत करण्याचा

आपण काम करु आणि त्याचा जास्तीत जास्त ३ वर्षांचा कालावधीच्या पुढे जाणार नाही याचे कार्यपालन आपण करु. आणि जे भाड्याचे इश्युज आहेत. आपण प्रशासनाकडून अंतिम केले जातील. आणि तिसरा एक मुद्दा होता स्थलांतरीत जिथे संक्रमण शिबीरे आहेत त्याची थोड्या बेसिक अॅमिनिटीची सुविधा म्हणजे पाणी वगैरे स्वच्छ तिथे भेटले पाहिजे. बाथरूम तिथे चांगले पाहिजे. तर ह्या गोष्टीची आम्ही दखल घेऊ.

मिरादेवी यादव :-

तमी घर खाली कराना था तमी इन्होंने बोला की लाईट, पानी फ्री है।

मा. आयुक्त :-

लाईट, पाणी फ्री नाही.

मिरादेवी यादव :-

यही तो गलती है जो उस समय लिखके लिया है रायटींग अगर नहीं होती तो हम भी कही जाके बैठ सकते है ना। जैसे जबान पे विश्वास आज आप लोग दे रहे है वैसा तमी दिया तमी मुझे ऐसा मालुम नहीं था की ऐसा अन्याय पब्लिक के साथ होगा तो तमी बोले थे लाईट और पानी हम फ्री देंगे। बाद में एक नंबर जो बिल्डींग बनी जब घर देने का हुआ तो इन्होंने लाईट बील था उनके उपर ठोक के दिए तो लाईट बील भरो तो उनको चाबी मिली आज जमी ११ प्रकार की बात उसमें बी.एस.यू.पी. योजना में प्रधान मंत्री आवास योजना में ११ टक्के है क्या?

मा. आयुक्त :-

इसमें जो खुद का हिस्सा डालने का है वह पहिला जो लेव्हल है उसे जादा कभी भी योग नहीं आएगा। आणि जे काही बेसिक त्याचे आहे ते आम्ही त्यांना न लागेल असे प्रावधान करण्याचे हे काम तुम्हाला शब्द दिलेला आहे की त्यांचा खर्च याच्यात शुन्यावर कसा आणता येईल.

प्रविण पाटील :-

आयुक्त साहेब सदरची योजना ह्या शहरामध्ये जवळ जवळ १७ ते १८ झोपडपट्ट्या आहेत अधिकृत आहेत खाजगी जागेवर आहेत किंवा सरकारी जागेवर आहेत. त्यांच्यामध्ये कार्यान्वित करण्यासाठी महापालिकेने डी.पी.आर तयार केलेला आहे. आज गेल्या कित्येक वर्षांपासून मिरादेवींना मी बघत आहे त्या अगदी पोटतिडकीने हा विषय त्या मांडत असतात. आज अनेक नगरसेवक बसलेले आहेत ह्या शहरामध्ये बहुतेकांच्या वॉर्डमध्ये झोपडपट्ट्या आहेत आपण महापालिकेतर्फे त्याचा डी.पी.आर तयार केलेला आहे. परंतु मिरादेवींचा आणि ज्योत्सना मॅडमचा असो अनुभव बघता कुठलाही नगरसेवक पुढचे नाही येणार की आमच्या विभागात प्रधानमंत्री योजना असावी तरी आपल्याला महापौर मॅडम आयुक्त साहेब विनंती आहे त्या ट्रान्झिटी कॅम्पची जी परिस्थिती बघता आणि सध्याची झोपडपट्टी असलेली अस्तित्वात असलेली झोपडपट्टी त्यांच्यापेक्षा त्यांची परिस्थिती एकदम खराब आहे. तर यापुढे कुठलीही झोपडपट्टी आपण बी.एस.यू.पी. किंवा प्रधानमंत्री आवास योजनेमध्ये आणणार असताना त्यांचा ज्या मुलभूत सुविधा आहेत. त्याची पूर्ण तयारी करुनच ती योजना मंजूर करुन घ्यावी अशी आपणास विनंती आहे.

मा. महापौर :-

ठराव मंजूर. पुढचा विषय घ्या.

प्रकरण क्र. ४४ :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेमार्फत राबविण्यात आलेल्या बी.एस.यू.पी. योजनेतील कामे प्रधानमंत्री आवास योजनेत घेवून पूर्ण करणेबाबत विचार विनिमय करुन निर्णय घेणे

ठराव क्र. ४४ :-

मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेमार्फत राबविण्यात आलेल्या बी.एस.यू.पी. योजनेबाबत खालीलप्रमाणे विस्तृत माहिती सादर करण्यात आलेली आहे.

- १) जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय नागरी पुनरुत्थान अभियानांतर्गत “शहरी गरीबांना मुलभूत सुविधा पुरविणे” (BSUP) या उपकार्यक्रम अंमलबजावणी बाबत महाराष्ट्र शासन गृहनिर्माण विभाग यांनी दि. २५ जून २००७ शासन निर्णय अन्वये सुचना निर्गमित केल्या आहेत.

राज्य शासनाच्या मार्गदर्शक सुचना

सन २००१ च्या जनगणनेनुसार देशात सुमारे २८५.३५ दशलक्ष म्हणजे देशाच्या एकुण लोकसंखेच्या २७.८ टक्के लोक शहरात राहात आहेत. स्वातंत्र्यानंतर देशाच्या लोकसंखेत तिप्पट वाढ झालेली असुन शहरी भागातील लोकसंखेत पाचपट वाढ करणा-या गरीब जनतेच्या लोकसंखेत सुध्दा वाढ झालेली आहे. सन२००१ च्या जनगणनेनुसार देशातील झोपडपट्टीवासीयांची एकुण लोकसंख्या ६१.८ दशलक्ष इतकी झालेली इतकी झालेली आहे.

शहरातील झोपडपट्टीवासीयांच्या वाढत्या लोकसंख्येमुळे शहरातील मुलभूत सोयी व सुविधावर अतोनात ताण पडत आहे. यानुसार केंद्र शासनाने जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय नागरी पुनरुत्थान अभियानांतर्गत “शहरी गरीबांना मुलभूत सुविधा पुरविणे” (BSUP) या उपकार्यक्रम राबविण्याचा निर्णय घेतला आहे.

कार्यक्रमाची उद्दिष्टे

- १) कार्यक्रमात समाविष्ट असलेल्या शहरातील गरिब जनतेसाठी पुरविण्यात येणा-या मुलभूत सुविधांचा एकात्मिक विकास करण्यावर लक्ष केंद्रीत करणे.
- २) शिक्षण,आरोग्य,व सामाजिक सुरक्षा पुरविणे.
- ३) मालमत्तेची निर्मीती व मालमत्तेचे व्यवस्थापन.
- ४) आवश्यक तेवढ्या निधीची गुंतवणुक करणे.
- ५) नागरी सुविधा व सोयी पुरविणे.

कार्यक्रमाचा कालावधी.

सन.-२००५-२००६ पासून ७ वर्षे.(प्रकल्पास मुदतवाढ ३१ मार्च २०१७)

निधी उपलब्धता

केंद्र शासनाचा वाटा एकुण प्रकल्प खर्चाच्या ५०%

मागासवर्गिय/ सर्वसाधारण १० ते १२ %

उर्वरीत राज्य शासन व स्थानीक स्वराज्य संस्था.

अंमलबजावणी रुपरेषा

दि.०१/०१/१९९५ च्या लाभार्थीना प्राधान्याने सहभागी करुन घेणे.

प्रस्तावाची अंमलबजावणी अ) निव्वळ पायाभूत सुविधा पुरविणे ब)गहननिर्माण प्रकल्प लाभार्थ्यांचे अंशदान वसुल करण्याची जबाबदारी स्थानीक स्वराज्य संस्थाची असेल.

निवासी झोपडीधारकांना किमान २६९ चा.फु. बांधकाम क्षेत्रफळाइतका (२२५ चा.फु.चटई क्षेत्र) गाळा देण्यात येईल.

शासकीय जमिनीवरिल झोपड्याच्या जागेवर घरे बांधण्यासाठी अकषीक परवानगी आवश्यक नाही.

नोंदणी फी पुर्णपणे माफ करणे.

- २) मिरा-भाईदर महानगरपालिकेने सदर प्रकल्प राबविणेस मा. महासभा दि. २०/११/२००९ ठराव क्र. ३६ अन्वये प्रशासकिय व आर्थिक मान्यता प्रदान केली.
- ३) त्यानुसार मिरा-भाईदर महानगरपालिकेने केंद्र शासनाच्या जवाहरलाल नेहरू नागरी पुनरुत्थान अभियानांतर्गत “शहरी गरीबांना मुलभूत सुविधा पुरविणे” हा उपक्रम हाती घेण्याचे ठरविले. महानगरपालिका क्षेत्रातील बहुताशः झोपड्या या खाजगी जागेवर व सी.आर.झेड ने बाधीत असल्याने शासकीय जागेवर वसलेल्या जनतानगर व काशी चर्च या फक्त दोनच झोपडपट्ट्या अस्तित्वात होत्या. त्यामुळे सदर दोन झोपडपट्ट्यांची निवड सदर उपक्रमासाठी करण्यात आली.
- ४) मा. स्थायी समिती ठराव क्र. ११८ दि. १७/०२/२००९ नुसार दि.२६/०९/२००९ च्या कार्यादेशानुसार मे. पुनित आर्किटेक्ट, ठाणे यांची तांत्रिक सल्लागार म्हणून नेमणुक करण्यात आली. सदर सल्लागारामार्फत सविस्तर प्रकल्प अहवाल तयार करुन म्हाडा मार्फत केंद्रशासनाकडे मान्यतेसाठी सादर करण्यात आला. सदर प्रकल्प हा जिल्हाधिकारी यांच्या मालकिच्या जागेवर असल्याचे नमुद करुनच प्रकल्प सादर करण्यात आला होता.

सदर रु. २७९.५५ कोटी किंमतीच्या प्रकल्पास दि. ११/११/२००९ रोजी केंद्र शासनाची मान्यता प्राप्त झाली. सदर योजनेचा मंजूर वित्तीय आकृती बंध खालील प्रमाणे होता.

| अ.क्र. | तपशिल | केंद्र हिस्सा | राज्य हिस्सा | मनपा हिस्सा | लाभार्थी हिस्सा | एकूण |
|--------|---------------|-------------------|----------------------|-------------------|-------------------|----------|
| १) | घराची किंमत | ६५२१.५९ (५० %) | ३९१२.९६ (३० %) | ११७३.८८ (९%) | १४३४.७५ (११ %) | १३०४३.१८ |
| २) | मुलभूत सुविधा | ४९०८.४० (५०%) | रु.२४५४.१९ (२५ %) | २४५४.१९ (२५ %) | - | ९८१६.७८ |

| | | | | | | |
|----|---------------|-----------------|-------------------|-------------------|----------------|-----------------|
| ३) | संक्रमण शिबीर | - | १४८८.९६ (५० %) | १०६५.०८ (५० %) | - | ५०९५.४४ |
| ४) | इतर | - | - | २५४१.४० | - | |
| | एकूण | ११४२९.९९ | ७८५६.१२ | ७२३४.५६ | १४३४.७५ | २७९५५.४२ |

प्रकल्पाचे उपांगे खालील प्रमाणे आहे.

| | | | |
|---|--------------------------------------|---|---|
| १ | एकूण झोपडपट्टी | - | दोन (१) जनतानगर (२) काशीचर्च |
| २ | लाभार्थ्यांची संख्या | - | ४१३६ (१) जनतानगर ३६६५ (२) काशीचर्च ४७१ |
| ३ | पुरविण्यात येणाऱ्या सदानिकेचे स्वरूप | - | सदनिका 1 BHK स्वरूपाची असून त्यामध्ये Living in Room, Bedroom, Kitchen, W.C. Bath, Passage, Balcony. यांचा समावेश आहे |
| ४ | चटई क्षेत्र | - | २५ चौ.मी (२६९ चौ.फुट)/प्रति लाभार्थी |
| ५ | पुरविण्यात येणाऱ्या पायाभूत सुविधा | - | vi. अंतर्गत रस्ते vii. पाणीपुरवठा व मलनिःस्सारण viii. पथदिवे ix. बालवाडी (७) x. समाजमंदिर (६) |
| ६ | घराच्या किंमती | - | रु. ३.४६ लक्ष प्रती घर |
| | प्रत्यक्ष घराची किंमत | - | रु. ३.३० लक्ष प्रती घर |
| | पायाभूत सुविधा किंमत | - | रु. ६.७६ लक्ष प्रती घर |
| | एकूण घराची किंमत (पायाभूत सुविधांसह) | - | रु. ६.७६ लक्ष प्रती घर |

| अ.क्र. | निधीचा स्रोत | केंद्र शासना प्रमाणे मंजूर निधी | प्राप्त निधी | |
|--------|------------------|---------------------------------|--------------|----------------|
| | | | दिनांक | रक्कम |
| १ | केंद्र शासन | ११,४२९.९९ | नोव्हें.२०१० | २८५६.०० |
| | | | जुलै २०१५ | ११७०.०८ |
| २ | राज्य शासन | ७,८५६.१२ | एप्रिल २०११ | १९६४.०३ |
| | | | जुलै २०१५ | ८०४.०३ |
| ३ | मिरा भाईंदर मनपा | ७,२३४.५६ | - | - |
| ४ | लाभार्थी | १,४३४.७५ | - | - |
| | एकूण | २७,९५५.४२ | | ६७९४.१४ |

सदर योजनेकरीता केंद्र व राज्य शासनाकडून रु.६७.९४ कोटी एवढा निधी महानगरपालिकेस प्राप्त झालेला आहे. आजपावेतो रक्कम रु.७२.०८ कोटी एवढा खर्च महानगरपालिकेमार्फत पुढील प्रमाणे खर्च करण्यात आलेला आहे.

प्राप्त अनुदान व झालेला खर्च

| अ.क्र. | केंद्रशासन व राज्य शासन यांच्याकडून आलेला निधी | इमारत क्र.०१ चे काम पूर्ण व त्यावरील झालेला खर्च | इमारत क्र.०१ सोडून प्रकल्पावरील झालेला खर्च | एकूण खर्च |
|--------|--|--|---|----------------|
| १ | रु. 67.94 कोटी | रु.8.34 कोटी | रु.63.74 कोटी | रु. ७२.०८ कोटी |

अंमलबजावणी यंत्रणा.

१) महानगरपालिका

सदर प्रकल्पासाठी महाराष्ट्र शासन, केंद्र शासन यांच्याशी समन्वय साधून प्रकल्प व्यवस्थापक सल्लागार, प्रकल्प व्यवस्थापन सल्लागार (पी.एम.सी) व पॅकेजनिहाय ठेकेदार यांच्याकडून सदर प्रकल्पातील काम करून घेणे, पाठपुरावा करणे व शासनास वेळोवेळी अहवाल पाठविणे.

२) प्रकल्प व्यवस्थापक सल्लागार

सदर प्रकल्पासाठी मे. पुनीत आर्किटेक्ट यांची सल्लागार म्हणून नेमणुक करण्यात आलेली असून त्यांची खालीलप्रमाणे जबाबदारी आहे.

अ) सविस्तर प्रकल्प अहवाल, अंदाजपत्रक तयार करणे, राज्य व केंद्र शासनाची मान्यता घेणे.

ब) सविस्तर निविदा फॉर्म, कागदपत्र तयार करणे, सुपरव्हिजन करणे.

३) प्रकल्प व्यवस्थापन सल्लागार (पी.एम.सी)

सदर प्रकल्पाच्या तांत्रिक बाबी तपासणीसाठी प्रकल्प व्यवस्थापन सल्लागार म्हणून मे. टेक्नो कन्सल्टंट, नवी-मुंबई यांची विहित कार्यवाही करून मा. स्थायी समिती सभा ठराव क्र.१३९, दि.२५/०२/२०१० च्या मंजुरीने दि. २६/०३/२०१० रोजीच्या कार्यादेशान्वये नेमणुक करण्यात आली आहे. त्यांची खालीलप्रमाणे जबाबदारी आहे.

अ) प्रकल्प व्यवस्थापन सल्लागार

ब) प्रकल्प अंतर्गत तांत्रिक सल्ला देणे, कागदपत्र छाणणी, प्रकल्पांतर्गत तांत्रिक व इतर व्यवस्थापन करणे, सुपरव्हिजन करणे.

४) प्रकल्पातील कंत्राटदार

सदर कामाच्या निविदा मागवून मा. स्थायी समिती सभा दि.०५/०८/२०१० ठराव क्र. ३६ अन्वये कंत्राटदार यांना खालील प्रमाणे कार्यादेश देण्यात आले. प्रकल्प जलद गतीने पूर्ण करण्याच्या उद्दीष्टाने प्रकल्पाचे काम चार पॅकेजमध्ये विभागून खालीलप्रमाणे देण्यात आले आहे.

(रुपये कोटीत)

| पॅकेज | नेमलेला कंत्राटदार | निविदा किंमत (कोटीत) | सदनिका | कार्यादेश व दिनांक |
|---------------|--|----------------------|--------|--------------------|
| जनता नगर जे १ | मे. शायनो कार्पोरेशन - टोस्कॉनो इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रा.लि. (जे.व्ही) | १०६.७३ | १३३६ | दि.२८/१२/२०१० |
| जनता नगर जे २ | मे. डिव्हीनिटी (जे.व्ही) | ९३.३० | ११५६ | दि.२४/११/२०११ |
| जनता नगर जे ३ | मे.श्रीजी कन्स्ट्रक्शन व बिकॉन इंडीया इन्फ्रास्ट्रक्चर डेव्हलपर्स प्रा.लि. (जे.व्ही) | ९३.२८ | ११७३ | दि.२७/१२/२०१० |
| काशीचर्च | मे. डी. के. इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रा.लि., सुमेर कार्पोरेशन, एस.व्ही. जिवानी, स्ट्रिक्रिट. लि. (जे.व्ही) | ३७.२४ | ४७१ | दि.२८/१२/२०१० |

इतर विभागाची परवानगी

१) पर्यावरण विभाग

सदर प्रकल्पास पर्यावरणाच्या दृष्टीने पर्यावरण विभागाची आवश्यकता असल्याने सदर विभागाच्या मान्यतेसाठी प्रस्ताव सादर करून दि.२५/०१/२०११ रोजी मान्यता प्राप्त करून घेण्यात आली. सदर मान्यता ५ वर्षासाठी होती. पर्यावरण विभागाची वाढीव मान्यता प्राप्त नसल्याने प्रकल्पाचे काम सुरु ठेवता येणार नाही.

२) राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण

सदर प्रकल्पास दि.२८/०७/२०१० च्या पत्रान्वये राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण परवानगी प्राप्त आहे.

३) जमीन विक्रीची परवानगी

सदर प्रकल्पामध्ये शासनाच्या निकषानुसार महानगरपालिकेस हिश्याची रक्कम रुपये ७२.३४ कोटी उभारावयाची होती. तसेच प्रकल्प वर्धनक्षम (Viable) होण्यासाठी महाराष्ट्र शासन नगरविकास विभाग मंत्रालय, मुंबई यांचे शासन निर्णय क्र.टिपीएस ११०७/अनौ.३६/प्र.क्र.१३५/०८/नवि-५ दि. २४ डिसेंबर २००८ मधील तरतुदीनुसार २.५ चटईक्षेत्र निर्देशांक लागू करून त्यातील २५ %चटईक्षेत्र विक्री घटकासाठी वापरून अतिरिक्त निधीची उभारणी करण्यात येणार होती. त्यानुसार महानगरपालिकेच्या प्रस्तावास मा. मुख्य अभियंता म्हाडा यांनी त्यांचे कार्यालयीन पत्र क्रमांक जा.क्र.२/उमुअ/ जेएनएनयु आरएम/६८९/१० दि.३०/०९/२०१० अन्वये मंजूरी दिलेली असून जमीन विक्रीची परवानगी दिलेली आहे.

शासनाची जबाबदारी

सदर प्रकल्पातील कामाचा पाठपुरावा करणे. स्थानिक स्वराज्य संस्थाना सदर प्रकल्पासाठी निधी उपलब्ध करून देणे. सदर प्रकल्प कालमर्यादीत असल्यामुळे कामासाठी पाठपुरावा करणे. प्रकल्पातील कामाबाबत महाराष्ट्र शासन व केंद्रशासनास अहवाल देणे.

महानगरपालिकेची जबाबदारी

पॅकेजनिहाय ठेकेदार यांच्याकडून सदर प्रकल्पातील इमारतीचे बांधकामाचे काम पूर्ण करून घेणे, पाठपुरावा करणे व शासनास वेळोवेळी अहवाल पाठविणे.

कंत्राटदाराची जबाबदारी

निवीदा मंजूरी नुसार प्रकल्पातील पॅकेजनिहाय इमारतीचे काम पूर्ण करणे, प्रकल्पातील प्रत्यक्ष जागेवरील झोपड्या हटविणे, संक्रमण शिबीराचे बांधकाम करणे, लाभार्थीना संक्रमण शिबीरामध्ये स्थलांतरीत करणे, भाडेत्वावरील लाभार्थीना भाडेचे धनादेश देऊन स्थलांतरीत करणे.

म्हाडाची भूमिका

महाराष्ट्र शासनाने बि.एस.यु.पी प्रकल्पासाठी म्हाडाची नोडल एजन्सी म्हणून नियुक्ती केलेली आहे. सदर प्रकल्पातील कामाचा आढावा घेणे, निधी वितरण करणे व केंद्रशासनास प्रकल्पाच्या कामाचा अहवाल पाठविणे.

शासनाचे मार्गदर्शन

Cost Escalation

(गृहनिर्माण विभागाचे दि.११/०६/२०१५ चे पत्र)

शहरी गरीबांना मुलभूत सुविधा पुरविणे या कार्यक्रमाच्या मार्गदर्शक सुचनानुसार प्रकल्पात अनुज्ञेय नाही. तसेच प्रकल्पाच्या अंमलबजावणीचा व त्यासाठी महानगरपालिकेस कराव्या लागणा-या अतिरिक्त खर्चाची कोणतीही रक्कम बी.एस.यु.पी.कार्यक्रमातून केंद्र व राज्यशासन देऊ शकणार नाही.

प्रकल्पास मुदतवाढ

(गृहनिर्माण विभागाचे दि.१९/११/२०१६ चे पत्र)

केंद्र शासनाच्या सुचनेनुसार बी.एस.यु.पी. प्रकल्प विहित कालावधीत पूर्ण करणे आवश्यक आहे. सबब आपली मुदतवाढीची विनंती अमान्य करण्यात येत असून सदर प्रकल्प वेळेत पूर्ण करण्याची दक्षता घ्यावी.

(गृहनिर्माण विभागाचे दि.१७/११/२०१६ चे पत्र)

प्रकल्पाच्या मुदतवाढीसाठी आपण केलेली विनंती मान्य करता येणार नाही. सबब सदर प्रकल्प वेळेत पूर्ण करण्याची दक्षता घ्यावी.सबब दि. १९/११/२०१६ च्या पत्रान्वये देण्यात आलेले उत्तर अंतिम असून त्यामध्ये निश्चीत केलेला प्रकल्प पूर्ण करणे केंद्र शासनाच्या कार्यक्रमानुसार आवश्यक आहे.

सदर प्रकल्पास ३१ मार्च २०१७ पर्यंत केंद्र शासनाने मुदतवाढ दिलेली होती. प्रकल्पातील इमारतीचे काम पाहता इमारतीचे काम पूर्ण करण्यास पुढील २-३ वर्षांचा कालावधी लागणार आहे. परंतु शासनाने प्रकल्पास मुदतवाढ दिलेली नाही. सदर प्रकल्पाबाबत मा. मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र राज्य यानी दि.१४ जुन २०१७ रोजी सदर प्रकल्पाचे काम प्रधानमंत्री आवास योजनेमधून पूर्ण करणेबाबत सुचना दिलेल्या आहेत.

CSMC बैठक

केंद्रीय गृहनिर्माण आणि शहरी दारिद्र्य निर्मुलन मंत्रालयाद्वारे दि. २०/०३/२०१५ रोजीच्या सी.एस.एम.सी.च्या बैठकीमध्ये मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या बी.एस.यु.पी. प्रकल्पाबाबत चर्चा करण्यात आली होती. सदर बैठकीत त्यावेळी सुरु असलेल्या २३५१ घरकुल पूर्ण करणेबाबत निर्णय घेण्यात आला असून योजना बंद झाल्यामुळे निधी मिरा भाईंदर महानगरपालिकेस मिळणार नाही. तसेच

उर्वरित १७८५ घरकुलांसाठी महानगरपालिकेने स्वतः च्या निधीतुन खर्च करणेबाबत निर्देश दिलेले आहेत. सदर प्रकल्पामध्ये मुळ मंजूरीनुसार G+8 च्या इमारती (४१३६ सदनिका) बांधण्यात येणार होत्या. परंतु प्रकल्प Insitu असल्यामुळे लाभार्थीना स्थलांतरित करुन इमारतीच्या कामास सुरुवात करण्यास विलंब झाला आहे. सदर प्रकल्पाच्या ठिकाणी उंच डोंगर असल्यामुळे सदर डोंगराची खोदाई करण्यास विलंब झाला आहे. सदर प्रकल्प २३५१ सदनिकासाठी सिमीत केल्यामुळे स्थलांतरित केल्या लाभार्थीना प्राधान्याने सामावुन घेण्यासाठी G+16 च्या इमारती बांधण्याचा मा. महासभा दि.१३/०७/२०१५ ठराव क्र.३२ नुसार घेण्यात आलेला आहे. प्रकल्पामध्ये मुळ मंजूरीनुसार G+8 च्या दोन इमारतीचे काम सुरु आहे.उर्वरीत इमारती G+16 बाबतचे सुधारीत नकाशांना नगरचना विभागाची मंजूरी प्राप्त आहे.

संक्रमण म्हणजे भाडे व शिफटींग

मा. महासभा, मा. स्थायी समिती सभा तसेच सविस्तर प्रकल्प अहवालामध्ये संक्रमण शिबीराची व्यवस्था केलेल आहे.

संक्रमणमध्ये भाडेचे लाभार्थी व शिफटींगचे लाभार्थी या दोन्ही चा समावेश आहे. सदर ठरावात २ वर्षांच्या भाडेची तरतुद असली तरी पुढील वाढीव कालावधीसाठी सुध्दा प्रतिपुर्ती करावी लागणार आहे.

- १) मिरा-भाईदर महानगरपालिका राबवित असलेला बी एस यु पी प्रकल्प हा In situ प्रकारात मोडत असल्याने जोपर्यंत लाभार्थ्यांसाठी तात्पुरत्या निवासाची व्यवस्था होत नाही तोपर्यंत प्रत्यक्ष इमारत बांधणीच्या कामास सुरुवात करता येत नाही. प्रकल्प प्रस्तावात यासाठी लाभार्थ्यांना रु. ३०००/- प्रति माह प्रमाणे दोन वर्षासाठी घर भाडे देण्याची तरतुद आहे. निविदा बोलावितेवेळी ५०% लाभार्थ्यांसाठी संक्रमण शिबिर व ५०% लाभार्थ्यांसाठी घरभाडे देणे असे प्रस्तावित आहे.
- २) काशीमिरा / मिरा रोड परिसरात एवढ्या मोठ्या संखेने व तेही ज्यांना मिळणा-या भाड्याच्या रक्कमेत घर मिळणे दुरापस्त वाटत असल्याने संक्रमण शिबिर हाच पर्याय उरत असल्याने १३१७ संक्रमण खोल्या

बांधण्यात आलेल्या आहेत.

- ३) आतापर्यंत भाडेतत्वावर व संक्रमण शिबीरात स्थलांतर केलेल्या लाभार्थींच्या २०४२ झोपड्या तोडण्यात आलेल्या आहेत.

प्रकल्पाची किंमत

बी.एस.यु.पी.योजनेमधील इमारत बांधकामास अपेक्षित खर्च **1,81,863 X 27,986.40**

चौ.मी.=**508.96** कोटी एवढा खर्च अपेक्षित आहे. बी.एस.यु.पी.प्रकल्पाच्या दरानुसार **24.94** कोटी एवढा खर्च वास्तुविशारद, आर.सी.सी.तंज व प्रकल्प व्यवस्थापन सल्लागार या बाबीसाठी होणार असून एकूण प्रकल्पाची किंमत **533.91** कोटी एवढी होत आहे.

| झालेल्या कामाचे मुल्याकन | आतापर्यंत झालेला खर्च | कंत्राटदारास द्यावयाची रक्कम |
|--------------------------|-----------------------|------------------------------|
| रु.82.64 कोटी. | 72.08 कोटी | 10.56 कोटी |

मा.विशेष महासभा (दि.१३/०७/२०१५ठराव क्र.३२)

१) सदर योजना केंद्र शासनाच्या मुळ मंजूरी नुसार ४१३६ सदनिका करीता प्रकल्प राबवून प्रकल्प पूर्ण

करण्यात यावा.

२) बी.एस.यु.पी. प्रकल्प धोरणानुसार बी.एस.यु.पी. योजना वर्धनक्षम करण्याकरीता शासन निर्णयातील

तरतूदीनुसार २.५ चटईक्षेत्र निर्देशांक वापरण्याची मुभा मनपास प्रदान करण्यात आलेली आहे.

२.५

चटईक्षेत्र निर्देशांक लागू केल्यानंतर त्यामधील प्रथमतः १५ % च.क्षे.नि विक्री घटकाकरीता वापरण्याचे

अधिकार मनपास असून वाढीव १०% च.क्षे.नि. (विक्री घटकाकरीता कमाल २५ %) घटकाकरीता वापरण्यास मा. उपाध्यक्ष म्हाडा यांच्या परवानगीने मुभा देण्यात आलेली आहे. तथापी सदर प्रकल्प पूर्ण करण्यास २५% व्यतिरीक्त २१% वाणिज्य वापराची परवानगी मिळून एकूण ४६% वाणिज्य वापराची परवानगी शासनाकडून घ्यावी असा ठराव पारीत करण्यात आला आहे.

३) संक्रमण शिबीराची व्यवस्था व रेंटल हाऊसींगच्या सदनिकामध्ये लाभार्थीना स्थलांतरीत करण्याची

जबाबदारी बाबत खालील प्रमाणे नमुद आहे.

५) मुळ निविदेतील अटी शर्तीनुसार सदर लाभार्थीना भाडे देण्याची जबाबदारी संबंधीत ठेकेदाराची आहे.

तथापी सदर प्रकल्पास विलंब झाल्याने २ वर्षांपेक्षा वाढीव कालावधीसाठी मनपामार्फत भाडे द्यावे लागणार आहे. सदर भाडे महानगरपालिकेकडून देण्यास ही सभा मान्यता देत आहे.

वरील ठरावानुसार कंत्राटदाराना सुधारीत कार्यादेश देण्यात आलेले होते.

अतिरिक्त वाणिज्य वापरासाठी शासनास प्रस्ताव

वरीलप्रमाणे सदर योजना राबविताना आलेल्या अडचणी, त्यामुळे कामास झालेला विलंब व काम पूर्ण करण्यासाठी लागणारा निधी सदर योजनेस पात्र लाभार्थ्यांच्या झोपड्या तोडून त्यांना स्थलांतर केल्याने त्याचे पुर्नवसन करणे, याबाबत आढावा घेतला असता सदर योजना ही महानगरपालिकेस निधी उपलब्ध करून देऊन पूर्ण करावा लागणार आहे. शासनाकडून सदर योजना २३५१ सदनिकासाठी सिमीत केल्याने शासन अनुदान देखील मंजूरीपेक्षा कमी मिळणार आहे. त्यामुळे मंजूर ४१३६ सदनिका बांधण्याच्या दृष्टीने शासनाकडून विहित मर्यादेपेक्षा जादा चटईक्षेत्र वाणीज्य वापरासाठी मंजूर करून घ्यावा लागेल. सदर योजनेच्या मंजूर नकाशात बदल करून ४१३६ सदनिका बांधण्यासाठी शासन अनुदान वगळता इतर निधी वाणीज्य वापरातुन उभा करावा लागेल. त्यासाठी शासनाकडे अतिरिक्त ५०% वाणिज्य वापरासाठी परवानगी मागितलेली होती सदर प्रस्तावास मान्यता मिळालेली नाही.

विलंबाची कारणे.

- १) सदर प्रकल्प हा सरकारी जागेवर करावयाचा असल्याने जागा मागणीचा प्रस्ताव मा. जिल्हाधिकारी ठाणे यांच्याकडे दि.३१/०८/२००९ रोजी सादर करण्यात आला. सदर जागा ताब्यात मिळविण्यासाठी मा. जिल्हाधिकारी कार्यालय ठाणे, मा. विभागीय आयुक्त कोकण भवन, महसुल विभाग, महाराष्ट्र शासन यांच्याकडे पाठपुरावा व पत्रव्यवहार केल्यानंतर सदर जागेचा आगाऊ ताबा मा. जिल्हाधिकारी ठाणे यांनी महानगरपालिकेस दि.०५/०४/२०११ रोजी दिला व तदनंतर शासनाची जागा हस्तांतरणास दि.१६/११/२०११ रोजी अंतिम मान्यता प्राप्त झाली.
- २) मिरा-भाईंदर महानगरपालिका राबवित असलेला बी एस यु पी प्रकल्प हा In situ प्रकारात मोडत असल्याने जोपर्यंत लाभार्थ्यांसाठी तात्पुरत्या निवासाची व्यवस्था होत नाही तोपर्यंत प्रत्यक्ष इमारत बांधणीच्या कामास सुरवात करता येत नाही. प्रकल्प प्रस्तावात यासाठी लाभार्थ्यांना रु. ३०००/- प्रति माह प्रमाणे दोन वर्षासाठी घरभाडे देण्याची तरतुद आहे. निविदा बोलावितेवेळी ५०% लाभार्थ्यांसाठी संक्रमण शिबिर व ५०% लाभार्थ्यांसाठी घरभाड देणे असे प्रस्तावित होते. सदर तरतुद सविस्तर प्रकल्प अहवाल (DPR) मध्ये करण्यात आलेली आहे.
- ३) सदर प्रकल्पांतर्गत संक्रमण शिबिर ट्रक टर्मिनलच्या आरक्षणावर प्रस्तावित असल्याने सदर आरक्षणाचा काही भाग हा महाराष्ट्र प्रादेशिक नगररचना, अधिनियम १९६६ चे कलम ३७ अन्वये फेरबदल करणे आवश्यक होते. त्या अनुशंगाने मा. महासभा दि. २०/११/२००९ ठराव क्र. ३६ अन्वये मंजूरी घेऊन फेरबदलाचा प्रस्ताव राज्य शासनाकडे पाठविण्यात आला. या बाबत सातत्याने पाठपुरावा केल्यानंतर नगरविकास विभाग अधिसूचना क्रमांक टीपीएस-१२११/२४८/प्र.क्र.२९४/११/ नवि-१२ दि. २७/०३/२०१२ अन्वये १२,२३९ चौ.मीटर क्षेत्रावर संक्रमण शिबिराचे आरक्षण मंजूर करण्यात आले आहे.
- ४) जनतानगर येथील जे-३ व जे-१ पॅकेजमधील झोपड्या हटवून त्याठिकाणी उंच ३० मी. चा डोंगर खोदाई करणे व सदर माती टाकण्यास महानगरपालिकेकडे जागा उपलब्ध नव्हती. सदर भागातील खाजगी जमीन मालकाच्या परवानगी नुसार माती भराव करण्यात आला. सदर डोंगर खोदाईच्या कामास झालेल्या विलंबामुळे इमारतीचे काम विलंबाने सुरु झालेले आहे.

- ५) जे-3 पॅकेजमधील डोंगरखोदाईमुळे इमारतीच्या बाजुस धोकादायक स्थिती झाल्यामुळे भविष्यात कुठलीही दुर्घटना घडू नये या अनुअषंगाने मा. आयुक्त यांच्या मंजूरीने सदर भागात Reatining wall चे काम करण्यात आले आहे.
- ६) झोपडपट्टी धारकांचा सर्वेक्षणास विरोध असल्याने सर्वेक्षण वहीत वेळेत पूर्ण न होता त्यास अधिक कालावधी लागणे.
- ७) झोपडपट्टीच्या जवळच संक्रमण शिबीर पाहीजे, अतिरिक्त संक्रमण शिबीराची मागणी करणे. संक्रमण शिबीराची खोली अपूरी आहे म्हणून शिबीरात जाण्यास विरोध करणे.
- ८) झोपडी खाली करण्याच्या पूर्वी सदनिकाचे लॉटरी व रजिस्ट्रेशन करावे असा आग्रह असणे. रजिस्ट्रेशन झालेनंतरच झोपडी खाली करणे.
- ९) पात्र झोपडी धारक स्वतःच्या पात्र झोपडीत पार्टीशन, नवीन दरवाजा बसविणे, नवीन बांधकाम करणे व त्यास नवीन नंबर देणे बाबत मागणी करणे व पात्र झोपडी खाली करण्यास नकार देणे

१) भाडेचे २ वर्ष पुर्ण

प्रकल्पामध्ये लाभार्थीना भाडेचा २ वर्षाचा ३०००/- प्रमाणे रु.७२०००/- देण्याची तरतुद आहे. सदर भाडेचे २ वर्ष पुर्ण झालेले ओहत व सदर लाभार्थीना पुढील कालावधीसाठी भाडेचे धनादेश देण्याची गरज आहे. भाडेत्वावर गेलेल्या 1044 मधुन लोढा अक्वा इमारतीमध्ये 569 लाभार्थीना स्थलांतरीत केलेले आहे. व जे-3 पॅकेजमधील इमारत क्र.1 मध्ये 75 लाभार्थीना सदनिकाचा ताबा देण्यात आलेला आहे. उर्वरित 400 लाभार्थीना व झोपडी तोडलेले पण भाडे किंवा शिफ्टींग न मिळालेले 193 असे मिळून 593 लाभार्थीना भाडे देणे बाकी आहे.

प्रकल्पातील भाडेच्या लाभार्थींचा तपशिल

| अ.क्र. | पॅकेज | लाभार्थी संख्या | एकुण रक्कम | प्रदान करण्यात आलेली भाडेची रक्कम | उर्वरित प्रदान करावयाची भाडेची रक्कम |
|--------|----------------|-----------------|---------------|-----------------------------------|--------------------------------------|
| १ | जे-१ | १५५ | ९०,८१,०००/- | - | ९०,८१,०००/- |
| २ | जे-२ | १२६ | ७५,१२,०००/- | - | ७५,१२,०००/- |
| ३ | जे-३ | २९२ | १,७९,२२,०००/- | ९६,७८,०००/- | ८२,४४,०००/- |
| ४ | काशिचर्च पॅकेज | २० | १५,४२,०००/- | - | १५,४२,०००/- |
| | एकुण | ५९३ | ३,६०,५७,०००/- | ९६,७८,०००/- | २,६३,७९,०००/- |

भाडेच्या लाभार्थींचा तपशील

| अ.क्र. | भाडेचे लाभार्थी | संक्रमण शिबीर लाभार्थी | इमारत क्र.01 मधील ताबा दिलेले भाडेचे लाभार्थी | एकुण स्थलांतरीत लाभार्थी | उर्वरित २ वर्ष पुर्ण झालेले भाडेचे लाभार्थी व भाडे किंवा शिफ्टींग न मिळालेले लाभार्थी | जुन 2017 पर्यंत होणारी भाड्याची रक्कम (भाडेचे - 400 व भाडे किंवा शिफ्टींग न मिळालेले 193 लाभार्थी) असे एकुण 593 |
|--------|-----------------|------------------------|---|--------------------------|---|---|
| 1 | 1044 | 1087 | 75 | 2042 | 593 | 2,63,79,000/- |

रेंटल हाऊसींग स्कीम

सदर प्रकल्पअंतर्गत लाभार्थीना संक्रमण शिबीर व भाडेत्वावर स्थलांतरीत करून इमारतीच्या कामास सुरुवात करण्यात आली आहे. प्रकल्पास विविध कारणामुळे विलंब झालेला आहे. सदर झालेल्या विलंबामुळे भाडे तत्वावरील लाभार्थींचे भाडेचे २ वर्ष पुर्ण झालेले असून पुढील भाडेसाठी लाभार्थी पाठपुरावा करत आहेत. प्रकल्पाचा कालावधी पुर्ण झालेला असून यापुढे शासनाकडून निधी

मिळणार नाही. सदर प्रकल्पातील भाडेतत्वावरील लाभार्थीमधील ५६९ लाभार्थींना एम.एम.आर.डी.ए कडून प्राप्त रेंटल हाऊसींगच्या सदनिकामध्ये तात्पुरत्या स्वरूपात स्थंलांतरीत केलेले आहे. रेंटल हाऊसींग मधील सदनिका शासनाने परवडणारी घरे या योजनेमध्ये परावर्तीत केलेले आहे. एम.एम.आर.डी.ए. कडून रेंटल हाऊसींग स्कीम मधुन प्राप्त होणाऱ्या सदनिकामध्ये भाडेतत्वावरील लाभार्थींना स्थंलांतरीत करणेबाबत मा. महासभा दि. १३/०७/२०१५ मध्ये ठराव पारित केलेला आहे. भाडेतत्वावरील व झोपड्या तोडलेल्या ५९३ लाभार्थींना स्थंलांतर करण्यासाठी रेंटल हाऊसींग च्या इमारतीची गरज आहे.सद्यस्थितीत डेल्टा गार्डन, मौजे महाजनवाडी येथील इमारती अंतीम टप्प्यात आहेत. सदर इमारतीचा ताबा लवकरात लवकर घेणेबाबत नगररचना विभागास अवगत करण्यात येत आहे.

भाडेचे रक्कम RTGS द्वारे

मा.महासभा दि.२०/११/२००९ ठराव क्र.३६ व मा.स्थायी समिती सभा दि.०५/०८/२०१० ठराव क्र.३१ अन्वये सदर लाभार्थींना संक्रमण म्हणजे संक्रमण शिबीर खोली / भाडे द्यावयाची तरतुद असल्याने सदर लाभार्थींच्या खातेवर महानगरपालिकेमार्फत RTGS द्वारे भाड्याची रक्कम जमा करण्यात आली आहे. सदर लाभार्थींची झोपडी तोडण्यात आली असून सदर लाभार्थी भाडेच्या सदनिका मध्ये राहत आहेत. त्यामुळे सदर लाभार्थी संक्रमण शिबीर खोली अथवा भाड्याची मागणी करत आहेत. सद्यस्थितीत महानगरपालिकेकडे संक्रमण शिबीर खोल्या नसल्याने सदर लाभार्थींना भाडे देणे गरजेचे होते. त्यामुळे भाडेचे २ वर्ष पुर्ण होणाऱ्या १९५ लाभार्थींच्या बँक खातेवर RTGS द्वारे मार्च २०१६ पर्यंत भाडेची रक्कम जमा करण्यात आली आहे. उर्वरित ५९३ मधील १८४ लाभार्थींचे जुन २०१७ पर्यंतच्या भाडेची रक्कम मे. श्रीजी बिटकॉन (जेव्ही) यांच्या चालु देयकातुन कपात करुन लाभार्थींच्या बँक खातेवर RTGS द्वारे जमा करण्यात आली आहे.

योजनेची सद्यस्थिती :-

| अ.क्र. | पॅकेज | कामाचा तपशिल | इमारत बांधकामासाठी ठेकेदारास प्रदान करण्यात आलेले देयक | सद्यस्थितीत ठेकेदारास उर्वरित बाकी प्रदान करावयाचे देयक | पॅकेज मधील 1918 सदनिकाचे काम पुर्ण करण्यासाठी लागणारा खर्च |
|--------|-------|--|--|---|--|
| १ | जे-१ | १) इमारत क्र. ०६, २९४ सदनिका , सदर इमारतीचे RCC चे काम १६ व्या मजल्या पर्यंत पुर्ण झाले आहे. १५ व्या मजल्यापर्यंत Brick Work चे काम पुर्ण झाले आहे . सद्यस्थितीत काम बंद आहे. २) इमारत क्र. ०७, ३६२ सदनिका, सदर इमारतीचे खोदकाम ६०% पुर्ण झाले आहे. | रु.14,27,62,223/- | रु.8,25,15,029/- | रु.99,21,54,139/- |
| २ | जे-३ | १) इमारत क्र. ०१, (१७९ सदनिका) ची सर्व कामे पुर्ण झाली असुन १७१ पात्र लाभार्थींना सदनिकाचा ताबा देण्यात आला आहे. २) इमारत क्र. ०२, २९९ सदनिका, सदर इमारतीचे ३ र्या मजल्यापर्यंतचे RCC चे काम पुर्ण झाले आहे. सद्यस्थितीत काम बंद आहे. ३) इमारत क्र. ०३, २९९ सदनिका , सदर इमारतीचे RCC चे काम ८ | रु.52,85,42,379/- | रु.2,20,96,945/- | रु.103,60,66,415/- |

| | | | | | |
|-------------|----------------|---|--------------------------|--------------------------|---------------------------|
| | | <p>व्या मजल्या पर्यंत पुर्ण झाले आहे. ५ व्या मजल्यापर्यंत Brick Work चे काम पुर्ण झाले आहे. सद्यस्थितीत काम बंद आहे.</p> <p>४) इमारत क्र. ०४, २९९ सदनिका, सदर इमारतीचे RCC चे काम १ ला मजल्या पर्यंत RCC चे काम पुर्ण झाले आहे. सद्यस्थितीत काम बंद आहे.</p> <p>५) इमारत क्र. ०५, २९९ सदनिका, सदर इमारतीचे खोदकाम ५०% पुर्ण झाले आहे. फुटींग स्टाफ कॉलम आणि प्लॅथ चे काम पुर्ण झाले आहे. सद्यस्थितीत काम बंद आहे.</p> | | | |
| ४ | काशिचर्च पॅकेज | <p>काशिचर्च इमारत क्र.०४, १२९ सदनिका,सदर इमारतीचे ६०% RCC चे काम ८ व्या मजल्यापर्यंत पुर्ण झाले आहे. सदर इमारतीचे Brick work चे काम ७ व्या मजल्यापर्यंत पुर्ण झाले आहे. सद्यस्थितीत काम बंद आहे.</p> | रु.4,95,20,068/- | रु.9,93,641/- | रु.9,94,92,554/- |
| एकुण | | | रु.72,08,24,671/- | रु.10,56,05,615/- | रु.212,77,13,108/- |

Reatining wall

जनतानगर येथील जे-३ पॅकेज संजय गांधी राष्ट्रीय उद्याना लगत असून सदर भागात २५ मी. उंचीचा डोंगर होता. इमारतीच्या बांधकामासाठी सदर डोंगर खोदाई करण्यात आली. सदर डोंगर खोदाईमुळे सदर भागात धोकादायक स्थिती निर्माण झाली होती, या स्थितीत डोंगराचा भाग कोसळण्याची शक्यता होती त्यामुळे इमारतीच्या बांधकामाचे काम करणे अत्यंत धोकादायक होते, त्यामुळे सदर ठिकाणी Reatining wall बांधणे गरजेचे होते. त्यानुसार तत्कालीन मा. आयुक्त यांच्या मंजूरीने तांत्रिक सल्लागाराच्या अभिप्रायानुसार सदर Reatining wall चे काम पुर्ण करण्यात आले आहे. सदर Reatining wall च्या कामामुळे इमारत क्र. १ चे काम पुर्ण होऊन लाभार्थीना सदर इमारती मधील सदनिकाचा ताबा देण्यात आला आहे. **सदर** Reatining wall बांधण्याच्या खर्चास ही सभा मान्यता देत आहे.

विधी विभागाचा अभिप्राय

As Per clause 21 (a)(Page No.60) of chapter - V Conditions of Contract tender document Engineer - in - Charge shall be entitle (Other than default on the part of Bidder for which the corporation is entitled to rescind the contract) to stop the whole or part of work by giving a notice in writing to bidder of such desire and upon the receipt of such notice the bidder shall forthwith stop the work wholly or in part if required after having due Regards to appropriate stage at

which the work should be stopped the Bidder Shall have no claim to any payment or compensation what so-ever by Reason of in pursuance of any notice as aforesaid on account of any stoppage or curtailment except to the extent specified hereunder sub clause (b) & (C)

As Per the aforesaid clause the contractor shall not be entitle to claim any payment or compensations from corporation for such stoppage.

In case the Contractor raised any Dispute against such notice stoppage he has to refer dispute to Arbitration as per clause 27 (disputes & Arbitration) (page No.44) under Indian Arbitration Act.

Since the said BSUP Project has already been delayed and in case the present Contractor on receiving stoppage notice from the corporation raises any disputes which may cause further delay the corporation can allow the present Contractor (Who are not defaulter & willing to do work as per new policy) to participate in the new contract.

So it is advisable to give prior notice to the Contractors as per the provision of clause 21 (a) of tender document.

विधी अधिकारी यांनी वरिलप्रमाणे अभिप्राय दिल्यानुसार विषयांकित प्रकल्प प्रधान मंत्री आवास योजनेतुन प्रस्तावित करणेबाबतच्या प्रस्तावास मान्यता मिळल्यानंतर निविदेतील तरतुदीनुसार संबंधीत ठेकेदार यांना नोटीस देऊन पुढील कार्यवाही प्रस्तावित करण्यात येईल. विस्थापीत झालेले व विस्थापीत न झालेले बी.एस.यु.पी.प्रकल्पाचे लाभार्थीबाबत प्रधानमंत्री आवास योजनेमध्ये प्रस्ताव सादर करणे. जनतानगर व काशिचर्च येथील झोपडी तोडुन स्थलांतर केलेल्या लाभार्थीना व सद्यस्थितीत जागेवर असलेल्या लाभार्थीना प्रधानमंत्री आवास योजनेत सामावुन घेणेसाठी मा. महासभेच्या मंजूरीनंतर मे. पुनित आर्किटेक्ट या सल्लागाराकडून मंजुर दराने सविस्तर प्रकल्प अहवाल शासनास सादर करण्यात येईल.

प्रधानमंत्री आवास योजना

सदर प्रकल्प वेळेत पुर्ण करता यावा यासाठी मा.महासभेच्या मान्यतेने कंत्राटदाराना सुधारीत दर मंजुर करुन देण्यात आले तथापी शासनाकडून ५०% वाणिज्य वापर परवानगी न आल्याने व योजनेस मुदतवाढ न दिल्याने, महानगरपालिकेची स्वतःचा निधी टाकून योजना पुर्ण करण्याची क्षमता नसल्याने सदर सुधारीत दरानुसार प्रकल्प पुर्ण होणार नाही.

मा.मुख्यमंत्री यांच्याकडे दि.१४ जुन २०१७ रोजी झालेल्या बैठकीत मा.मुख्यमंत्री यांनी सदर योजना प्रधानमंत्री आवास योजनेतुन पुर्ण करावी असे निर्देश दिले. त्या अनुशंगाने या विभागामार्फत बी.एस.यु.पी.योजनेतर्गत प्रत्यक्ष झालेले काम, कामावर झालेला खर्च, बी.एस.यु.पी.योजनेत शासनाकडून प्राप्त झालेले अनुदान (एक इमारतीचा हिस्सा वगळून) शासनास परत द्यावे लागणार असल्याने, तसेच महानगरपालिकेस भविष्यात स्वतःच्या निधीतुन काही ही खर्च येऊ नये यासाठी प्रत्यक्षात प्रधानमंत्री आवास योजनेतुन काम पुर्ण करण्यासाठी लागणारा चटई क्षेत्र याची माहिती व अभ्यास करुन शासनाकडे प्रस्ताव पाठवून मंजुर झाल्यानंतर उर्वरित सर्व कामासाठी नव्याने निविदा प्रसिध्दी करावी लागेल. तत्पुर्वी बी.एस.यु.पी. योजनेतर्गत सुरु असलेली कामे व कंत्राटे रद्द करावी लागतील. बी.एस.यु.पी. योजना बंद झाल्याने व शासनाकडून प्रकल्पात कोणतही मुदतवाढ, अनुदान, Escalation इ. देण्याबाबत असमर्थता दर्शविल्याने सदर प्रकल्प प्रधानमंत्री आवास योजनेतुन करावा लागणार आहे २.५० चटई क्षेत्र फक्त बी.एस.यु.पी.योजने पुरतीच मर्यादीत होते, तथापी प्रधानमंत्री आवास योजनेतुन प्रकल्प प्रस्तावित केल्यास २.५ ते ४ चटई क्षेत्र पर्यंत परवानगी मिळू शकेल.

शासन निर्णय क्र.प्रआयो.2017/प्र.क्र.4/गृहनिधो-2 दि.14 मार्च 2017 गृहनिर्माण विभाग यांच्या मार्गदर्शन सुचनानुसार विविध अमंलबजावणी यंत्रणानी तयार केलेले प्रस्तावाच्या अनुषंगाने जादा FSI देणे जमिनीचे क्षेत्र व उपलब्ध ते नुसार आरक्षणाीत बदल करणे स्थानिक स्वराज्य संस्थेकडे असलेली

वित्तीय तरतुद व नविन तंत्रज्ञान आत्मसात करणे इ . साठी व प्राप्त प्रस्ताव छाननी करण्याकरीता उपसमिती यांचेकडे सविस्तर प्रकल्प अहवाल सादर करून मान्यता घेणे शक्य आहे. प्रधानमंत्री आवास योजनेतर्गत सदर प्रकल्पासाठी चटई क्षेत्र निर्देशक जास्तीत जास्त **4.00 FSI** लागणार आहे. सदर वाढीव **FSI** साठी महाराष्ट्र शासनतर्गत **Maharashtra State New Housing Policy & Action Plan, 2015** मध्ये प्रकरण क्र. **3, 3.5 (ii)** यानुसार आपण शासनाकडे **4.00** पर्यंत **FSI** ची मागणी करून शकतो. व शासन वरील नियमानुसार आपणांस वाढीव **FSI** ची मान्यता देऊ शकते.

अनुदान तपशिल

प्रधानमंत्री आवास योजनेतर्गत राज्य शासन व केंद्र शासन यांच्याकडून अपेक्षित अनुदान **3957 x 200000 = 79.14 cr.** एवढे अनुदान अपेक्षित आहे. सदर योजना राबविताना बि.एस.यु.पी.प्रकल्पातील प्राप्त अनुदान न परत केल्यास एकुण **रु.124.807** कोटी एवढ्या निधीची आवश्यकता असणार आहे.

लाभार्थी व बांधकाम क्षेत्रफळ

- बी.एस.यु.पी.योजनेतर्गत जनतानगर व काशिचर्च येथील एकुण पात्र लाभार्थींची संख्या **4136** एवढी आहे.
- सदर योजनेतुन प्रत्यक्ष इमारत क्र.01 मध्ये **179** सदनिका तयार करून लाभार्थ्यांना ताबा देण्यात आलेला आहे.
- सद्यस्थितीत एकुण **3957** लाभार्थ्यांना घर देणे बाकी आहे. प्रकल्पातील उर्वरित लाभार्थींसाठी स्वतंत्र योजना करावी लागेल, सदर योजना पुर्ण करण्यासाठी प्रधानमंत्री आवास योजनेत प्रस्तावित करावी लागेल.
- सदर योजनेमध्ये एकुण बांधकाम क्षेत्र **1,81,863 Sq.mt** एवढे आहे.

प्रधानमंत्री आवास योजनेमध्ये होणारे बांधकाम

बी.एस.यु.पी प्रकल्पातील सद्यस्थितीत झालेले बांधकाम सोडून उर्वरित इमारतीचे काम पुर्ण करण्यासाठी बांधकामाबाबत मा. महासभेच्या मंजूरीनंतर मे. पुनित आर्कीटेक्ट, प्रकल्प व्यवस्थापक यांचेकडून सविस्तर प्रकल्प अहवाल सादर करण्यात येईल.

पंतप्रधान आवास योजना राबविण्याचा तपशील

सदर योजना पंतप्रधान आवास योजनेतर्गत राबविल्यास एकुण **4.00** चटई क्षेत्र निर्देशांक वापरून जनतानगर व काशिचर्च येथील जागेवर **2,64,686.08** चौ.मी एवढे चटई क्षेत्र मंजूर होणे शासनाकडून अपेक्षित आहे. बी.एस.यु.पी योजनेतर्गत **4136** घरासाठी **1,42,071.33** चौ.मी. एवढा चटई क्षेत्र लागणार असून उर्वरित **1,22,614.75** चौ.मी. एवढे चटई क्षेत्र विक्रीस उपलब्ध होऊ शकते. सदर उर्वरित **1,22,614.75** चौ.मी.चटई क्षेत्र सदर जागेच्या चालू वर्षातील सरासरी रेडी रेक्नर दरानुसार **रु.26,910.00** चौ.मी. असे धरल्यास महानगरपालिकेस एकुण **329.96** कोटी एवढे उत्पन्न मिळू शकते. शासनाकडील प्रधानमंत्री आवास योजनेतर्गत येणारे **रु.79.14** कोटी अनुदान असे एकुण **409.10** कोटी प्रकल्पासाठी निधी उभा करता येऊ शकतो. महानगरपालिकेस स्वतः चा **रु.124.807** कोटी एवढा निधी उपलब्ध करावा लागेल. सदर योजना पुर्ण करण्यासाठी जागेची विक्री झाल्यानंतर **36** महिन्यांचा कालावधी अपेक्षित आहे.

केंद्र शासनाने **4136** सदनिकांचा प्रकल्प **2351** सदनिकासाठी सिमित केलेला आहे. सदर **2351** सदनिकासाठीचे इमारतीच्या बांधकामाचे काम विविध टप्प्यावर सुरु असून सदर प्रकल्पातर्गत पॅकेज निहाय इमारतीच्या बांधकामावर व डोंगर खोदकाम इ. कामासाठी प्राप्त निधी खर्च झालेला असून तो संबंधित ठेकेदारांना वितरीत केला आहे. सद्यस्थितीत इमारतीचे काम वेगवेगळ्या टप्प्यावर असून यांची माहिती मुद्दा क्र.03 दर्शविण्यात आलेली आहे. सदर निधी खर्च झालेला असून शासनास अनुदान परत करणे शक्य नसल्याबाबत शासनास कळवावे लागणार आहे. वरील नमुद रुपये **59.60** कोटी इतका निधी **BSUP** प्रकल्पावरच खर्च झाला असून तो शासनास परत करणे शक्य नाही.

सदर प्रकल्पांतर्गत सुरु अस लेल्या जे - 1 पॅकेजमधील 294 सदनिकांची इमारत , जे - 3 पॅकेजमधील इमारत क्र.02 मधील 299 सदनिका, इमारत क्र.03 मधील 299 सदनिका, इमारत क्र.04 मधील 299 सदनिका व इमारत क्र .05 मधील 299 सदनिका तसेच काशिचर्च पॅकेज मधील इमारत क्र.04 मधील 129 सदनिका अशा मिळुन 1619 सदनिकांची कामे संबंधित कंत्राटदाराकडून महानगरपालिकेच्या स्वनिधी अथवा कर्ज निधितुनच पुर्ण करुन घेण्यात यावीत . अथवा सदर इमारतीच्या कामासाठी सदर इमारतीच्या एकुण क्षेत्राच्या 25% क्षेत्र वाणिज्य वापरासाठी अनुज्ञेय असल्याने सदर जागा विकुन सदर कामांना निधी उपलब्ध करून देण्यात यावा.

बी.एस.यु.पी. प्रकल्पातील उर्वरित सदनिका ह्या प्रधानमंत्री आवास योजनेतुन पुर्ण करण्यासाठी सल्लागाराकडून सविस्तर प्रकल्प अहवाल तयार करुन पुढील मान्यतेसाठी शासनास सादर करावा . व शासनाच्या मंजूरी नंतर आवश्यक सर्व प्रक्रिया पार पाडून पुढील कालावधीत सदर योजना पुर्ण करण्यास ही सभा प्रशासकीय व आर्थिक मान्यता देऊन प्रशासकीय कार्यवाहीचे सर्व अधिकार मा . आयुक्त यांना देत आहे.

सुचक :- श्रीम. ज्योत्स्ना हसनाळे अनुमोदन :- श्रीम. मिरादेवी यादव

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४५, मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील आजी माजी सैनिकांसाठी विरंगुळा केंद्र तयार करणेबाबत.

अरविंद शेटी :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात आजी -माजी सैनिक वास्तव्यास असून सदर सैनिकामार्फत त्यांच्या कार्यालयासाठी जागेची मागणी करण्यात आलेली आहे . मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेमार्फत विविध भागात ज्येष्ठ नागरीकांसाठी विरंगुळा केंद्र तयार करण्यात आलेले आहेत . त्याच धर्तीवर महानगरपालिका क्षेत्रातील आजी-माजी सैनिकांसाठी विरंगुळा केंद्र तयार करुन त्यांच्या संस्थेस हस्तांतरित केल्यास त्याचा लाभ त्यांना होऊन महानगरपालिकेस देखिल त्यांच्या अनुभवाचा प्रशासकीय कामकाजात फायदा होऊ शकेल. त्याकरीता त्यांना स्वामी विवेकानंद भवन , पुनम गार्डन येथील महापालिका इमारतीमधील तळ मजल्यावर जागा देण्यात यावी तसेच इंद्रलोक या भागात ज्येष्ठ नागरीकांनी वारंवार , प्रत्यक्ष भेटून व अर्जाद्वारे विरंगुळा केंद्रासाठी मागणी केलेली आहे . त्यांना मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेच्या मंजूर विकास योजनेतील आरक्षण क्र .226 या ठिकाणी विरंगुळा केंद्र बांधून मा . स्थायी समितीची मान्यता घेवून त्या भागातील ज्येष्ठ नागरीकांच्या संस्थेला देण्यात यावी.

सदर कामाच्या खर्चासाठी सन 2018-19 या वर्षाच्या अर्थसंकल्पात "ज्येष्ठ नागरीकांसाठी विरंगुळा केंद्र तयार करणे " या लेखाशिर्षाखाली रु .150.00 लक्ष एवढी तरतुद आहे . तसेच पुढील सर्व प्रशासकीय कामकाज व आवश्यक निर्णय घेण्याचे अधिकार मा . आयुक्त यांना देण्यात येत आहे त असा मी ठराव मांडत आहे.

दिपीका अरोरा :-

माझे अनुमोदन आहे.

मा. महापौर :-

ठराव मंजूर. पुढचा विषय घ्या.

प्रकरण क्र. ४५ :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रातील आजी माजी सैनिकांसाठी विरंगुळा केंद्र तयार करणेबाबत ठराव क्र. ४५ :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात आजी -माजी सैनिक वास्तव्यास असून सदर सैनिकामार्फत त्यांच्या कार्यालयासाठी जागेची मागणी करण्यात आलेली आहे . मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेमार्फत विविध भागात ज्येष्ठ नागरीकांसाठी विरंगुळा केंद्र तयार करण्यात आलेले आहेत . त्याच धर्तीवर महानगरपालिका क्षेत्रातील आजी-माजी सैनिकांसाठी विरंगुळा केंद्र तयार करून त्यांच्या संस्थेस हस्तांतरित केल्यास त्याचा लाभ त्यांना होऊन महानगरपालिकेस देखिल त्यांच्या अनुभवाचा प्रशासकीय कामकाजात फायदा होऊ शकेल. त्याकरीता त्यांना स्वामी विवेकानंद भवन, पुनम गार्डन येथील महापालिका इमारतीमधील तळ मजल्यावर जागा देण्यात यावी तसेच इंद्रलोक या भागात ज्येष्ठ नागरीकांनी वारंवार , प्रत्यक्ष भेटून व अर्जाद्वारे विरंगुळा केंद्रासाठी मागणी केलेली आहे . त्यांना मिरा-भाईंदर महानगरपालिकेच्या मंजूर विकास योजनेतील आरक्षण क्र.226 या ठिकाणी विरंगुळा केंद्र बांधून मा . स्थायी समितीची मान्यता घेवून त्या भागातील ज्येष्ठ नागरीकांच्या संस्थेला देण्यात यावी.

सदर कामाच्या खर्चासाठी सन 2018-19 या वर्षाच्या अर्थसंकल्पात “ज्येष्ठ नागरीकांसाठी विरंगुळा केंद्र तयार करणे ” या लेखाशिर्षाखाली रु.150.00 लक्ष एवढी तरतुद आहे . तसेच पुढील सर्व प्रशासकीय कामकाज व आवश्यक निर्णय घेण्याचे अधिकार मा . आयुक्त यांना देण्यात येत आहेत असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- श्री. अरविंद शेटी अनुमोदन :- श्रीम. दिपीका अरोरा

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४६, मिरा भाईंदर महानगरपालिका हद्दीमध्ये गोरगरीबांवर मोफत उपचार करणेबाबत राजेंद्र जैन :-

यह ठराव पढने से पहले में मा. जुबेर साहबजी से रिक्वेस्ट करता हूँ की, लास्ट जो महासभा में आपने जो वादा किया था की अगले बार भी आप विषय लाएंगे क्या सामुहीक विषय लाने का अपना वचन पूर्ती कर रहे है।

जुबेर इनामदार :-

आपने लाया प्रशासनने गोषवारा नही दिया।

राजेंद्र जैन :-

इसमें लास्ट टाईम आपने रिक्वेस्ट किया था की जो गरीबो के लिए डायलेसिस का जो फ्री इलाज किया जाए तो हमे ऐसा लगा की गरीबो के लिए डायलेसिस फ्री करने से अच्छा और भी कई सुविधाए है जो हम इससे ज्यादा कर सकते है और भी फ्री कर सकते है। डायलेसिस का आप बजेट लगाएंगे तो करीब करीब २-५ से ४ लाख रुपये होता है वह भी जो खर्चा है वह महापालिका पे डालने का जो प्रस्ताव था। तो उसके पहले मेरा प्रस्ताव क्या है की महापालिकेने अपनी हद में जितने भी हॉस्पिटल को जो थी रातो फ्री इलाज करने को बोला है। उनका पालन किया जाए मुझे आशा है की कम से कम बजेट साल का जो २-५ से ४ लाख रुपये जगह कमसे कम ७०-८० लाख जाएगा। तो यह फायदा संस्थाओ को हो रहा है और हमारी जनता को फ्री में हो और उसके अंदर हार्ट ऑपरेशन, किडनी ट्रान्सप्लान्ट, एन्जीओग्राफी, आय.सी.सी.यू, न्यूरोजॉजी, ओ.पी.डी. सब दे सकते है और उसके अंदर यह प्रस्ताव में हम यह आशा करते है की जो भी कंडीशन पर उनको फंसिलिटी दी गई है उन कंडीशन्स का अध्ययन किया जाए। उन कंडीशन को कैसे इम्प्लीमेंट किया जाए उसका मॅकेझम किया जाए जो मॅकेझम फेल्युअर होता है उसपे कैसे कंट्रोल किया जाए और उसके लिए सब शर्त का कैसे उनको अलाऊड किया जाए। यह हमारी संकल्पना होनी चाहिए फॉर एक्झाम्पल जैसे की वोकार्ड के अंदर १० टक्का कमिशनर का पावर दिया हुआ था हम आज तक उसको युज नही कर पाए। क्योंकि कमिशनर ने ऐसा

कभी जाहिर ही नहीं किया की हम आपको यह फॅसिलिटी देंगे हमारे पास आओ, लिखा के लेके जाओ। और कमिशनर हर जगह मिलेगा नहीं कभी रोड पे अॅक्सीडन्ट हो गया उसका इमिजिएट कमिशनर को सॅक्शन चाहिए। कमिशनर यहाँ पे है नहीं तो क्या करेंगे तो कमिशनर को सिस्टीम डेव्हलप करना पडेगा में नहीं हूँ तो यह अधिकारी यह सिस्टीम डेव्हलप करना पडेगा ताकी वह फिरसे वहाँ जा सके। ऐसे ही स्टेट के कर्मचारीयो को बोला गया की आप अपना फ्री इलाज करा सकते है। समजो शर्तो के अंदर और बंधनकारक है वहाँ पे शर्तो को अगर बंधनकारक लिखा है मतलब की १०० बेड है उससे २० बेड बंधनकारक है। पर २० बेड हम भर ही नहीं सकते। रिज़र्वेशन अलग बात है और बंधनकारक रखना अलग बात है। तो वह डिस्प्ले होगा की यह बेड बंधनकारक रुप से फ्री है वही में आपसे मांग सकता हूँ की में वहाँ जाऊंगा हॉस्पिटल के अंदर की में एम.बी.एम.सी. कर्मचारी हूँ मुझे मेरा इलाज फ्री करो तो वह बोल देंगे की आपको इलाज फ्री होगा पर अभी बेड नहीं है। तो कहाँ से जानकारी हासील करेगा डिस्प्ले होना चाहिए और डिस्प्ले के अगर वह शिकायत करता है तो उसके अंदर कंट्रोल अॅक्शन आना चाहिए।

मा. आयुक्त :-

महापौर महोदया, सन्मा. सदस्यांची सुचना बरोबर आहे. त्याच्यासाठी त्याचे कार्यपालन केले जाईल. मुद्दानुसार कारवाई जनतेला माहित होण्यासाठी अंमलबजावणी केली जाईल. फक्त वोकॉर्डच्या बाबतीत. जे काही दवाखाने आपल्याकडे आलेले आहेत आणि जिथे काही रुल कंडीशन आहेत त्याचे अंमल करण्यासाठी आणि त्याचा बेनिफीट घेण्यासाठी आवश्यक पब्लीसीटी लोकांना त्याची जाणकारी होण्यासाठी त्याच्याबद्दल एक गटनेते आणि आपल्या पदाधिका-यांच्यायाच्यामध्ये हे धोरण जे काही मंजूर झालेले आहे ते त्यांच्या समोर मांडले जाईल आणि त्याप्रमाणे ह्या कामाला प्रसिध्दी दिली जाईल. जेणेकरून कर्मचारी आहेत आणि शहरातील विकर नागरीक आहेत त्याचा तो लाभ घेतील.

सुशिल अग्रवाल :-

महापौर मॅडम, इस विषय पे थोडासा मैं भी कुछ बोलना चाहूंगा डॉ. राजेंद्र जैन ने अभी बताया मिरा भाईंदर महापालिका में जो गोरगरिबो के लिए पिछली महासभा में भी यह विषय आया था पर डायलेसिस तक सिमीत रह गया।

मा. आयुक्त :-

वह विषय आगे आनेवाले मिटींग में आनेवाला है।

सुशिल अग्रवाल :-

पर यह सभी को सुविधा मिलनी चाहिए। जहाँ जहाँ महापालिका का हक है वहाँ पे महापालिका के नागरीको को सुविधा मिलनी चाहिए अब यह सुविधा जो हॉस्पिटल लोग है आपने एक हॉस्पिटल का नाम लिया मैंने भी सोचा उसको सुविधा दी है। बाकी कौन कौनसे हॉस्पिटल को सुविधा दी गई है उसकी जानकारी नहीं है। मैंने उसकी जानकरी निकाली की पिछले एक साल में वह हॉस्पिटल ने क्या-क्या लोगो को सुविधा दी है सर मैं पढके बताऊंगा। आप थोडासा दो मिनट आपका अटेन्शन चाहूंगा मैं महिने में उन्होंने सुविधा दी है। किन लोगो को नाम पे ध्यान रखीएगा। अशरार अहमद, चिराग पोटकर, भवर मेहता, कमल जासी, रविंद्र कुमार, देव, अंशुला पवार फिर वापस असरार अहमद, चिराग पोटकर, भवर मेहता, ममता पाटील, चिराग पोटकर कमल जैसी फिर बाद में कमल जैसी, रविंद्र राव, अशरार अहमद, चिराग पोटकर, भवर मेहता, कमल जैसी, अशरार अहमद, चिराग पोटकर, भवर मेहता, रविंद्र कौर, चिराग पोटकर, कमल जैसी उसके बाद में रविंद्र कौर, अशरार अहमद, चिराग पोटकर, भवर मेहता, कमल जैसी, कमल जैसी, अशरार अहमद, चिराग पोटकर, भवर मेहता यह हो गया सर मे महिने का इसके बाद में एप्रिल महिने का पहला पेशंट चिराग पोटकर, कमल जैसी, फजल शेख, रविंद्र कौर, अशरार अहमद, चिराग पोटकर, फसल इसमाईल शेख, कमल जैसी, आखरी तक सभी यही है।

मा. आयुक्त :-

अग्रवालजी आपके माहिती अधिकार में लिया क्या माहिती थी।

सुशिल अग्रवाल :-

नहीं सर मैंने उधर से माहिती निकाली।

(सभागृहात गोंधळ)

सुशिल अग्रवाल :-

सर यह लोग क्या करते है जिनको सुविधा देते है जुन २०१७ का यह २०१८ का था जुन १७ का भी.

(सभागृहात गोंधळ)

सुशिल अग्रवाल :-

जुन २०१७ ची यादी फजल इस्माईल शेख, अशरार अहमद, चिराग पोमटेकर, फदल इस्माईल शेख, रविंद्र कौर, चिराग पोमटेकर, फदल इस्माईल शेख, रविंद्रकुमार देव, अशरार अहमद, चिराग पोमटेकर, कमल जैसी, फदल इस्माईल शेख, कमल जैसी, अशरार अहमद, चिराग पोमटेकर सर यह क्या है सर। अगर पुरे साल का आप रेकॉर्ड देखेंगे तो यही है और इसके अलावा भी अमाऊंट ऑफ ट्रीटमेंट जो पैसा दिया है १३८०,१३००,१३००,१३००,१३००,१३००,१४१२,१३००,१३००,१३०० सर अगर इस प्रकार का अगर यह हमारे दी गई सुविधा का दुरुपयोग करते है इसके उपर नियंत्रण कौन करेगा सर।

मा. आयुक्त :-

इसमें शासनने जो आदेश निकाला है त्या आदेशामध्ये असे स्पष्ट आहे याचे नियंत्रण डायरेक्टर हेल्थ करतात.

(सभागृहात गोंधळ)

मा. आयुक्त :-

माझी सन्मा. सदस्यांना विनंती राहिल. आपआपसात एकमेकांना बोलू नका.

(सभागृहात गोंधळ)

सुशील अग्रवाल :-

महापालिका का अपने सुविधाओ का अनुचित लाभ उठा रहे है सर और यहाँ की जनता को छोटे छोटे चिज के लिए कांदिवली, मलाड खाजगी हॉस्पिटल, सरकारी हॉस्पिटल वहाँ भेजा जाता है सर।

मा. आयुक्त :-

तुमची भावना लक्षात आली मुद्दा एक आहे. लोकांना जानकारी नसेल तर आता जानकारी होऊन जाईल आणि याच्यामध्ये डायरेक्टर हेल्थ याचे मंथली नियंत्रण करतात. त्या आदेशामध्ये नमुद आहे की डायरेक्टर हेल्थकडे हा अहवाल त्या इन्स्टीट्युटने दिला पाहिजे. डायलेसिस नाही तर इतर अजून काही बेनिफीट त्यांनी दिले असतील आपल्याला ह्याला लोकांचा सहभाग वाढवायचा हीच आपली अपेक्षा आहे.

सुशील अग्रवाल :-

सर त्यावर नियंत्रण पाहिजे.

मा. आयुक्त :-

नियंत्रण आहे डायरेक्टर हेल्थचे आहे. त्या आदेशातच नमुद आहे.

सुशील अग्रवाल :-

सर ते फक्त डायलेसिस हॉस्पिटल नाही ते मल्टीस्पेशालिटी हॉस्पिटल आहे. आणि मल्टीस्पेशालिटी हॉस्पिटलमध्ये सर्व प्रकारच्या रुग्णांना.....

(सभागृहात गोंधळ)

सुशिल अग्रवाल :-

आपल्या हॉस्पिटलमधुन जे पेशंट बाहेर रेफर करतात ज्या अशा प्रकारच्या हॉस्पिटलकडे रेफर केले पाहिजे आणि त्यांना मुफ्त इलाज मिळायला पाहिजे.

जुबेर इनामदार :-

तुम्हाला समजेल मल्टी स्पेशालिटी हॉस्पिटल आणि चॅरिटेबल इन्स्टीट्युट कस चालवतात ते.....

राजेंद्र जैन :-

मिरा भाईंदर शहरातील रुग्णालय /दवाखाने, आरक्षणे विकसित करणेकरिता विकासकाला महानगरपालिकेने व राज्य शासनाने विकासकाला व संस्थाना अटीशर्ती टाकून बांधकाम परवानगी देताना कोणकोणत्या रुग्णालय /दवाखान्यात, संस्थाना व विकासकाला नागरीकांवर मोफत उपचार करणे तसेच कोणकोणत्या रुग्णालयामध्ये किती खाटा राखीव ठेवणे या अटीवर परवानगी दिलेली आहे. याबाबत सविस्तर माहिती घेवून प्रशासनाने पुढील मा. महासभेत सदरचा प्रस्ताव फेरसादर करावा असा मी ठराव मांडत आहे.

जयेश भोईर :-

माझे अनुमोदन आहे.

मा. महापौर :-

ठराव मंजूर. पुढचा विषय घ्या.

प्रकरण क्र. ४६ :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका हद्दीमध्ये गोरगरीबांवर मोफत उपचार करणेबाबत

ठराव क्र. ४६ :-

मिरा भाईंदर शहरातील रुग्णालय /दवाखाने, आरक्षणे विकसित करणेकरिता विकासकाला महानगरपालिकेने व राज्य शासनाने विकासका ला व संस्थाना अटीशर्ती टाकून बांधकाम परवानगी देताना कोणकोणत्या रुग्णालय /दवाखान्यात, संस्थाना व विकासकाला नागरीकांवर मोफत उपचार करणे तसेच कोणकोणत्या रुग्णालयामध्ये किती खाटा राखीव ठेवणे या अटीवर परवानगी दिलेली आहे. याबाबत सविस्तर माहिती घेवून प्रशासनाने पुढील मा. महासभेत सदरचा प्रस्ताव फेरसादर करावा असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- डॉ. राजेंद्र जैन अनुमोदन :- श्री. जयेश भोईर

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४७, महापालिका औषध फवारणी करणेकरिता ठेकेदारामार्फत कर्मचारी घेणेबाबत.

मदन उदितनारायण सिंग :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात डास नियंत्रणाखाली औषध , धुर फवारणी केली जाते . त्याकरीता ठेक्याने कर्मचारी घेतले जातात. सदरचे कर्मचारी ठेकेदाराच्या नियंत्रणाखाली असल्यामुळे त्यांचेकडून नगरसेवकांच्या व नागरीकांच्या मागणी प्रमाणे औषध, धुर फवारणी केली जात नाही त्यामुळे वारंवार तक्रारी महापालिका प्रशासनास प्राप्त होत असतात या बाबींचा विचार करता प्रायोगिक तत्वावर यावर्षी सेवाभावी संस्थांकडून डास निर्मुलनाचे काम करून घेण्याच्या दृष्टीने निविदा प्रक्रिया करण्यात यावी. त्यामध्ये सेवाभावी संस्थाना मानधन किंवा ठेका पध्दतीने कर्मचारी घेऊन औषध/धुर फवारणी करणेची कामे देण्यात यावीत व त्यामध्ये प्रत्येक वॉर्डमध्ये ४ कर्मचारी व ज्या प्रभागाचे भौगोलिक क्षेत्र मोठे आहे अशा प्रभागात आयुक्तांनी वाढीव कर्मचारी देण्यात यावे. ठेकेदाराकडून फक्त मजुर उपलब्ध करून घेवून त्यासाठी लागणारे आवश्यक यंत्र सामुग्री इ . महापालिकेने पुरवठा करावयाचा आहे . सदरचा ठेका ३ वर्षाकरीता द्यावयाचा आहे. त्याकरीता “आरोग्य साफसफाई” या लेखाशिर्षाखालून निधी उपलब्ध करून घेण्यात यावा. भविष्यात त्या लेखाशिर्षाखाली निधी कमी पडत असेल तर पुर्नविनीयोजन करून निधी उपलब्ध करून घ्यावा. याकरीता सुमारे ५ कोटी खर्चास ही मा. महासभा आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी देत आहे असा मी ठराव मांडत आहे.

सिमा शाह :-

माझे अनुमोदन आहे.

अश्विन कासोदरिया :-

महापौर मॅडम, में यह जानना चाहता हूँ की औषध फवारणी होनेवाली है की धुवा फवारणी?

उमा सपार :-

मा. महापौरांच्या परवानगीने बोलते, महापौर मॅडम औषध फवारणी करतात माणसे पाठवतात ती औषध फवारणी बरोबर होत नाही. टेम्पो आहेत त्यांचे काय झाले आहे टेम्पो का येत नाही.

मा. महापौर :-

म्हणून हा विषय घेतलेला आहे.

उमा सपार :-

बरोबर म्हणून घेतला पण वर्ष झाले असेच चालू आहे. धुर फवारणी नाही, औषध फवारणी नाही. डास किती झालेले आहेत. लोकांना मलेरीया झालेला आहे, डेंग्यु होतो ते टेम्पो घेऊन औषध फवारणी करायला लावा आणि धुर फवारणी करायला लावा.

मा. महापौर :-

म्हणून आपण प्रोव्हिजन केलेले आहे.

उमा सपार :-

सगळ सांगितले तर कर्मचारी काय म्हणतात. टेम्पो नाही मग आम्ही काय करायचे. लोकांना डेंग्यु होत आहे. मलेरीया होत आहे हे सगळ्यांनी चुपचाप कस बसायचं.

अनिल सावंत :-

साहेब मिरारोडला चार वेळेला बोललो. टेम्पो बंद आहेत कुठे गेले कर्मचारी फवारणी का बंद आहे?

उमा सपार :-

फवारणी बंद आहे धुवाफवारणी बंद आहे. कमिशनर साहेब तेवढे टेम्पो आणि धुर फवारणी सगळ्या वॉर्डमध्ये मारायला लावा. डेंग्यु, मलेरिया हे असे रोग आलेले आहेत. लोक तापाने फणफण झाले आहेत. खोकला झालेला आहे. सर्वजण दवाखान्यात जात आहेत. हे लवकरात लवकर करा.

जुबेर इनामदार :-

आयुक्त महोदय गोषवारा दिला आहे त्याच्यामध्ये आपल्याला तरतुद करावी लागेल असा उल्लेख आहे. म्हणजे आपली केलेली तरतुद कमी आहे. कर्मचारी घ्यायचे असेल तर आपल्याला ठराव पध्दतीने ठेक्या पध्दतीने घ्यायला आपल्याला तरतुद पाहिजे. पण पुर्नविनियोजनाचा विषय प्रशासनाच्या माध्यमातून आला पाहिजे.

मा. आयुक्त :-

विधीन डिपार्टमेंट.

जुबेर इनामदार :-

विधी डिपार्टमेंट ते देऊ शकतील का त्यांना ते विचारा. कारण त्यांनी मला तर चांगले आठवते त्यांच्याकडे जी केलेली तरतुद ती त्यांना पुरत नाही. म्हणजे ते विधीन डिपार्टमेंट होऊ शकत नाही. तर महासभेमध्ये आणावे लागेल आणि तो प्रशासनाच्या माध्यमातूनच विषय आणला पाहिजे. एका बाजूला साहेब तरतुद नाही दुसऱ्या बाजूला १८० कर्मचारी आपल्याला घ्यायचे आहेत. साहेब खरोखर गरज ह्या वस्तुची होती आपल्याला. शहरामध्ये कर्मचारी वर्ग कमी लागला पाहिजे त्याच्यासाठी तांत्रिक बाबींचा वापर केला म्हणजे टेम्पो तयार केले. टेम्पोच्या माध्यमातून स्प्रेईंग होते फॉगिंगचा इफेक्ट नाही म्हणून स्प्रेईंगवर आपण जास्त लक्ष केंद्रीत केले. टेम्पो आज प्रत्येक प्रभागाला कमीत कमी २-२, ३-३ टेम्पो पाहिजेत. आज ते नाहीत. आमच्याकडे आज कमीत कमी ६ महिने झाले टेम्पो आहे की नाही ते ही सुध्दा समजत नाही. साहेब कर्मचारी खांद्यावर तो पंप घेऊन १०-२० लिटरचा तो चालत चालत किती प्रवास करणार. प्रभागामध्ये त्याच्यामुळे साहेब टेम्पोचा उपयोग केला. त्याचा चांगला प्रभाव होता ते बंद केलं. त्याच्यासाठी तरतुद नाही आणि १८० कर्मचाऱ्यांसाठी तरतुद नाही म्हणजे प्रशासनाने त्या माध्यमातून तो विचार केला पाहिजे होता. बरेच काही आपण सार्वजनिक बांधकाम विभागाला भरपूर पैसे दिलेले आहेत. खरतर आरोग्य महत्वाचे आहे. म्हणून तेथुन आपल्याला पुर्नःविनियोजनाचा विषय सार्वजनिक बांधकाममधुन घेतला पाहिजे.

मा. उपायुक्त :-

सभापतींच्या परवानगीने बोलतो सध्या आम्हाला १८० कर्मचारी सध्या कार्यरत आहेत. ६ टेम्पो आहेत प्रत्येक वॉर्डमध्ये.....

(सभागृहात गोंधळ)

मा. उपायुक्त :-

सध्या पावसाचे सिजन चालू आहे फवारणी करुन काही उपयोग होत नाही साहेब आवश्यक औषध फवारणी झाल्यावर आजुबाजूला पाऊस पडला तर त्याचा उपयोग होत नाही खरी त्याची गरज सप्टेंबर, ऑक्टोबर, नोव्हेंबरमध्ये जेव्हा पाऊस संपल्यानंतर जी डि वॉटरींग फवारणी लागते त्यावेळी लागते. म्हणून आपल्याकडे तरतुद कमी असल्याने वेस्टेज ऑफ मनी वेस्ट न करता आपल्याला त्यासाठी राखून ठेवलेले आहे. आपल्याला नुकतीच तरतुद ३ कोटीची करुन ठेवलेली आहे. त्यापैकी फक्त ९० लाख रुपये शिल्लक आहेत. आता त्या पूर्ण माणसांना २-३ महिन्याचा पगार दिल्यानंतर संपून जाणार. तरतुद कमी पडलेली आहे. तरतुदसाठी आम्ही हा विषय दिलेला आहे. नव्याने टेंडर काढणे तरतुद उपलब्ध करुन देणे यासाठी तरतुद आमच्या आरोग्य विभागाकडे नाही.

जुबेर इनामदार :-

मी तेच विचारल साहेब आरोग्यामध्ये तरतुद नाही मग पुर्नविनियोजनामध्ये.....

मा. उपायुक्त :-

लेखाशिर्षक असेल त्याच्यामधून ती तरतुद घ्यावी लागणार आहे.

जुबेर इनामदार :-

कोणत्या लेखाशिर्षकामध्ये?

मा. उपायुक्त :-

अलिकडची दुसऱ्या बजेटमधून.....

जुबेर इनामदार :-

आरोग्य विभागाचे.

मा. उपायुक्त :-

आरोग्य विभाग सोडून दुसऱ्या विभागाकडून.

जुबेर इनामदार :-

म्हणजे तुमच्याकडे पैस नाही.....

मा. उपायुक्त :-

पैसे आमच्याकडे नाहीत दुसऱ्या विभागाकडून घ्यावे लागेल.

जुबेर इनामदार :-

तुम्हाला माझ्या विभागामध्ये मी एक पैसा देणार नाही.

मा. आयुक्त :-

काही स्कुटीनी आम्ही पैसे वर्ग करू, ज्याची मान्यता लागेल ती मान्यता घेतली जाईल. ह्याला तुम्ही मान्यता दिली तर पुढची प्रोसेस होईल.

जुबेर इनामदार :-

साहेब मान्यता देवू पण त्याला पुनःविनियोजन तुम्हाला पाहिजे ना आधी. ठेका काढायला किंवा करण्याच्या आधी त्याच्यात पुनःविनियोजन? तुमच्या त्या लेखाशिर्षकामध्ये तेवढी तरतुद पाहिजे की नाही? तरतुद नसताना निविदा कशी काढता.

अश्विन कासोदरिया :-

महापौर मॅडम, मा. आयुक्त साहेब पानपट्टे साहेब जो प्रभाग के अंदर दो दो टेम्पो दिया है। एक नया है एक जुना है। लेकिन मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है। ६-६ महिने टेम्पो क्यों बंद रहते है। जैसे आपने घर की खुद की गाडी बंद रहती तो तुरंत गॅरेज में ले जाते। घर का फ्रीज बंद होता है तो तुरंत रिपेरिंग करते है। तो प्रशासन जो भी वाहन है जो आरोग्य से लेके यह विषय है तो मैं आपको विनंती करता हूँ। आनेवाला समय में टेम्पो जैसे खडा रहे उसी दिन होना चाहिए नहीं तो आईदा जो अधिकारी जो प्रशासन जो जिम्मेदार है।

गणेश भोईर :-

महापौरांच्या परवानगीने बोलतो सहा टेम्पो कुठे कुठे चालू आहेत ते जरा सांगा. भाईदर पूर्वेला एकच आहे. भाईदर पश्चिमेला, मिरारोडला तीन आहेत का? कुठे कुठे फिरले आहेत ते सांगा. भाईदर पूर्वेला दोन महिने झाले एक ही टेम्पो नाही.

मा. उपायुक्त :-

माहितीसाठी आमच्याकडे रजिस्टर आहे. सर्व रजिस्टर आमच्याकडे आहेत. कुठे फिरलेत काय नाही.

गणेश भोईर :-

म्हणजे तुमचं असं म्हणणं आहे की भाईदर पूर्वेला म्हणजे नगरसेवक झोपलेले आहेत वगैरे असे काही म्हणणे आहे का?

मा. उपायुक्त :-

आम्ही ज्या-ज्या ठिकाणी फवारणी करतो त्या ठिकाणी जाऊन लोकांच्या सहा घेतो काही ठिकाणी सदस्यांच्या सहा घेतात. आमच्याकडे सर्व रजिस्टर आहेत.

अनिल सावंत :-

सहा कोणाच्या घेतात कर्मचाऱ्यांच्या घेता का? साहेब टेम्पो फिरतच नाही. तर कोण सहा करणार.

मा. उपायुक्त :-

पावसाळा झाल्यानंतर सुरु होईल.

अनिल सावंत :-

पाऊस संपल्यानंतर फवारणी करू शकतो. तुम्ही बोलता सहा टेम्पो आहेत. भाईदर पूर्वेला टेम्पोच नाही.

जुबेर इनामदार :-

पानपट्टे साहेब पावसाळ्यामध्ये मच्छर चावत नाही का? लोकांना डॅंग्यु होत नाही का?

मा. उपायुक्त :-

पावसाळ्यामध्ये आपण इनडोअर कन्टेनर सर्व्हे करतो. डॅंग्युची साथ असल्यामुळे आपण घरोघरी जाऊन कन्टेनर सर्व्हे देतो आणि अपडेटिंग करतो आणि बाहेर जे स्प्रेईंग करतो ते स्प्रेईंगसाठी शक्यतो आपण.....

जुबेर इनामदार :-

आम्ही डॉक्टर नाहीत ठिक आहे तुम्ही नाहीत आम्ही नाहीत. मला सांगा साहेब डॅंग्युचे मच्छर आकाशातून उत्पन्न होतात किंवा असलेल्या मच्छरांच्यामधून काही तरी अंडी डॅंग्युचे असतील.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

डॅंग्युचा साहेब चांगल्या पाण्यामध्ये, घराच्या पाण्यामध्ये कन्टेनरमध्ये.....

जुबेर इनामदार :-

ते कुठून आले.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

घरातले कन्टेनर म्हणतो.....

जुबेर इनामदार :-

बाहेरचे मच्छर येऊन त्याच्यामध्ये अंडी देत असेल स्वच्छ पाण्यामध्ये.....

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

पावसामध्ये साहेब त्याचा उपयोग होत नाही. आपल्याकडे तरतुद कमी आहे. पावसाळ्यात जर फवारणी केली तर त्याचा उपयोग होत नाही. पैसे वाया जातात तरतुद कमी आहे. त्याच्यातून खर्च करावा लागतो. डॅंग्युची फवारणी मे महिन्यापासून बंद आहे.

जुबेर इनामदार :-

मा. आयुक्तांना सांगा आमच्याकडे तरतुद नाही. आम्हाला पुर्नविनियोजन करून द्या. दुसऱ्या विभागामधून मग हा विषय आणण्याचा काही अर्थ नाही. कारण निविदा काढण्यासाठी तुम्हाला त्याची तरतुद पाहिजे. तरतुद नसताना तुम्ही निविदा कशी काढणार. कायद्याचे बंधन त्याला आहे.

वंदना पाटील :-

मा. महापौर मॅडमच्या परवानगीने बोलते. आताच पानपट्टे साहेब बोलले की टेम्पो चालू आहेत. टेम्पो चालू आहेत तर पाच ड्रायव्हर आहेत ते घरी का बसले तीन महिन्यापासून. सुधीर नामुख, प्रकाश काढे हे ड्रायव्हर घरी का बसलेत.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

एक टेम्पो बंद आहे. बाकी चालू आहेत. ज्या दिवशी कामाची आवश्यकता असेल त्या दिवशी त्याला घेतो आपण. ऐरवी घेत नाही. टेम्पो बंद असताना घरी बसवतो आपण. साहजीकच आहे.

वंदना पाटील :-

मग तीन महिने घरी बसवले.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

पावसाळ्यामध्ये फवारणीची आवश्यकता नाही. औषध नंतर आपण फवारणार आहोत.

वंदना पाटील :-

तीन महिने घरी बसवले. औषध फवारणीचे टेम्पो आहेत. त्या टेम्पोवर ड्रायव्हर आहेत ते तीन महिन्यापासून घरी बसले आहेत. टेम्पो चालू नाहीत आणि आज तुम्ही बोलत आहेत की टेम्पो चालू आहेत मग ते ड्रायव्हर घरी बसले आहेत. मग आपले टेम्पो चालवतो कोण?

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

सिरीयसली विषय सांगा. ज्या-ज्या ठिकाणी जर कुठला टेम्पो बिघडला असेल तर त्याला घरी बसवला असेल. त्याचे नाव वगैरे त्यातून घेतो.

अनिल सावंत :-

साहेब मे महिन्यापासून टेम्पो बंद आहेत. आहेत की नाही?

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

सहा टेम्पो आहेत नंबर सांगा.

अनिल सावंत :-

मी तुम्हाला सांगतो भाईदर ईस्टला फोन करा ना तुम्ही नगरसेवकांना.

वंदना पाटील :-

एक ही टेम्पो चालू नाही.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

पावसाळ्यात आवश्यकता नाही. फवारणी करत नाही.

अनिल सावंत :-

मे महिन्यामध्ये पाऊस नव्हता साहेब तरी पण मे महिन्यापासून बंद आहेत.

राकेश शहा :-

महापौर मॅडम मा. आयुक्त साहेब मेरी एक सूचना है। जो अपनी औषध फवारणी होती है शाम के टाईम औषध फवारणी करने का टाईम रखेंगे तो शाम के टाईम में मच्छर ज्यादा रहते हैं। शाम के टाईम में फवारणी करेंगे तो अच्छा रहेगा।

प्रभात पाटील :-

हरकत नाही. कारण नेहमी आरोग्याचा प्रश्न उपस्थित झाले. एकतर आपल्याकडून व्यवस्थित उत्तर मिळत नाही. कधी आपले टेम्पो बंद असतात तर कधी आपले कर्मचारी घरी बसलेले असतात तरी कधी फॉर्गिंग मशिनचा प्रॉब्लेम असतो. हजार प्रश्न आहेत. आपल्याला व्यवस्थित उत्तर देत नाही. मी पुन्हा सांगते आपल्यासारखे अनुभवी अधिकारी येथे येतात. निदान आरोग्याच्या विषयावर तरी व्यवस्थित तयारी करून येत चला. कोणीही उठते आणि आपल्याला बोलतो आणि आपण काही त्यांचे काही स्पष्टीकरण देऊ शकत नाही. मॅडम हा विषय चांगला आहे. जुबेरजीने जरी विरोध केला असेल म्हणजे विरोध तुमचा ह्याच्यासाठी आहे की त्याच्यावरती नियोजन नाही. पण मला असे म्हणायचे आहे आपण नियोजन कराल तसं स्थायी समितीचे सभापती आहेत, महापौर आहेत, उपमहापौर आहेत. पैशाचा रिनिव्हल करा परंतु हे जे कर्मचारी आहेत किंवा घ्यायचे आहेत ते करून घ्या. कारण ह्याची ह्या शहराला अतिशय गरज आहे. दुसरा विषय असा आहे की दुसऱ्यांदा हा विषय आणला. मा. महापौर मॅडम शहरामध्ये ऊंदीर इतके वाढले आहेत. ऊंदरांचे प्रमाण वाढलेले आहे. ही गोष्ट सगळ्यांनाच लागू आहे. लेप्टोचे रुग्ण वाढत आहेत. लेप्टोस्पायरस सगळ्या शहरामध्ये पसरत आहेत. आपल्याकडे सुध्दा लेप्टोचे रुग्ण सापडत आहेत आणि सगळ्यात महत्वाचे म्हणजे की इमारतीचे पाया आहेत, तिथे ऊंदीर कुठेही वावरतात. आपल्याकडे जे काही लॅन्ड आहे ती इमारतींना घट्ट पकडून ठेवणारी नाही. तशात आपल्याकडच्या इमारती लवकर ठिसूळ होतात आणि ऊंदीर कुठेही बीळ करतात आणि त्या बीळामुळे किंवा त्यांच्या पोखरण्यामुळे इमारतींना धोका निर्माण होत आहे. ऊंदीर, घुशींवर काही प्रोव्हिजन करण्यासाठी किंवा प्रबंध करण्यासाठी असे काही विषय आणा की ज्याच्यामुळे ऊंदरांचे सुध्दा आपण नायनाट करू शकतो.

ज्योत्सना हसनाळे :-

मा. महापौरांच्या परवानगीने बोलते मा. आयुक्त साहेब मला असे म्हणायचे आहे मिरा भाईंदर क्षेत्रामध्ये मल:निसारण वाहन किती आहे?

आरोग्य अधिकारी :-

मा. महापौर मॅडमच्या परवानगीने बोलतो, आपल्याकडे सहा टेम्पो चालू होते. फवारणीचे जेक्स पे टेम्पो ते मध्ये काही टेम्पो त्याच्यामध्ये जे मशीन आहे त्याच्यावर माऊंट केलेला आणि आपला टेम्पो असतो. मे पासून बंद आहेत. आता दुरुस्ती सही झालेली आहे. आता एकच टेम्पो राहिलेला आहे तो दोन दिवसात तयार होईल. पाऊस संपला की ते चालू करतात.

ज्योत्सना हसनाळे :-

माझ्या प्रश्नाचे उत्तर नाही दिले. मल:निसारण वाहन किती आहेत आपल्याकडे काय माहिती आहे? मिरा भाईंदर क्षेत्रामध्ये एकच आहे असे आपले अधिकारी उत्तर देतात. किती आहेत सर.

संभाजी पानपट्टे (मा. उपायुक्त) :-

सध्या एकच आहे. दुसरा पंधरा दिवसात येईल.

ज्योत्सना हसनाळे :-

सार्वजनिक शौचालयाची संख्या जास्त आहे.

मा. आयुक्त :-

मी जॉईंट झाल्यानंतर एक जास्तीचे वाहन आपण मागवलेले आहे. ह्या महिन्या अखेर येऊन जाईल.

ज्योत्सना हसनाळे :-

दुरुस्त करून घ्या. आता पावसाळ्याचे दिवस आहेत. सार्वजनिक शौचालयामध्ये लोकांची संख्या जास्त आहे. ते वाहन दुरुस्त करून घ्या.

अनिल सावंत :-

मा. आयुक्त साहेब मला सांगा ज्यावेळी बजेट झाल त्यावेळी आरोग्य विभागाने यासाठी तीन कोटी मागितले होते. १२ कोटी मागितले होते. स्टॅन्डिंगने तीन कोटी दिले त्याचवेळी आम्ही सांगितले होते ह्याला पैसे वाढवून घ्या. आज मे पासून टेम्पो बंद आहेत. मे महिन्यामध्ये पाऊस नव्हता आणि आमचे पानपट्टे साहेब सांगतात की टेम्पो चालू आहेत फवारणी बंद आहे. गेल्यावेळचा ठेका कोणी घेतला. गेल्यावेळचा ठेका कधी संपला?

मा. महापौर :-

ठराव मंजूर.

प्रकरण क्र. ४७ :-

महापालिका औषध फवारणी करणेकरिता ठेकेदारामार्फत कर्मचारी घेणेबाबत

ठराव क्र. ४७ :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्रात डास नियंत्रणाखाली औषध , धुर फवारणी केली जाते . त्याकरीता ठेक्याने कर्मचारी घेतले जातात. सदरचे कर्मचारी ठेकेदाराच्या नियंत्रणाखाली असल्यामुळे त्यांचेकडून नगरसेवकांच्या व नागरीकांच्या मागणी प्रमाणे औषध, धुर फवारणी केली जात नाही त्यामुळे वारंवार तक्रारी महापालिका प्रशासनास प्राप्त होत असतात या बाबींचा विचार करता प्रायोगिक तत्वावर यावर्षी सेवाभावी संस्थांकडून डास निर्मुलनाचे काम करून घेण्याच्या दृष्टीने निविदा प्रक्रिया करण्यात यावी . त्यामध्ये सेवाभावी संस्थाना मानधन किंवा ठेका पध्दतीने कर्मचारी घेऊन औषध/धुर फवारणी करणेची कामे देण्यात यावीत व त्यामध्ये प्रत्येक वॉर्डमध्ये ४ कर्मचारी व ज्या प्रभागाचे भौगोलिक क्षेत्र मोठे आहे अशा प्रभागात आयुक्तांनी वाढीव कर्मचारी देण्यात यावे . ठेकेदाराकडून फक्त मजुर उपलब्ध करून घेवून त्यासाठी लागणारे आवश्यक यंत्र सामुग्री इ . महापालिकेने पुरवठा करावयाचा आहे . सदरचा ठेका ३ वर्षाकरीता द्यावयाचा आहे. त्याकरीता “आरोग्य साफसफाई” या लेखाशिर्षाखालून निधी उपलब्ध करून घेण्यात यावा. भविष्यात त्या लेखाशिर्षाखाली निधी कमी पडत असेल तर पुर्नविनीयोजन करून निधी उपलब्ध करून घ्यावा. याकरीता सुमारे ५ कोटी खर्चास ही मा. महासभा आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी देत आहे असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- श्री. मदन उदितनारायण सिंह

अनुमोदन :- श्रीम. सिमा शाह

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४८, फेरीवाला/ना फेरीवाला क्षेत्राचे पुर्नविलोकन करणे व धोरण ठरविणेबाबत केलेल्या

ठरावांवर पुर्नविचार करणे.

सुरेश खंडेलवाल :-

- संदर्भ :-
- 1) शासन निर्णय नगरविकास विभाग क्रं.राफेधो-0309/प्र.कं.20/नवि-34 दि.2 मार्च 2009
 - 2) महाराष्ट्र शासन नगरविकास विभाग शासन निर्णय क्रं.राफेधो-2013/प्र.क.39/नवि-34 दि.21/10/2013
 - 3) शासन निर्णयक्रं.एन.यु.एल.एम/2014/प्र.क्र.104/नवि-33 दि.28 ऑगस्ट 2014 रोजीचे पत्र
 - 4) नागरी पथविक्रेत्यांच्या अधिकारांचे रक्षण करणे आणि पथविक्रेत्यांच्या कृत्यांचे नियमन 2014 च्या अनुषंगाने “शहर फेरीवाला समिती सदस्य नियुक्ती बाबत मा. आयुक्त सो. यांची दि.04/09/2015 रोजीची मान्यता.
 - 5) महाराष्ट्र शासनाने केंद्रीय अधिनियमान्वये तयार केलेले (भाग एक, एक-अ आणि एक-ल यांमध्ये प्रसिध्द केलेले नियम व आदेश याव्यतीरीक्त) नियम व आदेश (दि.3 ऑगस्ट 2016) महाराष्ट्र पथ विक्रेता (उपजिविका संरक्षण व पथ विक्री विनियमन) (महाराष्ट्र) नियम,2016

6) IN THE HIGH COURT OF JUDICATURE AT BOMBAY ORDINARY ORIGINAL CIVIL JURISDICTION WRIT PETITION NO.652 OF 2017

मिरा भाईंदर महानगरपालिका “दीनदयाळ अंत्योदय योजना -राष्ट्रीय नागरी उपजिविका अभियानाची” अंमलबजावणी करण्यात येत आहे . “दीनदयाळ अंत्योदय योजना -राष्ट्रीय नागरी उपजिविका अभियान” (DAY-NULM) “शहरी फेरवाल्यांना सहाय्य ” उपांगांतर्गत “शहरी पथविक्रेत्यांच्या अधिकारांचे रक्षण करणे आणि पथविक्रेत्यांच्या कृत्यांचे नियमन 2014 च्या अनुषंगाने शासन निर्णय महाराष्ट्र शासन नगर विकास विभाग राफेधो -2013/प्र.क्र.39/नवि-24 दि.21 ऑक्टोबर 2013 अन्वये “राष्ट्रीय फेरीवाला धोरण 2009”लागू करण्याच्या दृष्टीने कार्यवाही करणेबाबत निर्देशाप्र माणे संदर्भिय अनुषंगाने “शहर फेरीवाला समितीवर” एकुण 30 सदस्याची आयुक्त यांच्या अध्यक्षतेखालील समिती दि .23/3/2015 पासुन एक वर्षासाठी गठीत करण्यात आलेली होती. तरी त्या समितीची रचना खालीलप्रमाणे,

| अ.क्र. | प्रवर्ग | तपशील | एकुण संख्या | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|---------|---|-------------|---------|----------------------------------|----|-------|-----------------------------|----|-------|---|----|-------|----------------|----|-------|--------------------------------------|----|-------|---|----|
| 1 | 1 | महाराष्ट्र शासनाच्या आदेशामध्ये नमुद केलेनुसार पहिल्या प्रवर्गासाठी विविध <table border="1" style="margin-left: 20px;"> <tr> <td>1)</td> <td>अध्यक्ष</td> <td>आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका</td> </tr> <tr> <td>2)</td> <td>सदस्य</td> <td>पोलिस अधिक्षक, ठाणे ग्रामीण</td> </tr> <tr> <td>3)</td> <td>सदस्य</td> <td>सहा. संचालक,नगररचना विभागातील ज्येष्ठ अधिकारी</td> </tr> <tr> <td>4)</td> <td>सदस्य</td> <td>तहसिलदार, ठाणे</td> </tr> <tr> <td>5)</td> <td>सदस्य</td> <td>पोलिस उपाध्यक्ष, वाहतुक ठाणे ग्रामीण</td> </tr> <tr> <td>6)</td> <td>सदस्य</td> <td>उप-आयुक्त, परवाना विभाग,मिरा भाईंदर महानगरपालिका सचिव</td> </tr> </table> प्रशासकीय अधिकारी असलेल्या एकुण 06 सदस्यांची समितीवर निवड | 1) | अध्यक्ष | आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका | 2) | सदस्य | पोलिस अधिक्षक, ठाणे ग्रामीण | 3) | सदस्य | सहा. संचालक,नगररचना विभागातील ज्येष्ठ अधिकारी | 4) | सदस्य | तहसिलदार, ठाणे | 5) | सदस्य | पोलिस उपाध्यक्ष, वाहतुक ठाणे ग्रामीण | 6) | सदस्य | उप-आयुक्त, परवाना विभाग,मिरा भाईंदर महानगरपालिका सचिव | 06 |
| 1) | अध्यक्ष | आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 2) | सदस्य | पोलिस अधिक्षक, ठाणे ग्रामीण | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3) | सदस्य | सहा. संचालक,नगररचना विभागातील ज्येष्ठ अधिकारी | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 4) | सदस्य | तहसिलदार, ठाणे | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 5) | सदस्य | पोलिस उपाध्यक्ष, वाहतुक ठाणे ग्रामीण | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 6) | सदस्य | उप-आयुक्त, परवाना विभाग,मिरा भाईंदर महानगरपालिका सचिव | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 2 | 2 | मिरा भाईंदर शहरातील विविध फेरीवाला संघटनांच्या प्रतिनिधींची शहर फेरीवाला समितीच्या एकुण सदस्य संख्येपैकी किमान 40% म्हणजेच 12 इतके प्रतिनिधी समिती सदस्य म्हणुन नेमणूक करण्यात येणार आहे. | 12 | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3 | 3 | मिरा भाईंदर शहरातील विविध रेसिडेन्ट वेलफेअर असोशिएशन , समुदाय आधारित संघटना (कम्युनिटीबेस ऑर्गनायझेशन) या संघटनांच्या प्रतिनिधींची शहर फेरीवाला समितीच्या एकुण सदस्य संख्येपैकी किमान 20% म्हणजेच 6 इतके प्रतिनिधी समिती सदस्य म्हणुन नेमणूक करण्यात येणार आहे. | 06 | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 4 | 4 | मिरा भाईंदर शहरातील विविध इतर नागरी (सिव्हिल) संस्था/संघटना, जशा व्यावसायिक समुहातील प्रतिनिधी जसे वकील, डॉक्टर, नगररचनाकार, आर्किटेक्ट इ. व्यापार व वाणिज्य समुहाचे प्रतिनिधी, शेड्युल्ड बँकेचे प्रतिनिधी अथवा महत्वाचे नागरिक इत्यादींचे प्रतिनिधीमधून शहर फेरीवाला समितीच्या एकुण सदस्य संख्येपैकी किमान 20% म्हणजेच 6 इतके प्रतिनिधी समिती सदस्य म्हणुन नेमणूक करण्यात येणार आहे. | 06 | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तरी संदर्भिय पत्र क्र.4 महाराष्ट्र शासनाने केंद्रीय अधिनियमान्वये तयार केलेले (भाग एक, एक-अ आणि एक-ल यांमध्ये प्रसिध्द केलेले नियम व आदेश यांन्वयतिरिक्त) नियम व आदेश (दि.3 ऑगस्ट 2016) महाराष्ट्र पथ विक्रेता (उपजीविका संरक्षण व पथ विक्री विनियमन) (महाराष्ट्र) नियम, 2016 क्र.राफेधो-2015/प्र.क्र.403/नवि-34 नगरविकास विभाग , दि.6 ऑगस्ट 2016 च्या आदेशान्वये नविन फेरीवाला समितीची रचना व कार्ये याबाबत कळविण्यात आले होते . त्याप्रमाणे उपरोक्त समिती मा . आयुक्त सा. यांच्या मंजूरीनुसार दि .22/08/2016 रोजी रद्द करण्यात आली होती . व महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग-4 अ, दि.03/08/2016 पथविक्रेता (उपजिविका संरक्षण व पथविक्री विनियमन) अधिनियम 2014 प्रकरण चार नगरपथविक्रीता समिती रचना (नियम-2) इतर मंडळे मिळुन नगरपथ विक्रेता समितीची रचना करण्यात आली होती.

| अ.क्र. | शासकीय विभाग | सदस्य संख्या |
|--------|---|--------------|
| 1 | महानगरपालिका आयुक्त -अध्यक्ष | 01 |
| 2 | पोलीस आयुक्त किंवा पोलीस अधिक्षक - सदस्य | 01 |
| 3 | विशेष नियोजन प्राधिकरणाचे कार्यकारी प्रमुख किंवा प्रतिनिधी | 01 |
| 4 | पोलीस सह - आयुक्त किंवा पोलीस उप -अधिक्षक/सहाय्यक पोलीस अधिक्षक (वाहतुक-प्रभारी अधिकारी) | 01 |
| 5 | कार्यकारी आरोग्य अधिकारी किंवा मुख्य वैद्यकिय अधिकारी | 01 |
| ख | इतर मंडळे | |
| 1 | पथ विक्रेते (यापैकी अनुसुचित जाती, अनुसुचित जमाती इतर मागास वर्ग, अल्पसंख्याक आणि विकलांग व्यक्ती) यांच्या योग्य प्रतिनिधीत्वासह एक तृतीयांश महिला विक्रेत्या असतील) | 08 |
| 2 | अशासकीय संघटना आणि सामुदाय आधारित संघटना | 02 |
| 3 | निवासी कल्याण संघ | 02 |
| 4 | व्यापारी संघाचा प्रतिनिधी | 01 |
| 5 | पणन संघाचा प्रतिनिधी | 01 |
| 6 | अग्रणी बँकेचा प्रतिनिधी | 01 |
| | एकुण | 20 |

उपरोक्त समिती अंतर्गत नगरपथविक्रेता समिती रचना (नियम-2) इतर मंडळे या घटकांतर्गत अनुक्रमांक 1 याकरीता शासननिर्णयानुसार सर्व्हेक्षण अंती निवडणूक घेवुन 8 सदस्यांची निवड करावयाची होती. अनुक्रमांक 1 वगळुन इतर मंडळे मधील घटका अंतर्गत नगरपथ विक्रेता समिती स्थापन करण्यात आलेली होती.

सदर समिती दि .10/07/2017 रोजी नगरविकास विभाग , मंत्रालय, मुंबई यांच्याकडे सदस्य नामनिर्देशनाकरिता प्रस्तावित करण्यात आली होती.

परंतु संदर्भ क्रं.6 नुसार मा. उच्च न्यायालय, मुंबई यांनी दिलेल्या आदेशान्वये फेरीवाला समिती गठीत करण्याबाबत दि.09/01/2017 रोजीचा शासन निर्णय रद्द केलेला आहे . तरी नविन “नगरपथविक्रेता समिती गठीत करण्याबाबत ” मा. उच्च न्यायालयाने 6 आठवड्यांचा कालावधी निश्चित केलेला आहे . नविन “नगरपथविक्रेता समितीची” रचना खालीलप्रमाणे,

| अ.क्र. | प्रवर्ग | तपशील | एकुण संख्या | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|------------|--|-------------|---------|--------------------------------------|----|-------|-----------------------------|----|-------|---|----|-------|----------------|----|-------|--------------------------------------|----|------------|--|----|
| 1 | 1 | ‘महाराष्ट्र शासनाच्या आदेशामध्ये नमुद केलेनुसार पहिल्या प्रवर्गासाठी विविध प्रशासकीय अधिकारी असलेल्या एकुण 06 सदस्यांची समितीवर निवड <table border="1"> <tr> <td>1)</td> <td>अध्यक्ष</td> <td>मा. आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका</td> </tr> <tr> <td>2)</td> <td>सदस्य</td> <td>पोलिस अधिक्षक, ठाणे ग्रामीण</td> </tr> <tr> <td>3)</td> <td>सदस्य</td> <td>सहा. संचालक,नगररचना विभागातील ज्येष्ठ अधिकारी</td> </tr> <tr> <td>4)</td> <td>सदस्य</td> <td>तहसिलदार, ठाणे</td> </tr> <tr> <td>5)</td> <td>सदस्य</td> <td>पोलिस उपाध्यक्ष, वाहतुक ठाणे ग्रामीण</td> </tr> <tr> <td>6)</td> <td>सदस्य सचिव</td> <td>उप-आयुक्त, परवाना विभाग,मिरा भाईंदर महानगरपालिका</td> </tr> </table> | 1) | अध्यक्ष | मा. आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका | 2) | सदस्य | पोलिस अधिक्षक, ठाणे ग्रामीण | 3) | सदस्य | सहा. संचालक,नगररचना विभागातील ज्येष्ठ अधिकारी | 4) | सदस्य | तहसिलदार, ठाणे | 5) | सदस्य | पोलिस उपाध्यक्ष, वाहतुक ठाणे ग्रामीण | 6) | सदस्य सचिव | उप-आयुक्त, परवाना विभाग,मिरा भाईंदर महानगरपालिका | 06 |
| 1) | अध्यक्ष | मा. आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 2) | सदस्य | पोलिस अधिक्षक, ठाणे ग्रामीण | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3) | सदस्य | सहा. संचालक,नगररचना विभागातील ज्येष्ठ अधिकारी | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 4) | सदस्य | तहसिलदार, ठाणे | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 5) | सदस्य | पोलिस उपाध्यक्ष, वाहतुक ठाणे ग्रामीण | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 6) | सदस्य सचिव | उप-आयुक्त, परवाना विभाग,मिरा भाईंदर महानगरपालिका | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 2 | 2 | मिरा भाईंदर शहरातील विविध फेरीवाला संघटनांच्या प्रतिनिधींची शहर फेरीवाला समितीच्या एकुण सदस्य संख्येपैकी किमान 40% म्हणजेच 12 इतके प्रतिनिधी समिती सदस्य म्हणुन नेमणूक करण्यात येणार आहे. | 12 | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3 | 3 | मिरा भाईंदर शहरातील विविध रेसिडेन्ट वे लफेअर असोशिएशन , समुदाय | 06 | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

| | | | |
|---|---|--|----|
| | | आधारीत संघटना (कम्युनिटीबेस ऑर्गनायझेशन) या संघटनाच्या प्रतिनिधींची शहर फेरीवाला समितीच्या एकुण सदस्य संख्येपैकी किमान 20% म्हणजेच 6 इतके प्रतिनिधी समिती सदस्य म्हणून नेमणूक करण्यात येणार आहे. | |
| 4 | 4 | मिरा भाईंदर शहरातील विविध इतर नागरी (सिव्हिल) संस्था/संघटना, जशा व्यावसायिक समुहातील प्रतिनिधी जसे वकील, डॉक्टर, नगररचनाकार, आर्किटेक्ट इ. व्यापार व वाणिज्य समुहाचे प्रतिनिधी, शेड्युल्ड बँकेचे प्रतिनिधी अथवा महत्वाचे नागरिक इत्यादींचे प्रतिनिधीमधून शहर फेरीवाला समितीच्या एकुण सदस्य संख्येपैकी किमान 20 % म्हणजेच 6 इतके प्रतिनिधी समिती सदस्य म्हणून नेमणूक करण्यात येणार आहे. | 06 |

तरी वरीलप्रमाणे “नगरपथ विक्रेता समिती ” गठीत करणेकामी नव्याने अर्ज मागविण्याबाबतची जाहिरात दि. 20/11/2017 रोजी महानगरपालिका संकेतस्थळावर तसेच दैनिकवृत्तपत्रात दिली असून अर्ज मागविण्याची अंतिम मुदत दि .08/12/2017 आहे. नमुद मुदतीत प्रवर्ग 2, 3 व 4 साठी अर्ज प्राप्त झाल्यानंतर एकुण 30 सदस्य असणारी फेरीवाला संघटना गठीत करण्यात येईल.

महाराष्ट्र शासन राजपत्र “अ” साधारण भाग चार अ बुधवार 3 ऑगस्ट 2016 प्रकरण चार (23) अन्वये नगर पथ विक्रेता समितीची कार्ये खालीलप्रमाणे आहेत.

नगरपथ विक्रेता समितीची कार्ये

अधिनियमाच्या इतर कोणत्याही तरतुदींना बाधा न आणता, नगर पथ विक्रेता समिती पुढील कार्ये पार पाडील :-

- 1) महानगरपालिका अधिकारितेच्या क्षेत्रांमधील पथ विक्रेते शोधून काढण्यासाठी सर्व्हे क्षण आयोजित करणे आणि तिच्या अधिकारितेच्या क्षेत्रामध्ये मानके, नियोजन आणि त्यांना धारण क्षमता यानुसार त्याच्या जागेची सुनिश्चिती करणे.
- 2) पथ विक्री प्रमाणपत्र देण्याकरीता ते पथ विक्री प्रमाणपत्र ज्या अटी व शर्तीच्या अधीनतेने देण्यात येते, त्या अटी व शर्तीचे तो पालन करीत असे वचन त्यांच्याकडून घेतल्यानंतर पात्र पथ विक्रेत्यास, पथ विक्रीचे प्रमाणपत्र देण्यासाठी पथ विक्रेता समिती, अधिनियमाच्या कलम 38 च्या पोट-कलम (1) अन्वये तयार केलेल्या योजनेमध्ये विनिर्दिष्ट केलेले निकष अनुसरील
- 3) ज्या पथ विक्रेत्याने अधिनियमान्वये किंवा नियमान्वये किंवा अधिनियमान्वये केलेल्या योजनेअन्वये, पथ विक्रीचे विनियमन करण्यासाठी विनिर्दिष्ट केलेल्या, त्याच्या कोणत्याही शर्तीचा किंवा इतर कोणत्याही अटी व शर्तीचा भंग केला असेल किंवा पथ विक्रीचे असे प्रमाणपत्र, पथ विक्रेत्याने अपवेदन किंवा लबाडी करून मिळवलेले आहे अशी नगर पथ विक्रेता समितीची खात्री पटली असेल तर, त्या पथ विक्रेत्याचे पथ विक्रीचे प्रमाणपत्र रद्द करणे किंवा निलंबित करणे. परंतु, नगर पथ विक्रेता समिती, पथ विक्रेत्याला कळविलेल्या लेखी आदेशामध्ये पथ विक्री प्रमाणपत्र रद्द किंवा निलंबित करण्याच्या कारणांचा विनिर्देश करील.
- 4) महानगरपालिकेच्या अधिकारतेमधील क्षेत्र हे पथ विक्री -मुक्त क्षेत्र म्हणून घोषित करण्यासाठी, स्थानिक प्राधिकरणास शिफारस करणे.
- 5) विक्रीकरीता ठिकाणे आणि जागा निश्चित करणे.
- 6) सार्वजनिक जागांमध्ये गर्दी होणार नाही याची सुनिश्चिती करण्यासाठी पथ विक्रीच्या वेळी विनियमित करणे.
- 7) पथ विक्रेत्यांकडून होणाऱ्या विरोधाविरुद्ध सुधारात्मक यंत्रणेच्या अंमलबजावणीची सुनिश्चिती करणे.
- 8) तक्रार निवारण व विवाद निर्णय समिती (अध्यक्ष-मा. दिवाणी न्यायाधिश किंवा मा. न्यायदंडाधिकारी असलेली व्यक्ती व सदस्य म्हणून दोन व्यवसायिक व्यक्ती) आणि स्थानिक प्राधिकरण यांच्याकडे प्रलंबित असलेल्या विवादांच्या प्रकरणांचा पाठपुरावा करणे.

- 9) पथ विक्रेत्यांच्या व्यावसायिक प्रचालनासाठी योजना तयार करण्यासंबंधात स्थानिक प्राधिकरणाला शिफारशी सादर करणे.
- 10) समितीची कार्ये प्रभावीरी त्या पार पाडण्याची सुनिश्चित करण्यासाठी , समितीच्या बैठका घेणे व यथोचित निर्णय घेणे.
- 11) अधिनियमाच्या कोणत्याही तरतुदी पार पाडताना सहाय्य किंवा सल्ला मिळविण्याकरीता शासन किंवा तात्पुरत्या तत्त्वावर असलेल्या इतर अशासकीय संघटना यांच्याकडील तांत्रिक आणि व्यावसायिक व्यक्तींची मदत घेणे.
- 12) पथ विक्रेत्याला ज्या वेळी पथ विक्रीचे प्रमाणपत्र देण्यात येणार आहे ती वेळ आणि अशा पथ विक्रीच्या प्रमाणपत्राचे केव्हा नूतनीकरण करण्यात यावे , ती वेळ आणि विहित कालमर्यादेत पार पाडावयाचे उपक्रम यांचा समावेश असलेली सनद किमान एका स्थानिक भाषेत हिंदी व इंग्रजीमधील नामांकित वृत्तपत्रांमध्ये प्रसिध्द करणे आणि नगर पथ विक्रेता समितीच्या कार्यालयात आणि नागरी स्थानिक संस्थांच्या इतर कार्यालयांमध्ये, आवश्यकतेनुसार प्रदर्शित करणे.
- 13) नोंदणीकृत पथ विक्रेत्यांचा आणि अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार ज्या कोणाला विक्रीचे प्रमाणपत्र देण्यात आले आहे त्यांच्या अद्ययावत नोंदी ठेवणे आणि असल्यास संकेतस्थळावर प्रसिध्द करणे
- 14) अधिनियमाखाली किंवा नियमाखाली अथवा त्या अन्वये केलेल्या योजनेअन्वये केलेल्या कामकाजांचे सामाजिक लेखापरिक्षण करणे.
- 15) अधिनियमान्वये आणि या नियमान्वये विहित केलेली अशी विवरणे शासनास व स्थानिक प्राधिकरणास वेळोवेळी पुरविणे.
- 16) पथ विक्रेत्यांकरीता, पतपुरवठा करणे, विमा उपलब्ध करून देणे आणि सामाजिक सुरक्षेच्या इतर कल्याणकारी योजना तयार करण्यासाठी प्रचालनात्मक उपाय हाती घेण्याकरीता शासनाकडे टिपणी सादर करणे.
- 17) अर्थव्यवस्थेमधील पथ विक्रेत्यांच्या भूमिकेसंबंधात जनतेमध्ये जाणीव जागृती करण्यासाठी शासनास सहाय्य करणे.
- 18) स्थानिक प्राधिकरणाद्वारे आणि शासनाद्वारे नगर पथ विक्रेता समितीला सोपविण्यात येतील अशी अधिनियमाच्या व या नियमांच्या प्रभावी अंमलबजावणीसाठी असतील अशी अधिनियमाच्या व या नियमांच्या प्रभावी अंमलबजावणीसाठी असतील अशी इतर कार्ये पार पाडणे.

उक्त नमुद समितीच्या कार्यानुसार पथविक्रेते सर्व्हेक्षण तसेच पथविक्री मुक्त क्षेत्र घोषित करण्यासाठी स्थानिक प्राधिकरणास शिफारस करणे ही जबाबदारी "नगरपथ विक्रेता समितीची" आहे. तसेच नगरविकास विभाग शासन निर्णय क्रं .बीएमसी-2516/प्र.क्र.1599/2016/नवि-21 दि.9 जानेवारी 2017 प्रकरण 7.1, विक्री प्रक्षेत्रे निर्धारित करण्याची तत्त्वे - नगरविक्री समिती या योजनेच्या प्रसिध्दीच्या दिनांकापासून 6 महिन्यांच्या कालावधीत विक्री प्रक्षेत्रे, रस्त्यावरील विक्रीसाठी निर्बंधित विक्री प्रक्षेत्रे आणि ना-विक्री प्रक्षेत्रे निश्चित करील आणि त्याचा तपशिल स्थानिक प्राधिकरणाच्या संकेतस्थळावर, संचालनालय नगरपरिषद यांच्या स्थानिक प्राधिकरणाकरीता असलेल्या संकेतस्थळावर , स्थानिक प्राधिकरणाच्या सुच ना फलकावर तसेच स्थानिक भाषेतील वृत्तपत्रांमध्ये प्रसिध्द करील असे शासन निर्णयात नमुद करण्यात आलेले आहे.

मिरा भाईंदर महानगरपालिका अंतर्गत "शहरी पथविक्रेत्यांच्या अधिकारांचे रक्षण करणे आणि पथविक्रेत्यांच्या कृत्याचे नियमन 2010 च्या अनुषंगाने शासन निर्णय महाराष्ट्र शासन, नगरविकास विभाग राफेधो-2013/प्र.क्रं.39/नवि-20 दि.21 ऑक्टोबर 2013 अन्वये राष्ट्रीय फेरीवाला धोरण 2009 लागू करण्याच्या दृष्टीने कार्यवाही करणेबाबत निर्देश प्राप्त आहेत

तसेच मा. उच्च न्यायालय (Writ Petition No .652 of 2017) यांनी या चिकेवर दिलेल्या आदेशाप्रमाणे "शहर फेरीवाला समिती सदस्य नियुक्ती करिता इच्छुक प्रतिनिधी कडून अर्ज मागविण्याकरीता 6 आठवड्यांची मुदत देण्यात आली होती.

मा. महासभा विषय क्रं.50 नुसार मा. महासभेसमोर फेरीवाला धोरण बाबत माहिती माहितीस्तव सादर करण्यात आली हो ती परंतु मा. महासभेने दि.08/12/2017 प्रकरण क्रं.50, ठराव क्रं.47 अन्वये फेरीवाला/ना फेरीवाला क्षेत्राचे पुर्नविलोकन करणे व धोरण ठरविणेबाबत मा. महापौर यांच्या अध्यक्षतेखाली एकुण 6 सदस्य असणारी पदाधिकारी यांची समिती तयार करण्यात आलेली आहे

| अ.क्र. | नावे | पद |
|--------|---------------------|---------|
| 1 | महापौर | अध्यक्ष |
| 2 | उप-महापौर | सदस्य |
| 3 | स्थायी समिती सभापती | सदस्य |
| 4 | सभागृहनेते | सदस्य |
| 5 | विरोधी पक्षनेते | सदस्य |
| 6 | गटनेते | सदस्य |

परंतु शासनाने 'शहरी पथविक्रेत्यांच्या अधिकाराचे रक्षण करणे आणि पथविक्रेत्यांच्या कृत्यांचे नियमन 2014 च्या अनुषंगाने शासन निर्णय महाराष्ट्र शासन नगर विकास विभाग राफेधो/2013/प्र.क्रं.39/नवि-24 दि.21 ऑक्टोबर 2013 अन्वये 'राष्ट्रीय फेरीवाला धोरण 2009' लागू करण्याबाबत निर्देश देण्यात आलेले आहेत.

तरी मा. महासभा प्रकरण क्रं.50, ठराव क्रं.47 अन्वये तयार केलेली समिती व मा. महाराष्ट्र शासनाने निर्गमित केलेली समितीची रचना यामध्ये तफावत दिसून येत आहे. तरी सदस्य नेमणूकीबाबतची सद्यस्थिती तसेच सदर ठरावावर पुर्नविचाराकरीता व ठरावामध्ये शासनाचे धोरणानुसार योग्य बदल करणेबाबतचा विषय मा. महासभेसमोर ठेवण्यास शिफारस आहे.

ठराव क्र. :-

मा. उच्च न्यायालय (Writ Petition No.652 of 2017) यांनी याचिकेवर दिलेल्या आदेशाप्रमाणे 'शहर फेरीवाला समिती सदस्य नियुक्ती करिता इच्छुक प्रतिनिधी कडून अर्ज मागविण्याची माहिती प्रशासनाने कोणत्याही सदस्यांना व पदाधिका -यांना दिली नसल्याने सदस्यांना शहर फेरीवाला सदस्या समितीत सदस्याची नावे देणे माहिती नव्हते . प्रशासनाने पुन्हा वर्तमानपत्रात जाहिरात देऊन सर्व सन्मा.सदस्य व पदाधिका-यांना अवगत करून इच्छुक प्रतिनिधीकडून अर्ज मागवून नव्याने समिती गठीत करावी असा मी ठराव मांडत आहे.

विनोद म्हात्रे :-

माझे अनुमोदन आहे.

जुबेर इनामदार :-

इथे जी समिती गठीत केली होती. महापौर, उपमहापौर ती समिती नाही चालणार असे प्रशासनाने स्पष्ट दिलेले आहे. तर आपली भूमिका काय मांडलेली आहे. मा. आयुक्त महोदय मला इतकीच माहिती द्या केलेली समिती विर्सजीत करता येईल का तुम्हाला. त्यांना आता ठराव मांडला की लोकप्रतिनिधीला त्याची माहिती देण्यात आली नव्हती. हा माझा ही आरोप आहे. मात्र आम्हाला केलेली समिती विसर्जित करता येईल का? कुठे काही त्याच्यामध्ये नियमबाह्य कृती झाली आहे का? नियमात असेल तर तुम्हाला करता येणार नाही.

मा. उपमहापौर :-

पाटील साहेब ह्या समितीचे सदस्य आहेत हे नक्की शोकांतिका अशी आहे की आपण कुठच्याच सदस्याला माहिती नसताना डॉ. नरेश गिते साहेबांनी जाहिरात काढली होती आणि त्यांनी आलेले जे सदस्य आहेत त्यांनाच घेतलेले आहे. परंतु ह्या सदस्यांचे मुदत एक वर्षापेक्षा अधिकची नसते.

मा. आयुक्त :-

मा. उपमहापौर साहेब म्हणतात तसे कायम नाही. त्याचा एक कालावधी आहे आणि ह्याच्यानंतर इलेक्शन होतात. सकाळी दिवसभर एवढे काम केले. फेरिवाल्यांबद्दल आता याच्यापुढे जे काम करायचे त्याला उलट प्रशासनाला सपोर्ट केला पाहिजे.

धृवकिशोर पाटील :-

मा. आयुक्त साहेब विषय असा आहे की ह्या दिपाली पोवार मॅडमला आम्ही गेल्या अनेक महिन्यांपासून सांगतो की मॅडम आपण ही जी समिती गठीत केलेली आहे तुम्ही जी माहिती आम्हाला दिलेली आहे ती माहिती आम्हाला अजूनपर्यंत भेटली नाही. तुम्ही ती कोणत्या वर्तमानपत्रात दिली होती त्याच्याबद्दल कोणत्याही सदस्याला तुम्ही अवगत केले नाही. त्यांना आम्ही सांगितले की तुम्ही पुन्हा एकदा नविन फ्रेश परंतु सन्मा. अधिका-यांनी हे अजिबात ऐकले नाही. आणि तुम्ही आमच्यापुढे हा ठराव दिला आणि आम्ही ऑलरेडी समिती गठीत केली होती.

मा. आयुक्त :-

हा गोषवारा माझ्या पूर्वीचाच आहे. तुमच्या माहितीसाठी सांगतो सभापती महोदय ह्यामध्ये आपण दुबारा अजून कारवाई करू त्याच्यात फार वेळ जाईल. आपण सकाळी ९ पासून अडीच तास गांभिर्याने त्याला चर्चा केली हे कामकाज करण्यासाठी आज जे सदस्य आलेले आहेत त्यांनी निर्णय क्षमतेमध्ये ते अंतिम नाही. ते शेवटी आपल्यासमोरच येणार आहे. ही शहर समिती काही सार्वभौम नाही. त्या शहर समितीसमोर जी चर्चा होती ते महासभेसमोर ठेवावे लागतात. आणि महासभाच त्याला अंतिम करते. त्यामुळे त्याला फार महत्त्व न देता त्याच्यात जे अॅक्युअली सबजेक्टेड लोक आहेत त्यांचे प्रतिनिधी त्याच्यात राहतात. आणि त्यांचे विचार त्यांच्यामध्ये समावेश करण्याची ती उच्च न्यायालयाचे आणि सर्वोच्च न्यायालयाचे प्रक्रिया आहे. आता ती प्रक्रिया पूर्ण झालेली आहे. आता ती प्रक्रिया रद्द करून दुबारा करणे फार वेळ जाईल त्याच्यात.

धृवकिशोर पाटील :-

ह्या अधिका-यांना आम्ही सांगून सांगून दमल्यानंतर सुध्दा ती अधिकारी जर समजा ऐकत नसेल आणि आपलेच म्हणणे खरं करत असेल तसा आम्ही ठराव करतो. तुम्ही तुमचा निर्णय घ्या ना. आम्ही आमचा ठराव केलेला आहे. सर आपल्या अगोदर की मुंबई महानगरपालिकेमध्ये अशाच कमिटीने असा एक ठराव केला आणि सन्मा. राज साहेब ठाकरे यांच्या घराच्या समोर त्यांना फेरिवाला क्षेत्र डिव्हेलपमेंट केला. आणि ज्यादिवशी फेरिवाले बसायला लागले त्यावेळी मनसेने आंदोलन केले आणि खूप मोठा वाद चिघळला आणि तिथे कायदा आणि सुव्यवस्थेचा प्रश्न निर्माण झाला म्हणून आम्ही सांगतो. सर ह्या शहराची जाण आम्हाला सुध्दा आहे. हे अधिकारी बाहेरून आले सर आमचा जन्म इकडचा आहे. मिरा भाईंदर शहर आमच्या समोर वाढलं.

मा. आयुक्त :-

महासभेला सोडून फेरिवाला ना फेरिवाला ही समिती निर्णय करणारच नाही म्हणून तुम्हाला सांगतो.

धृवकिशोर पाटील :-

समितीने तुम्हाला रेक्युमेन्टेशन दिले आणि ते रेक्युमेन्टेशन आम्हाला मान्य नसेल तर आमचा आवाज सुरु झाला ना. मग हा वाद संपुष्टात आणण्याकरिता आम्ही आमचे सजेशन दिले आहे की तुम्ही पुन्हा फक्त एकदाच जी तुम्ही अॅडव्हर्टाईजमेंट दिली आहे ती तुम्ही पुन्हा काढा. जे ऐकत नसेल तर काय मतलब आमचा. सर आम्ही ठराव केलेला आहे आणि आम्ही त्या मताशी ठाम आहोत आणि असे असेल तर ह्या अधिका-यांना बडतर्फ करण्याचा ठराव मांडतो. जर ते आमचे म्हणणे ऐकत नसतील तर काय मतलब आम्ही काही चुकीचे सांगतो का? साहेब आम्ही सकाळचे दोन तास चर्चा केली आणि काय म्हटलं आहे ज्या ना फेरिवाला क्षेत्रामध्ये जे फेरिवाले असतात त्यांच्यावरती कारवाई करा. तो जो ठराव आहे २००७, २००८ ला मंजूर झालेला आहे.

मा. आयुक्त :-

तो ठराव कायम आहे. त्या ठरावात काही बदल नाही.

धृवकिशोर पाटील :-

तेव्हाची व्यथा वेगळी होती आणि आजची व्यथा वेगळी आहे. आम्ही ठराव केलेला आहे आणि आम्ही या मताशी ठाम आहोत. आम्ही म्हटलं आहे जर हे अधिकारी ऐकत नसतील तर ह्या अधिका-याला निलंबित करा असा मी ठराव मांडत आहे.

जुबेर इनामदार :-

थोडक्यात केलेली समिती, प्रशासनाची भूमिका अशी आहे मा. आयुक्त तुमची की केलेली समिती ही नियमित आहे. विधीवत आहे.

मा. आयुक्त :-

सभापती महोदयाचा इश्यू असा आहे की जी समिती झालेली आहे ती थोडी पारदर्शक झालेली नाही आणि त्यामध्ये सगळ्या लोकांना त्याचा अवेरनेस नाही. आणि काही लोकांनी त्याच्यात भाग घेतला. खूप लोकांना ह्याच्यात भाग घेण्यापासून वंचित राहिल्यात हा त्यांचा आक्षेप आहे. जी झालेली समिती आहे त्याला आक्षेप नाही.

जुबेर इनामदार :-

ही खरी परिस्थिती आहे. मी ह्यांच्या मताशी ठाम आहे की त्या पारदर्शक पध्दतीने काम नाही झालं. मात्र झालेली समिती आता तुम्हाला गठीत करता येईल का?

मा. आयुक्त :-

आम्ही तपासून घेऊ. प्रशासनाकडून मा. न्यायालयाचे काय निर्णय आहेत. शासनाचे काय आदेश आहेत हे तपासून नियमानुसार काम केले जाईल.

जुबेर इनामदार :-

धृवकिशोर पाटीलजी तुम्हाला विरोधक ठराव मलाही करायची इच्छा नाही. तुम्ही त्याच्यामध्ये तसे उल्लेख करा. मा. आयुक्तांना अधिकार देता येत असेल तर विसर्जित करा असा तुम्ही करा.

मा. आयुक्त :-

तुम्ही जी समिती झालेली आहे ती विसर्जित करून एकमताने नव्याने करण्याचे सभागृह एकमताने निर्णय करते असा ठराव करा. कायद्याची परिस्थिती तपासून नियमाने आयुक्तांनी कारवाई करावी.

प्रशांत दळवी :-

मा. महापौर मॅडम आपल्या परवानगीने बोलतो, मा. आयुक्त महोदय सकाळपासून दोन अडीच तास ह्या फेरिवाल्यांच्या विषयात चर्चा झाली त्याअनुषंगाने मी म्हणतो की हा जो विषय दिला आपण ह्याच्यामध्ये आठ पानांचा गोषवारा दिलेला आहे आणि त्यामध्ये फेरिवाला ना फेरिवाला क्षेत्राचे पुर्नविलोकन करायचे. आता आपले धोरणच निश्चित होणार नाही सभागृहामध्ये तर आपण त्याला काम करणार ह्या ठिकाणी ०८/१२२०१७ ला आपण मंजुरी दिलेली आहे. अॅक्च्युअली मग ही जी मंजुरी दिली होती ती रद्द करण्यांत आली का? ठराव ऑलरेडी झालेला आहे. ८/१२/२०१७ ला ठराव झालेला आहे. आणि प्रत्येक वेळेला ज्यावेळेला हा विषय येतो फेरिवाल्यांवर कारवाई करण्याचा त्यावेळेला राईटींगमध्ये मा. आयुक्तांच्या सहीनिशी पत्र देण्यात येते की फेरिवाला धोरण निश्चित झालेले नाही. त्यामुळे सध्या कारवाई करता येणार नाही असा स्पष्ट लिखित आहे. उदया आम्ही पण पत्र दिल्यानंतर तोच प्रकार घडणार आहे का? सभागृहात आम्ही ठरावाला मंजुरी देतो आणि तो ठरावच मंजूर होणार नसेल तर मा. आयुक्त महोदय इकडे आरडाओरड करून काहीच फायदा नाही. ये रे माझ्या मागल्याप्रमाणे तेच होणार आहे. शेवटी ह्या फेरिवाला ना फेरिवाला क्षेत्र हे पुर्नविलोकन करायचा आहे. तो भाग आणि आपण जी उदयापासून जी कारवाई चालू करणार आहेत तो भाग हा वेगवेगळा आहे का?

मा. आयुक्त :-

२००८-०९ मध्ये ह्या महासभेने फेरिवाला ना फेरिवाला, पार्किंग नो पार्किंग जे अंतिम केलेले आहे त्याला कोणतीही बाधा नाही. त्याची अंमलबजावणी करता येते. आता कशी लेखी दिलेली आहे ते तपासून घेतो.

प्रशांत दळवी :-

मा. आयुक्त महोदय त्याची जर अंमलबजावणी आपण जर २००८ ला ठरावानुसार करत असणार तर फेरिवाला वाढले कुटून.

मा. आयुक्त :-

मागे प्रशासनाने जो गोषवारा दिला होता त्याच्या विसंगत तो ठराव झाला होता सदस्यांचा म्हणून कायद्यामध्ये ज्या बाबी आहेत ते टाकून दुरुस्ती करण्यासाठी हा पुर्नविलोकनासाठी आपल्यासमोर सादर केलेला आहे.

प्रशांत दळवी :-

मा. आयुक्त महोदय महापौर मॅडम आपल्याला विनंती आहे जोपर्यंत २००८ मध्ये ह्या महासभेमध्ये ठराव झाल्यानुसार आपण कारवाई करावी.

मा. आयुक्त :-

ठीक आहे. त्यांनी म्हटल्याप्रमाणे फायनल करा.

जुबेर इनामदार :-

मा. आयुक्त साहेब हा विषय सुप्रीम कोर्टचा सर्वोच्च न्यायालयाचा विषय आहे. ज्यांनी समिती तयार केली ते सदस्य ही जाणार आहेत न्यायालयामध्ये.

मा. आयुक्त :-

ते सदस्य तर राहतीलच त्यांना काढताच येणार नाही आपल्याला जास्तीचे कसे घ्यायचे ते बघितले जाईल. जे आलेले आहेत त्यांना काढता येत नाही. जे जास्तीचे घेण्याबद्दलचे आहे ते तपासून आम्ही निश्चित करू.

जुबेर इनामदार :-

संख्या निश्चित तुम्ही आणि मी केलेली नाही.

मा. आयुक्त :-

ज्यावेळी काम करताना पारदर्शकता असली पाहिजे. उदया समजा आलेले अर्ज तुम्ही रिजेक्ट केलात आणि नव्याने घेतलात तर तो कोर्टात जाईल. त्याचा हक्क डावलला जाईल ह्या स्वहक्काचा.

धृवकिशोर पाटील :-

सर तो सदस्य जोपर्यंत कन्फम होत नाही तोपर्यंत त्याला आम्ही कन्फम करत नाही. आणि तोपर्यंत तुम्ही त्याला कन्फम करत नाही. त्या सदस्यांनी फक्त अर्ज केलेला आहे. सर तो अर्ज अॅक्सेप्ट करायचा अधिकार तुमचा आहे. तो आमचा आहे. सर तो त्याचा नाही. त्यांनी फक्त अर्ज केलेला आहे.

मा. आयुक्त :-

ती प्रशासकीय कामकाजाची बाबत आहे. धोरणात्मकचा निर्णय नाही. ते आयुक्त स्वतः त्याच्या पावरमध्ये पाहतील. ज्यांच्यावर अन्याय झालेला आहे. त्यांना ह्याच्यात कसे सामावलं जाईल ह्याच्याबद्दलचा हा विषय आहे.

धृवकिशोर पाटील :-

ठीक आहे साहेब मग तो विषय पुन्हा तुम्हाला इथे आणायची गरज नव्हती. तुम्ही आम्हाला विषय दिलेला आहे.

मा. आयुक्त :-

हा गोषवारा मी जॉईड होण्याच्या पूर्वीचा आहे. त्याच्यामध्ये मला माहिती नाही.

धृवकिशोर पाटील :-

तुमचे असे मत आहे की हा गोषवारा चुकीचा आहे.

मा. आयुक्त :-

नाही असे कुठे म्हटले आहे. मी असे म्हटले की हा गोषवारा पूर्वीचा आहे.

धृवकिशोर पाटील :-

पूर्वीचा जरी आहे तरी सर आता तुम्ही मा. आयुक्त आहेत. आयुक्तांची बदली झाली.

मा. आयुक्त :-

मी तुमची एक बाजू मान्य करतो. सभागृहाची काही लोकप्रतिनिधीला जे काही याच्यात रुची आहे काम करण्याची.

जुबेर इनामदार :-

स्विकृत सदस्य होऊ शकत नाही. ३० सदस्यांची समिती आहे आणि तुम्ही ती गठीत केली ह्याच्या पलिकडे आता दुसरी घुसवाघुसवी कुठून करणार.

मा. आयुक्त :-

ते आम्ही तपासून घेऊ.

धृवकिशोर पाटील :-

नाही ते पॉसिबल होऊच शकत नाही. तुम्ही एखादी जाहिरात काढल्यानंतर जे सदस्यांनी अर्ज दिले आहेत आणि समजा तीन सदस्य असतील पाच सदस्य असतील, दोन सदस्य असतील त्यांनी जर अर्ज दिला आणि ते दोन सदस्य आलेत तर तुम्ही आणखी दुसरे सदस्य अतिरिक्त घेऊ शकत नाही. त्याच्यामुळे ही जी समिती पारदर्शकता झाली नाही.

मा. आयुक्त :-

विशेष बाब म्हणून शासनाची त्याला मान्यता घेऊ.

धृवकिशोर पाटील :-

परत साहेब हे लांब प्रोसेस करण्यापेक्षा सिंपल सर उदयाच जाहिरात काढा. ४ दिवसांची मुदत द्या आणि नव्याने समिती गठीत करा. प्रश्न मिटला ना सर.

मा. उपमहापौर :-

ह्या सभागृहाच एकमत आहे का?

जुबेर इनामदार :-

आमचा नाही. आमचा तुमची शीतबुद्धी ऐकायची आहे. समिती विसर्जित करू शकता का?

धृवकिशोर पाटील :-

ठराव दिल्यानंतर जो ठराव बहुमताच्या जोरावर मंजूर होईल त्याच्यावरच कारवाई होईल ना.

जुबेर इनामदार :-

त्याला ४५१ खाली विखंडीत करून आणता येईल तुम्हाला.

धृवकिशोर पाटील :-

मा. आयुक्त साहेब करेल ना.

जुबेर इनामदार :-

नियमबाह्य ठराव तुम्ही मान्य कराल का?

मा. आयुक्त :-

अॅनॅलीटीकल चर्चा नको. हा आपली पहिली चर्चा झाली आहे. आपण शेवटी अॅनॅलीटीकल चर्चेला येतो. माझी विनंती अशी आहे सभागृहाने पारदर्शक एकमताने निर्णय करावा. प्रशासन नियमानुसार कारवाई केली जाईल. ह्या उपर आपल्याला जे निर्णय करायचे आपले ओपन अधिकार आहेत. तुम्ही निर्णय करा कायद्याच्या परिश्रेणीमध्ये आम्ही त्याची अंमलबजावणी करू.

जुबेर इनामदार :-

साहेब शासनाकडे तुम्ही १०/७ ला नगरविकास विभागाला आपली केलेली समितीचा पत्रव्यवहार सुध्दा झालेले आहे. शासनाचे आदेशानुसार ३० लोकांची सदस्य समिती स्थापित झाली. तुम्ही महासभेसमोर मंजूरीसाठी विषय दिला होता. महासभेसमोर तो विषय दिल्यानंतर त्या समितीचे सदस्यांना मंजूरी नाही देत. दुसरी एक समिती गठीत करण्यात आली ती नियमबाह्य आहे. करताच येत नाही. त्याला अर्थ नाही ना काही. तुम्हाला ती विसर्जित करता आली नाही. तर मग ह्याचा अर्थ तसा आहे नियमाचा भाग आहे. केलेले काम प्रशासनाने योग्य रितीने केलेला आहे. आम्हाला त्याची जाणीव नव्हती. ते आम्हाला जाणीव देण्यात आली नाही. तो चर्चेचा भाग झाला होता.

अनिल सावंत :-

मा. महापौर मॅडम, मा. आयुक्त साहेब आणि त्यामध्ये अस आहे २०/११ ला ही नगरपद विक्रेता समिती गठीत करण्याकामी सांकेतिक स्थळावर माहिती देण्यात आली होती. स्थानिक वृत्तपत्रामध्ये जाहिरात देण्यात आली होती. ८ डिसेंबरपर्यंत अर्ज मागवण्यांत आले होते. त्यामुळे आम्हाला माहिती नाही असे होऊ शकत नाही. म्हणून ही समिती विसर्जित करा. तुम्ही जो गोषवारा दिलेला आहे. ही समितीला आमची मान्यता आहे.

जुबेर इनामदार :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका प्रशासनाने योग्यरित्या नियमात ही समिती गठित करून प्रस्तावित केलेली आहे. त्याला आम्ही मान्यता देत आहोत आणि दि. ०८/०२/२०१७, प्रकरण क्र. ५०, ठराव क्र. ४७ अन्वये फेरिवाला ना-फेरिवाला क्षेत्रात पुर्नविलोकन करून नविन समिती जी गठित करण्यात आलेली आहे त्याला रद्द करण्यात येत आहे असा मी ठराव मांडत आहे.

हरिश्चंद्र आमगावकर :-

माझे अनुमोदन आहे.

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४८ करिता दोन ठराव आलेले आहे. पहिला ठराव सुचक श्री. सुरेश खंडेलवाल, अनुमोदन श्री. विनोद म्हात्रे. दुसरा ठराव सुचक श्री. जुबेर इनामदार, अनुमोदन श्री. हरिश्चंद्र आमगावकर. प्रथम मी दुसरा ठराव मतदानासाठी पुकारतो. सुचक श्री. जुबेर इनामदार यांनी मांडलेल्या ठरावाच्या बाजूने ज्यांना मतदान करायचे असेल त्यांनी हात वर करायचे आहे. ह्या ठरावाच्या विरोधात असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत. तटस्थ कोणी असेल त्यांनी हात वर करायचे आहेत. सुचक श्री. सुरेश खंडेलवाल यांनी मांडलेल्या ठरावाच्या बाजूने ज्यांना मतदान करायचे असेल त्यांनी हात वर करायचे आहे. ह्या ठरावाच्या विरोधात असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत. तटस्थ कोणी असेल त्यांनी हात वर करायचे आहेत.

मा. महापौर :-

श्री. सुरेश खंडेलवाल यांनी मांडलेल्या ठरावाच्या बाजूने ५०, विरोधात २५, तटस्थ ० इतकी मते पडलेली आहेत. श्री. सुरेश खंडेलवाल यांनी मांडलेला ठराव बहुमताने मंजूर करण्यांत येत आहे.

प्रकरण क्र. ४८ :-

फेरीवाला/ना फेरीवाला क्षेत्राचे पुर्नविलोकन करणे व धोरण ठरविणेबाबत केलेल्या ठरावांवर पुर्नविचार करणे.

ठराव क्र. ४८ :-

- संदर्भ :- 1) शासन निर्णय नगरविकास विभाग क्रं.राफेधो-0309/प्र.कं.20/नवि-34 दि.2 मार्च 2009
2) महाराष्ट्र शासन नगरविकास विभाग शासन निर्णय क्रं.राफेधो-2013/प्र.क.39/नवि-34 दि.21/10/2013
3) शासन निर्णयक्रं.एन.यु.एल.एम/2014/प्र.क्र.104/नवि-33 दि.28 ऑगस्ट 2014 रोजीचे पत्र
4) नागरी पथविक्रेत्यांच्या अधिकारांचे रक्षण करणे आणि पथविक्रेत्यांच्या कृत्यांचे नियमन 2014 च्या अनुषंगाने "शहर फेरीवाला समिती सदस्य नियुक्ती बाबत मा. आयुक्त सो. यांची दि.04/09/2015 रोजीची मान्यता.
5) महाराष्ट्र शासनाने केंद्रीय अधिनियमांन्वये तयार केलेले (भाग एक, एक-अ आणि एक-ल यांमध्ये प्रसिध्द केलेले नियम व आदेश याव्यतीरीक्त) नियम व आदेश (दि.3 ऑगस्ट 2016) महाराष्ट्र पथ विक्रेता (उपजिविका संरक्षण व पथ विक्री विनियमन) (महाराष्ट्र) नियम,2016
6) IN THE HIGH COURT OF JUDICATURE AT BOMBAY ORDINARY ORIGINAL CIVIL JURISDICTION WRIT PETITION NO.652 OF 2017

मिरा भाईंदर महानगरपालिका "दीनदयाळ अंत्योदय योजना -राष्ट्रीय नागरी उपजिविका अभियानाची" अंमलबजावणी करण्यात येत आहे. "दीनदयाळ अंत्योदय योजना -राष्ट्रीय नागरी उपजिविका अभियान" (DAY-NULM) "शहरी फेरवाल्यांना सहाय्य" उपांगांतर्गत "शहरी पथविक्रेत्यांच्या अधिकारांचे रक्षण करणे आणि पथविक्रेत्यांच्या कृत्यांचे नियमन 2014 च्या अनुषंगाने शासन निर्णय महाराष्ट्र शासन नगर विकास विभाग राफेधो-2013/प्र.क्र.39/नवि-24 दि.21 ऑक्टोबर 2013 अन्वये "राष्ट्रीय फेरीवाला धोरण 2009"लागू करण्याच्या दृष्टीने कार्यवाही करणेबाबत निर्देशाप्रमाणे संदर्भिय अनुषंगाने "शहर फेरीवाला समितीवर" एकुण 30 सदस्याची आयुक्त यांच्या अध्यक्षतेखालील समिती दि.23/3/2015 पासून एक वर्षासाठी गठीत करण्यात आलेली होती. तरी त्या समितीची रचना खालीलप्रमाणे,

| अ.क्र. | प्रवर्ग | तपशील | एकुण संख्या | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|------------|--|-------------|---------|----------------------------------|----|-------|-----------------------------|----|-------|---|----|-------|----------------|----|-------|--------------------------------------|----|------------|--|----|
| 1 | 1 | महाराष्ट्र शासनाच्या आदेशामध्ये नमुद केलेनुसार पहिल्या प्रवर्गासाठी विविध प्रशासकीय अधिकारी असलेल्या एकुण 06 सदस्यांची समितीवर निवड <table border="1"><tr><td>1)</td><td>अध्यक्ष</td><td>आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका</td></tr><tr><td>2)</td><td>सदस्य</td><td>पोलिस अधिक्षक, ठाणे ग्रामीण</td></tr><tr><td>3)</td><td>सदस्य</td><td>सहा. संचालक,नगररचना विभागातील ज्येष्ठ अधिकारी</td></tr><tr><td>4)</td><td>सदस्य</td><td>तहसिलदार, ठाणे</td></tr><tr><td>5)</td><td>सदस्य</td><td>पोलिस उपाध्यक्ष, वाहतुक ठाणे ग्रामीण</td></tr><tr><td>6)</td><td>सदस्य सचिव</td><td>उप-आयुक्त, परवाना विभाग,मिरा भाईंदर महानगरपालिका</td></tr></table> | 1) | अध्यक्ष | आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका | 2) | सदस्य | पोलिस अधिक्षक, ठाणे ग्रामीण | 3) | सदस्य | सहा. संचालक,नगररचना विभागातील ज्येष्ठ अधिकारी | 4) | सदस्य | तहसिलदार, ठाणे | 5) | सदस्य | पोलिस उपाध्यक्ष, वाहतुक ठाणे ग्रामीण | 6) | सदस्य सचिव | उप-आयुक्त, परवाना विभाग,मिरा भाईंदर महानगरपालिका | 06 |
| 1) | अध्यक्ष | आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 2) | सदस्य | पोलिस अधिक्षक, ठाणे ग्रामीण | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3) | सदस्य | सहा. संचालक,नगररचना विभागातील ज्येष्ठ अधिकारी | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 4) | सदस्य | तहसिलदार, ठाणे | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 5) | सदस्य | पोलिस उपाध्यक्ष, वाहतुक ठाणे ग्रामीण | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 6) | सदस्य सचिव | उप-आयुक्त, परवाना विभाग,मिरा भाईंदर महानगरपालिका | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 2 | 2 | मिरा भाईंदर शहरातील विविध फेरीवाला संघटनांच्या प्रतिनिधींची शहर फेरीवाला समितीच्या एकुण सदस्य संख्येपैकी किमान 40% म्हणजेच 12 इतके प्रतिनिधी समिती सदस्य म्हणून नेमणूक करण्यात येणार आहे. | 12 | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3 | 3 | मिरा भाईंदर शहरातील विविध रेसिडे न्ट वेलफेअर असोशिएशन , समुदाय आधारीत | 06 | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

| | | | |
|---|---|---|----|
| | | संघटना(कम्युनिटीबेस ऑर्गनायझेशन) या संघटनाच्या प्रतिनिधींची शहर फेरीवाला समितीच्या एकुण सदस्य संख्येपैकी किमान 20% म्हणजेच 6 इतके प्रतिनिधी समिती सदस्य म्हणून नेमणूक करण्यात येणार आहे. | |
| 4 | 4 | मिरा भाईंदर शहरातील विविध इतर नागरी (सिव्हिल) संस्था/संघटना, जशा व्यावसायिक समुहातील प्रतिनिधी जसे वकील, डॉक्टर, नगररचनाकार, आर्किटेक्ट इ. व्यापार व वाणिज्य समुहाचे प्रतिनिधी, शेड्युल्ड बँकेचे प्रतिनिधी अथवा महत्वाचे नागरिक इत्यादींचे प्रतिनिधीमधून शहर फेरीवाला समितीच्या एकुण सदस्य संख्येपैकी किमान 20% म्हणजेच 6 इतके प्रतिनिधी समिती सदस्य म्हणून नेमणूक करण्यात येणार आहे. | 06 |

तरी संदर्भिय पत्र क्र .4 महाराष्ट्र शासनाने केंद्रीय अधिनियमान्वये तयार केलेले (भाग एक, एक-अ आणि एक-ल यांमध्ये प्रसिध्द केलेले नियम व आदेश यांव्यतिरिक्त) नियम व आदेश (दि.3 ऑगस्ट 2016) महाराष्ट्र पथ विक्रेता (उपजीविका संरक्षण व पथ विक्री विनियमन) (महाराष्ट्र) नियम, 2016 क्र.राफेधो-2015/प्र.क्र.403/नवि-34 नगरविकास विभाग, दि.6 ऑगस्ट 2016 च्या आदेशान्वये नविन फेरीवाला समितीची रचना व कार्ये याबाबत कळविण्यात आले हो ते. त्याप्रमाणे उपरोक्त समिती मा . आयुक्त साो . यांच्या मंजूरीनुसार दि.22/08/2016 रोजी रद्द करण्यात आली होती . व महाराष्ट्र शासन राजपत्र असाधारण भाग -4 अ, दि.03/08/2016 पथविक्रेता (उपजिविका संरक्षण व पथविक्री विनियमन) अधिनियम 2014 प्रकरण चार नगरपथविक्रीता समिती रचना (नियम-2) इतर मंडळे मिळून नगरपथ विक्रेता समितीची रचना करण्यात आली होती.

| अ.क्र. | शासकीय विभाग | सदस्य संख्या |
|--------|---|--------------|
| 1 | महानगरपालिका आयुक्त -अध्यक्ष | 01 |
| 2 | पोलीस आयुक्त किंवा पोलीस अधिक्षक - सदस्य | 01 |
| 3 | विशेष नियोजन प्राधिकरणाचे कार्यकारी प्रमुख किंवा प्रतिनिधी | 01 |
| 4 | पोलीस सह - आयुक्त किंवा पोलीस उप -अधिक्षक/सहाय्यक पोलीस अधिक्षक (वाहतुक-प्रभारी अधिकारी) | 01 |
| 5 | कार्यकारी आरोग्य अधिकारी किंवा मुख्य वैद्यकिय अधिकारी | 01 |
| ख | इतर मंडळे | |
| 1 | पथ विक्रेते (यापैकी अनुसुचित जाती, अनुसुचित जमाती इतर मागास वर्ग, अल्पसंख्याक आणि विकलांग व्यक्ती) यांच्या योग्य प्रतिनिधीत्वासह एक तृतीयांश महिला विक्रेत्या असतील) | 08 |
| 2 | अशासकीय संघटना आणि सामुदाय आधारीत संघटना | 02 |
| 3 | निवासी कल्याण संघ | 02 |
| 4 | व्यापारी संघाचा प्रतिनिधी | 01 |
| 5 | पणन संघाचा प्रतिनिधी | 01 |
| 6 | अग्रणी बँकेचा प्रतिनिधी | 01 |
| | एकुण | 20 |

उपरोक्त समिती अंतर्गत नगरपथविक्रेता समिती रचना (नियम-2) इतर मंडळे या घटकांतर्गत अनुक्रमांक 1 याकरीता शासननिर्णयानुसार सर्व्हेक्षण अंती निवडणूक घेवुन 8 सदस्यांची निवड करावयाची होती . अनुक्रमांक 1 वगळुन इतर मंडळे मधील घटका अंतर्गत नगरपथ विक्रेता समिती स्थापन करण्यात आलेली होती.

सदर समिती दि .10/07/2017 रोजी नगरविकास विभाग , मंत्रालय, मुंबई यांच्याकडे सदस्य नामनिर्देशनाकरिता प्रस्तावित करण्यात आली होती.

परंतु संदर्भ क्रं.6 नुसार मा. उच्च न्यायालय, मुंबई यांनी दिलेल्या आदेशान्वये फेरीवाला समिती गठीत करण्याबाबत दि.09/01/2017 रोजीचा शासन निर्णय रद्द केलेला आहे. तरी नविन “नगरपथविक्रेता समिती गठीत करण्याबाबत” मा. उच्च न्यायालयाने 6 आठवड्यांचा कालावधी निश्चित केलेला आहे . नविन “नगरपथविक्रेता समितीची” रचना खालीलप्रमाणे,

| अ.क्र. | प्रवर्ग | तपशील | एकुण संख्या | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|------------|--|-------------|---------|--------------------------------------|----|-------|-----------------------------|----|-------|--|----|-------|----------------|----|-------|--------------------------------------|----|------------|---|----|
| 1 | 1 | ‘महाराष्ट्र शासनाच्या आदेशामध्ये नमुद केलेनुसार पहिल्या प्रवर्गासाठी विविध प्रशासकीय अधिकारी असलेल्या एकुण 06 सदस्यांची समितीवर निवड <table border="1"> <tr> <td>1)</td> <td>अध्यक्ष</td> <td>मा. आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका</td> </tr> <tr> <td>2)</td> <td>सदस्य</td> <td>पोलिस अधीक्षक, ठाणे ग्रामीण</td> </tr> <tr> <td>3)</td> <td>सदस्य</td> <td>सहा. संचालक, नगररचना विभागातील ज्येष्ठ अधिकारी</td> </tr> <tr> <td>4)</td> <td>सदस्य</td> <td>तहसिलदार, ठाणे</td> </tr> <tr> <td>5)</td> <td>सदस्य</td> <td>पोलिस उपाध्यक्ष, वाहतुक ठाणे ग्रामीण</td> </tr> <tr> <td>6)</td> <td>सदस्य सचिव</td> <td>उप-आयुक्त, परवाना विभाग, मिरा भाईंदर महानगरपालिका</td> </tr> </table> | 1) | अध्यक्ष | मा. आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका | 2) | सदस्य | पोलिस अधीक्षक, ठाणे ग्रामीण | 3) | सदस्य | सहा. संचालक, नगररचना विभागातील ज्येष्ठ अधिकारी | 4) | सदस्य | तहसिलदार, ठाणे | 5) | सदस्य | पोलिस उपाध्यक्ष, वाहतुक ठाणे ग्रामीण | 6) | सदस्य सचिव | उप-आयुक्त, परवाना विभाग, मिरा भाईंदर महानगरपालिका | 06 |
| 1) | अध्यक्ष | मा. आयुक्त, मिरा भाईंदर महानगरपालिका | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 2) | सदस्य | पोलिस अधीक्षक, ठाणे ग्रामीण | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3) | सदस्य | सहा. संचालक, नगररचना विभागातील ज्येष्ठ अधिकारी | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 4) | सदस्य | तहसिलदार, ठाणे | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 5) | सदस्य | पोलिस उपाध्यक्ष, वाहतुक ठाणे ग्रामीण | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 6) | सदस्य सचिव | उप-आयुक्त, परवाना विभाग, मिरा भाईंदर महानगरपालिका | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 2 | 2 | मिरा भाईंदर शहरातील विविध फेरीवाला संघटनांच्या प्रतिनिधींची शहर फेरीवाला समितीच्या एकुण सदस्य संख्येपैकी किमान 40% म्हणजेच 12 इतके प्रतिनिधी समिती सदस्य म्हणून नेमणूक करण्यात येणार आहे. | 12 | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3 | 3 | मिरा भाईंदर शहरातील विविध रेसिडेन्ट वेलफेअर असोशिएशन, समुदाय आधारीत संघटना(कम्युनिटीबेस ऑर्गनायझेशन) या संघटनांच्या प्रतिनिधींची शहर फेरीवाला समितीच्या एकुण सदस्य संख्येपैकी किमान 20% म्हणजेच 6 इतके प्रतिनिधी समिती सदस्य म्हणून नेमणूक करण्यात येणार आहे. | 06 | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 4 | 4 | मिरा भाईंदर शहरातील विविध इतर नागरी (सिव्हिल) संस्था/संघटना, जशा व्यावसायिक समुहातील प्रतिनिधी जसे वकील, डॉक्टर, नगररचनाकार, आर्किटेक्ट इ. व्यापार व वाणिज्य समुहाचे प्रतिनिधी, शेड्युल्ड बँकेचे प्रतिनिधी अथवा महत्वाचे नागरिक इत्यादींचे प्रतिनिधीमधून शहर फेरीवाला समितीच्या एकुण सदस्य संख्येपैकी किमान 20% म्हणजेच 6 इतके प्रतिनिधी समिती सदस्य म्हणून नेमणूक करण्यात येणार आहे. | 06 | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

तरी वरीलप्रमाणे “नगरपथ विक्रेता समिती” गठीत करणेकामी नव्याने अर्ज मागविण्याबाबतची जाहिरात दि. 20/11/2017 रोजी महानगरपालिका संकेतस्थळावर तसेच दैनिकवृत्तपत्रात दिली असुन अर्ज मागविण्याची अंतिम मुदत दि.08/12/2017 आहे. नमुद मुदतीत प्रवर्ग 2, 3 व 4 साठी अर्ज प्राप्त झाल्यानंतर एकुण 30 सदस्य असणारी फेरीवाला संघटना गठीत करण्यात येईल.

महाराष्ट्र शासन राजपत्र “अ” साधारण भाग चार अ बुधवार 3 ऑगस्ट 2016 प्रकरण चार (23) अन्वये नगर पथ विक्रेता समितीची कार्ये खालीलप्रमाणे आहेत.

नगरपथ विक्रेता समितीची कार्ये

अधिनियमाच्या इतर कोणत्याही तरतुदींना बाधा न आणता, नगर पथ विक्रेता समिती पुढील कार्ये पार पाडील :-

- 1) महानगरपालिका अधिकारितेच्या क्षेत्रामधील पथ विक्रेते शोधून काढण्यासाठी सर्व्हेक्षण आयोजित करणे आणि तिच्या अधिकारितेच्या क्षेत्रामध्ये मानके, नियोजन आणि त्यांना धारण क्षमता यानुसार त्याच्या जागेची सुनिश्चिती करणे.
- 2) पथ विक्री प्रमाणपत्र देण्याकरीता ते पथ विक्री प्रमाणपत्र ज्या अटी व शर्तीच्या अधीनतेने देण्यात येते, त्या अटी व शर्तीचे तो पालन करित असे वचन त्यांच्याकडून घेतल्यानंतर पात्र पथ विक्रेत्यास, पथ विक्रीचे प्रमाणपत्र देण्यासाठी पथ विक्रेता समिती, अधिनियमाच्या कलम 38 च्या पोट-कलम (1) अन्वये तयार केलेल्या योजनेमध्ये विनिर्दिष्ट केलेले निकष अनुसरील.
- 3) ज्या पथ विक्रेत्याने अधिनियमान्वये किंवा नियमान्वये किंवा अधिनियमान्वये केलेल्या योजनेअन्वये, पथ विक्रीचे विनियमन करण्यासाठी विनिर्दिष्ट केलेल्या, त्याच्या कोणत्याही शर्तीचा किंवा इतर कोणत्याही अटी व शर्तीचा भंग केला असेल किंवा पथ विक्रीचे असे प्रमाणपत्र, पथ विक्रेत्यांने अपवेदन किंवा लबाडी

करून मिळवलेले आहे अशी नगर पथ विक्रेता समितीची खात्री पटली असेल तर , त्या पथ विक्रेत्याचे पथ विक्रीचे प्रमाणपत्र रद्द करणे किंवा निलंबित करणे . परंतु, नगर पथ विक्रेता समिती , पथ विक्रेत्याला कळविलेल्या लेखी आदेशामध्ये पथ विक्री प्रमाणपत्र रद्द किंवा निलंबित करण्याच्या कारणांचा विनिर्देश करील.

- 4) महानगरपालिकेच्या अधिकारतेमधील क्षेत्र हे पथ विक्री -मुक्त क्षेत्र म्हणून घोषित करण्यासाठी, स्थानिक प्राधिकरणास शिफारस करणे.
- 5) विक्रीकरीता ठिकाणे आणि जागा निश्चित करणे.
- 6) सार्वजनिक जागांमध्ये गर्दी होणार नाही याची सुनिश्चिती करण्यासाठी पथ विक्रीच्या वेळी विनियमित करणे.
- 7) पथ विक्रेत्यांकडून होणाऱ्या विरोधाविरुद्ध सुधारात्मक यंत्रणेच्या अंमलबजावणीची सुनिश्चिती करणे.
- 8) तक्रार निवारण व विवाद निर्णय समिती (अध्यक्ष-मा. दिवाणी न्यायाधिश किंवा मा . न्यायदंडाधिकारी असलेली व्यक्ती व सदस्य म्हणून दोन व्यवसायिक व्यक्ती) आणि स्थानिक प्राधिकरण यांच्याकडे प्रलंबित असलेल्या विवादांच्या प्रकरणांचा पाठपुरावा करणे.
- 9) पथ विक्रेत्यांच्या व्यावसायिक प्रचालनासाठी योजना तयार करण्यासंबंधात स्थानिक प्राधिकरणाला शिफारशी सादर करणे.
- 10) समितीची कार्ये प्रभावीरीत्या पार पाडण्याची सुनिश्चित करण्यासाठी , समितीच्या बैठका घेणे व यथोचित निर्णय घेणे.
- 11) अधिनियमाच्या कोणत्याही तरतुदी पार पाडताना सहाय्य किंवा सल्ला मिळविण्याकरीता शासन किंवा तात्पुरत्या तत्त्वावर असलेल्या इतर अशासकीय संघटना यांच्याकडील तांत्रिक आणि व्यावसायिक व्यक्तींची मदत घेणे.
- 12) पथ विक्रेत्याला ज्या वेळी पथ विक्रीचे प्रमाणपत्र देण्यात येणार आहे ती वेळ आणि अशा पथ विक्रीच्या प्रमाणपत्राचे केव्हा नूतनीकरण करण्यात यावे , ती वेळ आणि विहित कालमर्यादेत पार पाडावयाचे उपक्रम यांचा समावेश असलेली सनद किमान एका स्थानिक भाषेत हिंदी व इंग्रजीमधील नामांकित वृत्तपत्रांमध्ये प्रसिध्द करणे आणि नगर पथ विक्रेता समितीच्या कार्यालयात आणि नागरी स्थानिक संस्थांच्या इतर कार्यालयांमध्ये, आवश्यकतेनुसार प्रदर्शित करणे.
- 13) नोंदणीकृत पथ विक्रेत्यांचा आणि अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार ज्या कोणाला विक्रीचे प्रमाणपत्र देण्यात आले आहे त्यांच्या अद्ययावत नोंदी ठेवणे आणि असल्यास संकेतस्थळावर प्रसिध्द करणे.
- 14) अधिनियमाखाली किंवा नियमाखाली अथवा त्या अन्वये केलेल्या योजनेअन्वये केलेल्या कामकाजांचे सामाजिक लेखापरिक्षण करणे.
- 15) अधिनियमान्वये आणि या नियमान्वये विहित केलेली अशी विवरणे शासनास व स्थानिक प्राधिकरणास वेळोवेळी पुरविणे.
- 16) पथ विक्रेत्यांकरीता , पतपुरवठा करणे , विमा उपलब्ध करून देणे आणि सामाजिक सुरक्षेच्या इतर कल्याणकारी योजना तयार करण्यासाठी प्रचालनात्मक उपाय हाती घेण्याकरीता शासनाकडे टिपणी सादर करणे.
- 17) अर्थव्यवस्थेमधील पथ विक्रेत्यांच्या भूमिकेसंबंधात जनतेमध्ये जाणीव जागृती करण्यासाठी शासनास सहाय्य करणे.
- 18) स्थानिक प्राधिकरणाद्वारे आणि शासनाद्वारे नगर पथ विक्रेता समितीला सोपविण्यात येतील अशी अधिनियमाच्या व या नियमांच्या प्रभावी अंमलबजावणीसाठी असतील अशी अधिनियमाच्या व या नियमांच्या प्रभावी अंमलबजावणीसाठी असतील अशी इतर कार्ये पार पाडणे.

उक्त नमुद समितीच्या कार्यानुसार पथविक्रेते सर्व्हेक्षण तसेच पथविक्री मुक्त क्षेत्र घोषित करण्यासाठी स्थानिक प्राधिकरणास शिफारस करणे ही जबाबदारी “नगरपथ विक्रेता समितीची ” आहे. तसेच नगरविकास विभाग शासन निर्णय क्रं .बीएमसी-2516/प्र.क्र.1599/2016/नवि-21 दि.9 जानेवारी 2017 प्रकरण 7.1, विक्री प्रक्षेत्रे निर्धारित करण्याची तत्त्वे - नगरविक्री समिती या योजनेच्या प्रसिध्दीच्या दिनांकापासून 6 महिन्यांच्या कालावधीत विक्री प्रक्षेत्रे , रस्त्यावरील विक्रीसाठी निर्बंधित विक्री प्रक्षेत्रे आणि ना -विक्री प्रक्षेत्रे निश्चित करील आणि त्या चा तपशिल स्थानिक प्राधिकरणाच्या संकेतस्थळावर , संचालनालय नगरपरिषद यांच्या स्थानिक

प्राधिकरणाकरीता असलेल्या संकेतस्थळावर, स्थानिक प्राधिकरणाच्या सुचना फलकावर तसेच स्थानिक भाषेतील वृत्तपत्रामध्ये प्रसिध्द करील असे शासन निर्णयात नमूद करण्यात आलेले आहे.

मिरा भाईंदर महानगरपालिका अंतर्गत "शहरी पथविक्रेत्यांच्या अधिकारांचे रक्षण करणे आणि पथविक्रेत्यांच्या कृत्यांचे नियमन 2010 च्या अनुषंगाने शासन निर्णय महाराष्ट्र शासन, नगरविकास विभाग राफेधो-2013/प्र.क्र.39/नवि-20 दि.21 ऑक्टोबर 2013 अन्वये राष्ट्रीय फेरीवाला धोरण 2009 लागू करण्याच्या दृष्टीने कार्यवाही करणेबाबत निर्देश प्राप्त आहेत.

तसेच मा. उच्च न्यायालय (Writ Petition No .652 of 2017) यांनी याचिकेवर दिलेल्या आदेशाप्रमाणे "शहर फेरीवाला समिती सदस्य नियुक्ती करिता इच्छुक प्रतिनिधी कडून अर्ज मागविण्याकरी ता 6 आठवड्यांची मुदत देण्यात आली होती.

मा. महासभा विषय क्रं.50 नुसार मा. महासभेसमोर फेरीवाला धोरण बाबत माहिती माहितीस्तव सादर करण्यात आली होती परंतु मा. महासभेने दि.08/12/2017 प्रकरण क्रं.50, ठराव क्रं.47 अन्वये फेरीवाला/ना फेरीवाला क्षेत्राचे पुर्ण विलोकन करणे व धोरण ठरविणेबाबत मा. महापौर यांच्या अध्यक्षतेखाली एकुण 6 सदस्य असणारी पदाधिकारी यांची समिती तयार करण्यात आलेली आहे.

| अ.क्र. | नावे | पद |
|--------|---------------------|---------|
| 1 | महापौर | अध्यक्ष |
| 2 | उप-महापौर | सदस्य |
| 3 | स्थायी समिती सभापती | सदस्य |
| 4 | सभागृहनेते | सदस्य |
| 5 | विरोधी पक्षनेते | सदस्य |
| 6 | गटनेते | सदस्य |

परंतु शासनाने "शहरी पथविक्रेत्यांच्या अधिकारांचे रक्षण करणे आणि पथविक्रेत्यांच्या कृत्यांचे नियमन 2014 च्या अनुषंगाने शासन निर्णय महाराष्ट्र शासन नगर विकास विभाग राफेधो /2013/प्र.क्र.39/नवि-24 दि.21 ऑक्टोबर 2013 अन्वये "राष्ट्रीय फेरीवाला धोरण 2009" लागू करण्याबाबत निर्देश देण्यात आलेले आहेत.

तरी मा. महासभा प्रकरण क्र.50, ठराव क्र.47 अन्वये तयार केलेली समिती व मा. महाराष्ट्र शासनाने निर्गमित केलेली समितीची रचना यामध्ये तफावत दिसून येत आहे. तरी सदस्य नेमणूकीबाबतची सद्यस्थिती तसेच सदर ठरावावर पुर्णविचाराकरीता व ठरावामध्ये शासनाचे धोरणानुसार योग्य बदल करणेबाबतचा विषय मा. महासभेसमोर ठेवण्यास शिफारस आहे.

ठराव क्र.:-

मा. उच्च न्यायालय (Writ Petition No .652 of 2017) यांनी याचिकेवर दिलेल्या आदेशाप्रमाणे "शहर फेरीवाला समिती सदस्य नियुक्ती करिता इच्छुक प्रतिनिधी कडून अर्ज मागविण्याची माहिती प्रशासनाने कोणत्याही सदस्यांना व पदाधिका -यांना दिली नसल्याने सदस्यांना शहर फेरीवाला सदस्या समितीत सदस्याची नावे देणे माहिती नव्हते. प्रशासनाने पुन्हा वर्तमानपत्रात जाहिरात देऊन सर्व सन्मा. सदस्य व पदाधिका -यांना अवगत करून इच्छुक प्रतिनिधीकडून अर्ज मागवून नव्याने समिती गठीत करावी असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- श्री. सुरेश खंडेलवाल

अनुमोदक :- श्री. विनोद म्हात्रे

| अ.क्र. | ठरावाच्या बाजूने | अ.क्र. | ठरावाच्या विरोधात | तटस्थ |
|--------|-------------------------|--------|-----------------------------|-------|
| १ | मेहता डिंपल विनोद | १ | भोईर राजू यशवंत | निरंक |
| २ | वैती चंद्रकांत सिताराम | २ | आमगावकर हरिश्चंद्र रामचंद्र | |
| ३ | पाटील धृवकिशोर मन्साराम | ३ | पाटील प्रविण मोरेश्वर | |
| ४ | गेहलोत हसमुख मोहनलाल | ४ | परेरा कॅटलीन एन्थोनी | |
| ५ | जैन गीता भरत | ५ | नलावडे दिनेश दगडु | |
| ६ | पाटील प्रभात प्रकाश | ६ | शिर्के अनंत गोणू | |
| ७ | सिंह मदन उदितनारायण | ७ | शेख अशरफ मोहम्मद इब्राहीम | |

| | | | |
|----|-----------------------------|----|--------------------------|
| ८ | यादव मिरादेवी रामलाल | ८ | मेहरा राजीव ओमप्रकाश |
| ९ | हसनाळे ज्योत्सना जालींदर | ९ | सावंत अनिल दिवाकर |
| १० | गोहिल शानू जोरावर सिंह | १० | इनामदार जुबेर अब्दुल्ला |
| ११ | डॉ. पाटील प्रिती जयप्रकाश | ११ | पाटील जयंतीलाल गुरुनाथ |
| १२ | भोईर सुनिता शशिकांत | १२ | घरत तारा विनायक |
| १३ | पाटील वंदना मंगेश | १३ | पाटील अनिता जयवंत |
| १४ | मोकाशी दिपाली आनंदराव | १४ | गोविंद हेलन जॉर्जी |
| १५ | जैन सुनिता रमेश | १५ | गुप्ता कुसुम संतोष |
| १६ | अरोरा दीपिका पंकज | १६ | भोईर भावना राजू |
| १७ | नाईक विविता विवेक | १७ | डिसा मर्लिन मर्विन |
| १८ | भावसार वंदना संजय | १८ | सपार उमा विश्वनाथ |
| १९ | बेलानी हेमा राजेश | १९ | परदेशी गिता हरीश |
| २० | भोईर विणा सुर्यकांत | २० | सय्यद नुरजाहॉ नाझर हुसेन |
| २१ | सोनार सुरेखा प्रकाश | २१ | पाटील वंदना विकास |
| २२ | मुखर्जी अनिता बबलू | २२ | पाटील संध्या प्रफुल्ल |
| २३ | शिंदे रुपाली वसंत (मोदी) | २३ | अहमद साराह अकरम |
| २४ | म्हात्रे परशुराम पदमाकर | २४ | बगाजी शर्मिला विन्सन्ट |
| २५ | म्हात्रे मोहन गोपाळ | २५ | बांड्या एलायस दुमिंग |
| २६ | शाह राकेश रतिशचंद्र | | |
| २७ | शेड्डी अरविंद आनंद | | |
| २८ | सिंग श्रीप्रकाश जिलेदार | | |
| २९ | तिवारी अशोक सूर्यदेव | | |
| ३० | अग्रवाल सुशील गोपीकिशन | | |
| ३१ | भूपताणी रक्षा सतीश (शाह) | | |
| ३२ | शाह सीमाबेन कमलेश | | |
| ३३ | रकवी वैशाली गर्जेंद्र | | |
| ३४ | कांगणे मीना यशवंत | | |
| ३५ | परमार हेतल रतिलाल | | |
| ३६ | दळवी प्रशांत ज्ञानदेव | | |
| ३७ | म्हात्रे विनोद काशिनाथ | | |
| ३८ | भोईर जयेश भानुदास | | |
| ३९ | शेड्डी गणेश गोपाळ | | |
| ४० | थेराडे संजय अनंत | | |
| ४१ | राय विजयकुमार सिस्थन नारायण | | |
| ४२ | विराणी अनिल रावजीभाई | | |
| ४३ | जैन दिनेश तेजराज | | |
| ४४ | गजरे दौलत तुकाराम | | |
| ४५ | मांजरेकर आनंद दत्ताराम | | |
| ४६ | कासोदारिया अश्विन शामजीभाई | | |
| ४७ | दुबे मनोज रामनारायण | | |
| ४८ | खंडेलवाल सुरेश जगदीश | | |
| ४९ | भोईर गणेश गजानन | | |
| ५० | पारधी सुजाता यशवंत | | |

ठराव बहुमताने मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४९, मा. महासभा दि. २६/०२/२०१८ रोजीच्या ठराव क्र .८४ अन्वये पारित केलेल्या जाहिरात विभागाच्या ठरावातील मुद्दा क्र.२ व ३ याबाबत पुर्न:विचार करुन निर्णय घेणे व सन २०१८-१९ या आर्थिक वर्षापासून नव्याने जाहिरात दर व नियोजन करणेकामी एजेन्सी नियुक्त करणेबाबत धृवकिशोर पाटील :-

महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम २४४,२४५,३८६ आणि ३९२ अन्वये व मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका (जाहिरात व फलक नियंत्रण) नियम २००३ अन्वये जाहिराती व आकाशचिन्ह इत्यादींवर नियंत्रण करण्याची तरतुद आहे. त्याअनुषंगे मिरा भाईंदर क्षेत्रातील जाहिरातीच्या (विविध भागात होर्डिंग (आकाशचिन्ह), कमानी, व्यापारी आस्थापनेवरील जाहिराती, दुकानांवरील जाहिरात फलक व अन्य प्रकारच्या जाहिराती) वाढ होण्याच्या दृष्टीने मा. स्थायी समिती ठराव क्र .४३, दि.२९/०२/२००८ व मा. महासभा ठराव क्र .३५, दि.१९/०३/२००८ अन्वये जाहिरात फी चे दरपत्रकास मंजूरी देण्यात आली आहे . यानंतर जाहिरातीचे दर वाढविण्यात आ लेले नाहीत . याकरीता मा. स्थायी समिती सभा दि.११/०७/२०१४ प्र.क्र.२८, ठराव क्र.२८ जाहिरात प्रकरण मध्ये दरवाढीस मंजूरी दिलेली आहे . त्यास मा. महासभा दि.१९/०७/२०१४, ठराव क्र .२७ ने दरास मंजूरी दिलेली आहे . त्या दरामध्ये दि .०१/०४/२०१६ ते ३१/०३/२०१७, दि.०१/०४/२०१७ ते दि.३१/०३/२०१८, दि.०१/०४/२०१८ ते दि.३१/०३/२०१९ या प्रत्येक आर्थिक वर्षात १० टक्के वाढ करुन त्याप्रमाणे जाहिरातीचे दर निश्चित करुन आकारणी करण्यात यावी.

- १) ज्या जाहिरातदाराकडून वर निश्चित केलेल्या दरापेक्षा कमी आकारणी केली असेल त्यांच्याकडून मागील थकबाकी वसुल करण्यात यावी.
 - २) संबंधीत ठेकेदारास ८ दिवसाची मुदत देवून जाहिरात थकबाकी त्यांचेकडून वसुल करावी जर ठेकेदार थकबाकी जमा करत नसेल तर त्यांनी लावलेली होर्डिंग जप्त करुन ठेकेदाराचा ठेका रद्द करण्यात यावा.
 - ३) मा. महासभा दि.१९/०७/२०१४, ठराव क्र.२७ ने मंजूर केलेल्या ठरावावर ज्या अधिकाऱ्याने अंमलबजावणी केली नसेल त्यांचेवर कडक कारवाई करुन गुन्हा दाखल करुन जाहिरातीची थकबाकी त्यांचेकडून वसुल करण्यात यावी.
 - ४) मा. महासभा दि. २६/०२/२०१८ ठराव क्र. ८४ ने मंजूर केलेल्या प्रस्ताव अॅन्टी करप्शन विभागाकडे पाठवून त्याचा पाठपुरावा करावा.
 - ५) यापूर्वी ज्या निविदा जुन्या दराने काढण्यात आलेल्या आहेत , ज्या निविदांना अंतिम मंजूरी मिळालेली नाही व कामाचे आदेश काढण्यात आलेले नाहीत अशा सर्व निविदा नामंजूर करुन नविन दराने फेरनिविदा काढण्यात याव्यात.
- तरी मिरा भाईंदर महानगरपालिका जाहिरात दरावर वर निश्चित केलेल्या दराप्रमाणे कर आकारणी करण्यात यावी असा मी ठराव मांडत आहे.

हसमुख गेहलोत :-

माझे अनुमोदन आहे.

मा. महापौर :-

ठराव मंजूर. पुढचा विषय घ्या. माझे अर्जट काम आहे म्हणून बाहेर जात आहे. सभा उपमहापौर चालवतील.

अनिल सावंत :-

उपमहापौर साहेब, मा. पिठासीन अधिकारी आजचा जो विषय आलेला आहे. २६/२/२०१८ ला जो ठराव झाला होता ठराव नं. ८४ त्यातील मुद्दा क्र. २ व ३ याबाबत पुर्नविचार करुन निर्णय घेणे. साहेब तो जो ठराव बघितला असेल तर त्या ठरावामध्ये शेवटचा पॅराग्राफ वाचतो. चेकनाका ते फाऊंटन हॉटेल व प्राईम लोकेशनमधील खाजगी जागेतील होर्डिंगचे दर मार्केटमध्ये सर्वात महाग असून महापालिकेतर्फे सर्वात कमी दरात म्हणजे १६ रु. प्रति चौ. फुट आकारण्यात येत आहे. प्रास्ताविक हे दर वाढवणे गरजेचे आहे. कमी दर वाढवल्यामुळे नुकतेच जाहिरातीची निविदा प्रशासनाने काढली असता महापालिकेने ठरवलेल्या रक्कमेपेक्षा दुप्पटीने त्याहून अधिक वाढीव रक्कमेची निविदा प्राप्त झाली असे आढळून दिसते. प्रशासनाने ठेकेदारांचा जास्तीत जास्त फायदा व्हावा व महापालिकेचे नुकसान व्हावे यामध्ये मोठा भ्रष्टाचार झाला असेल. महापालिकेचे करोडो रुपयांचे नुकसान झाल्यामुळे मा. महापौरांनी संबंधित सर्व अधिकाऱ्यांची चौकशी करण्यासंबंधी मा. मुख्यमंत्री लाच लुचपत विभाग तसेच आर्थिक गुन्हे शाखा यांना पत्र द्यावे व मा. आयुक्त यांनी संपूर्ण सेवेतील खाजगी जागेचा अभ्यास करुन सुधारीत ठराव मंजूरी येईपर्यंत आता हा जो

महत्वाचा विषय साहेब हा ठराव २६/०२/२०१८ आणि आज तारीख आहे २६/७/२०१८ म्हणजे पाच महिने झाले. या ठरावामध्ये जरा ठराव चुकीचा होता तर तो विखंडीत करायला पाठवायचा होता आणि जर ह्या ठरावाच्या अंमलबजावणी केली तर माझी अशी प्रशासनाला विचारणा आहे की ह्या ठरावामध्ये म्हटल्याप्रमाणे कुठचे कुठचे अधिकारी भ्रष्ट आहेत आणि त्यांच्यावर काय कारवाई केली प्रशासनाने ह्याचे उत्तर द्यावे. त्यामध्ये एकतर हा ठराव चुकीचा आहे. प्रशासन स्वच्छ आहे हा आरोप केलेला चुकीचा आहे. म्हणून त्यावर काही कारवाई झाली नाही.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

मा. सदस्य अनिल सावंत साहेब आपण संपूर्ण टिप्पणीच व्यवस्थीत अध्ययन केले असेल तर हा नेहमी वादाचाच विषय राहिला कारण पूर्वी आपण ज्या ह्यांना होर्डिंग्जना मान्यता दिली होती. त्यांच्याकडचे जे रक्कम त्यांचे भाडे ठरलेले ते एका जागेवरच राहिल आणि महापालिकेनेनंतर काढलेले भाडे आहे ते सातत्याने त्याच्यात वाढ होत चालली. आपला विचार असा आहे की आता त्याच्यामध्ये सुधारणा ही झाली पाहिजे. फीजची वाढ झाली पाहिजे आणि त्या दोघांमध्ये समानता यायला पाहिजे. हे प्राईम लोकेशन आहेत त्याचे भाडे महापालिकेला तो कमी लाभ मिळतो आणि तो व्यापाऱ्याला मोठा फायदा मिळतो.

अनिल सावंत :-

पण साहेब ते प्रशासन करणार आहे का? हाच माझा मुद्दा आहे. त्या ठरावाच्या अनुषंगाने आता जो प्रशासनाने गोषवारा दिलेला आहे. त्याच्यामुळे त्यांचे म्हणणेच नाही. त्या २०१४ च्या पूर्वीच्याच ठरावाला चिकटून आहेत. २००८ च्या दराला आणि त्यानंतर जो आयुक्तानी प्रस्ताव दिला होता. जो महापालिकेने स्विकारला नाही २०१४ मध्ये त्याला ते चिकटून आहेत अजूनही आणि आता जो परत आत जो ठराव केला मा. धृवकिशोर पाटील साहेबांनी त्या ठरावामध्ये पालिकेचे उत्पन्न वाढावे. त्या दृष्टीकोनाने होर्डिंग्ज देण्याकरिता आहे आणि त्यांनी जो प्रस्ताव दिलेला आहे. त्याच्यामध्ये समिती गठीत करावी आणि अभ्यास करावा असा आहे व पालिका आपण जो फेब्रुवारीमध्ये ठराव केला होता त्याच्यावर कारवाई काहीच झालेली नाही.

धृवकिशोर पाटील :-

पिठासीन अधिकारी साहेब विषय असा आहे की सन २००२ च्या आसपास आपल्या शहरामध्ये सगळ्या ठिकाणी होर्डिंग्ज लागायला लागले आणि महापालिकेने काही लोकांना परमिशन दिली. खाजगी काही ठिकाणी टेंडर काढले. ज्यावेळी खाजगी जागेमध्ये होर्डिंग्ज उभारण्याकरिता काही लोकांनी परमिशन मागितली त्यावेळी एक दर प्रशासनाने ठेवून दिला आणि आपल्या जागेमध्ये आपण ज्यावेळी होर्डिंग्ज उभारल्या आणि त्याचे टेंडर काढले त्या दोघांच्या दरामध्ये समानता होती हे दर थोडासे कमी होते आणि महापालिकेचे टेंडर काढलेले त्याचे दर जास्त होते. कालांतराने टेंडरची मुदत पाच वर्षांची असते, तीन वर्षांची असते. टेंडर संपले की प्रशासन पुन्हा नविन टेंडर काढते आणि नविन टेंडर काढताना १० टक्के किंवा १५ टक्के वाढ करते. त्याप्रमाणे ही वाढ होत होती आणि खाजगी जागेवरती जे फलक उभारले आहेत त्याची वाढ झाली नाही. आज मिरा भाईंदर शहरामध्ये जे काशिमिरा रस्त्यावरती असतील किंवा इंटर रस्त्यावरती असतील या अशा होर्डिंग्जच्या आजचे दर समजा अप्रॉक्सीमेटली २० ते २५ हजार आहेत. पण चेक नाक्यापासून ते फाऊंटन हॉटेलपर्यंत जे खाजगी जागेमध्ये होर्डिंग्ज उभारलेत ना साहेब त्यांचे दर आजच्या तारखेमध्ये एक एक लाख, दीड दीड लाख दोन दोन लाख रुपये घेतात. पर मन्थ आणि त्यांचा दर फक्त १६ मी. चौ.फुट आणि आपल्या इकडचे दर जास्त आहे. आणि त्याच्यामुळे ही एक समानता व्हायला पाहिजे. परंतु प्रशासनाने त्याच्यावरती लक्ष दिलं नाही. त्याच्यानंतर २००८ मध्ये आपण एक दर निश्चित केला. सुरुवातीला २००२ मध्ये दर निश्चित केला त्याच्यानंतर २००८ ला दर निश्चित केला आणि २००८ च्या नंतर ह्या लोकांनी दर निश्चितच नाही केला. मग २०१४ च्या महासभेमध्ये “ज” च्या प्रस्तावान्वये आपण एक नविन दर महासभेने सुचवला. आणि तो दर कायम करायला सांगितला परंतु प्रशासनाने त्या दराचा इम्प्लीमेंटेशन न करता पुन्हा त्याच ठेकेदाराला कन्टीन्युशन दिलं आणि काही ठिकाणी त्यांनी टेंडर काढलं. परंतु ते रेट ग्राह्य धरला नाही. पुन्हा त्यांनी काय केल एक महासभेला प्रस्ताव सादर केला आणि तो ९० दिवसात अॅक्सेप्ट नाही केले म्हणून तो डीम मंजूर करुन तो पुन्हा त्यांनी हे केल आणि साहेब आज तुम्ही बघितलं की आता जे म्हटल आहे ह्याच्यामध्ये की दुप्पट रक्कम आली. दुप्पट ते तिप्पट रक्कम आली साहेब महापालिकेच्या अधिकाऱ्याने एखादी रक्कम ठरवली आणि कॉन्ट्रॅक्टरने ती रक्कम दुप्पट आणि तिप्पट रक्कम वाढवली. ह्याच्यात तर ह्यांची बेसक चुकीची आहे. जर बेसक बरोबर असली तर त्यांनी आता टेंडर भरल असतं किंवा १० टक्क्यानी वाढवली. पण साहेब दुप्पट तिप्पट ह्याचा अर्थ काय आमच म्हणणे तेच आहे साहेब की प्रशासनाने हा विषय गंभीरतेने घेतला नाही आणि काही सेटलमेंट केली. काही ठेकेदारांना आणि काही खाजगी लोकांना त्यांनी फेर केल आणि

त्याच्यामुळे महापालिकेचे नुकसान झाले म्हणून आमचे मत होते की तुम्ही जाहिरातीचे दर याचे धोरण ठरवा. परंतु हे आजही धोरण ठरवत नाही पुन्हा पुन्हा तेच साहेब आज आपण २६/२/२०१८ ला ठराव पारित केला. आज २६/७/२०१८ म्हणजे जवळ जवळ पाच महिने होऊन गेले. अजूनपर्यंत ह्या ठरावावरती इम्प्लीमेंटेशन पारित करत नाही म्हणजे ह्या लोकांना महापालिकेच्या नुकसानाची किती पडली आहे बघा. फक्त नुकसान व्हायला पाहिजे आणि साहेब दुसरी गोष्ट ही जर त्यांना वाटते की दुप्पट तिप्पट रक्कम आलेली आहे म्हणजे आपण कुठेतरी चुकतो. साहेब ते गांभिर्याने विचार करत नाही. तरी आपण त्यांना २६ तारखेच्या मिटींगमध्ये ठराव पण पास केला की प्रायव्हेट जागेचे जे होर्डिंग्ज आहेत त्यांच्या दरामध्ये तुम्ही काहीतरी आणखीन वाढ करा. पण साहेब त्यांच्या वरती प्रशासनाने अजिबात कारवाई केलेली नाही. पण साहेब ह्यांच्यावरती कारवाई झाली पाहिजे की नाही आणि म्हणून साहेब आम्ही हा ठराव आणलेला आहे.

जुबेर इनामदार :-

पिठासीन अधिकारी तुमच्या मान्यतेने, विषय जाहिरातीचा आहे की स्वतःच्या इगोचा आहे तो स्पष्ट झाला नाही. २००८ मध्ये महापालिकेने ठरवलेले दर ह्याच्यामध्ये जेव्हा जेव्हा नविन निविदा मागवायच्या असतात तेव्हा त्या प्रशासन नैसर्गिक वाढ अपेक्षित ठरवून निविदा प्रक्रिया पूर्ण करते. ठेकेदारांना योग्य त्यांना जे दर निश्चित करायचे ते त्या हिशोबांनी ते ठेका घ्यायचा प्रयत्न करतात. अशाच प्रकारे ह्या ही कारवाई होत गेली मात्र २०१४ मध्ये “ज” चा प्रस्ताव ह्या सभागृहामध्ये मांडला गेला. ज चा प्रस्ताव होता विषय पालिकेच्या हितामधला होता. अभ्यासपूर्वक अभ्यास नव्हता त्याच्याकडे गोषवारा नव्हता पालिकेच्या हिताचा आहे सर्वानुमते मंजूरी दिली. बहुमतानेही झालेला. ह्याच्यामध्ये सध्या जे जाहिरातीचे दर आहेत त्याच्यापेक्षा ६०० ते १२०० टक्क्याने हे दर जास्त होते म्हणजे अवतीभवती असलेले महानगरपालिकेची माहिती उपलब्ध करून घेतल्यानुसार जसे विरार, भिवंडी, निजामपूर, कल्याण डोंबिवली आजचे दर महानगरपालिकेच्या आजचे दर आपल्याकडे आहेत. ते योग्य आहेत फक्त २०१४ चा “ज” च्या प्रस्तावाला प्रशासनाने मान्यता दिली नाही म्हणून हा विषय ताणून धरणे हा योग्य नाही. मा. आयुक्तांनी आपला गोषवारा नंतरच्या सभागृहामध्ये दिला होता. सचिव महोदयांना रितसर पत्रव्यवहार केला जाहिरात विभागाने केलेला आहे. आयुक्तांचा गोषवारा आहे त्याला तत्कालीन अच्युत हांगे साहेबांचा गोषवारा आहे. २०१४ चा त्याच्यामध्ये परत फेरप्रस्ताव सादर केला होता. महासभेच्या मंजूरीसाठी मात्र तो विषय विषयपटलावर घेण्यात आला नाही. कारण तो अधिकार महापौरांचा आहे. विषयपटलावर कुठले विषय घ्यायचे किंवा नाही घ्यायचे तरी प्रशासनाला प्राप्त अधिकारात महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम त्या प्राप्त अधिकारात प्रशासनाने मानीव अधिकार ९० दिवसांमध्ये तो विषय घेतला गेला नाही. स्थानिक अधिकारात तो विषय मंजूर करून घेतला आणि त्या अनुषंगाने कारवाई केली आणि त्याच्यानंतर योग्य पध्दतीने शासनाला तो अवगत केले कुठेही विखंडित करायला पाठवलेला नाही. सभापती महोदय कारण हा विषय पहिल्यांदा मी अभ्यास केला म्हणून मला ही थोडसं पाने उलटली त्याची विखंडित करण्यासाठी पाठवलेला नाही. हा विषय सभागृहासमोर आला ते २६ तारेखला ठराव करण्यात आला त्याच्यावर ताशोरे ओढण्यात आले. प्रशासनाची चुकीची भूमिका ४-५ मुद्दे उपस्थित करण्यात आले. प्रशासनामध्ये भ्रष्टाचार झालेला आहे. ह्या विषयामध्ये भ्रष्टाचार झाला तर तुम्हाला तो सिध्द करावा लागेल. भ्रष्टाचार कसल्या स्वरूपात आहे हा जो प्रचलित दर आहे त्याच्यापेक्षा जास्त कुठे मागायला गेलात तर निविदाकार येणार नाही. स्पर्धा झाली पाहिजे. स्पर्धा होण्यासाठी अशाप्रकारे प्रशासन भूमिका घेणार. स्पर्धा झाली जास्त दरांनी लोकांनी भरलं. अतिउत्तम चांगली गोष्ट आहे ७ तारखेच्या स्थायी समितीमध्ये ह्याच महिन्याच्या तीन गोषवारे घेतले. जाहिरात विभागाचे होर्डिंग्जचे होते बाकीचे अजून जाहिरात विभागाचे होते. स्थायी समितीने परत ह्याच २०१४ चा उल्लेख करून ठरावामध्ये तो विषय फेटाळला. २०१४ चा केलेल्या ठरावाप्रमाणे कारवाई करण्यात यावी. एकावेळी कारवाई झालेली आहे आणि कुठलाही ठराव सभापती महोदय पिठासीन अधिकारी साहेब अनुभवी आहेत. तुम्ही ठराव झाल्यानंतर तीन महिन्यांच्या नंतर त्याच्यामध्ये रद्द बदल करायचा असेल किंवा नविन पध्दतीने त्याच्यामध्ये नविन धोरण ठरवायचे असेल तर प्रशासनाला अधिकार आहे. प्रशासनाने तो अधिकार पूर्णपणे पूर्ण केला. रितसर तुमच्याकडे गोषवारा दिला. जाहिरात विभागाने मा. आयुक्तांचा त्याला मान्य केलं नाही. त्यांना प्राप्त अधिकार त्यांनी ते मानीव अधिकारात करून घेतले तर प्रशासन चुकले कुठे?

धृवकिशोर पाटील :-

म्हणजे हा जो विषय आला आहे तो कुठला इगोसाठी आला आहे की कशासाठी आला आहे.

जुबेर इनामदार :-

साहेब २०१४ ला आम्ही मंजूरी दिली. आमचा सगळ्यांचा इगो आहे तो सर्वानुमते झाला आहे.

धृवकिशोर पाटील :-

हा इगो आहे की नाही ह्याचे उत्तर देणे मला क्रमप्राप्त आहे साहेब तुम्ही जो आरोप केला आहे. सर विषय असा आहे. दुसरा निर्णय असा आहे की ९० दिवसांमध्ये प्रस्ताव मा. महापौरांनी घेतला नसल्यामुळे हा डीम मंजूर केला. ९० दिवसांमध्ये प्रशासनाने जो गोषवारा दिला पिठासीन अधिकारी साहेब यांचा असा आरोप आहे की ९० दिवसांमध्ये जो गोषवारा दिला होता प्रशासनाने तो गोषवारा या महापौरांनी अॅक्सेप्ट केला नाही. आणि म्हणून यांनी मंजूर केला का अॅक्सेप्ट नाही केला माहित आहे का. महापालिकेचे आर्थिक नुकसान होईल कारण की त्याच्यामध्ये दर होते ते कमी होते. तो प्रशासनाने गोषवारा दिला होता त्याच्यामध्ये दर कमी होते आणि म्हणून दर कमी असल्यामुळे महापालिकेचे नुकसान होईल आणि म्हणून तो महापौरांनी घेतला नाही. आणि आपला २०१४ चा आपण जो ठराव मंजूर केला होता त्याच्यामध्ये दर जास्त होते आणि त्याच्याने महापालिकेचा फायदा होईल आणि म्हणून मा. महापौरांनी घेतला नव्हता ही त्याच्यातली वस्तुस्थिती आहे आणि त्याच्यानंतर मा. आयुक्तांनी ते रेट फिक्स केले आणि ते रेट फिक्स केल्यानंतर सुध्दा हे टॅंडर दुप्पट आणि तिप्पट आले. ह्याच्यानंतर काय आमचा अंदाज बरोबर होता की हे दर कमी आहेत आणि हे दर जर लावले तर महापालिकेला नुकसान होईल आणि शेवटी प्रशासनाने ते दर पुढे कन्टीन्यू केले आणि टॅंडर किती आल. दुप्पट तिप्पट आले याचा अर्थ काय यांचा रेट फिक्सींग जे आहे ते चुकीच होतं ह्याच्यावर सिध्द होतं.

जुबेर इनामदार :-

मा. महापौर मॅडम असा होता की तुम्ही तो विषय महासभेसमोर घ्यायचा होता ठरावाच्या माध्यमातून फेटाळायचा होता. तुम्ही तो घेतला नाही.

धृवकिशोर पाटील :-

आता एवढे मा. आयुक्त आहेत पुन्हा ९० दिवसांमध्ये त्यांची एवढी हैराण होते आणि मा. महापौरांनी पत्र पण दिलं असेल मला माहित नाही. कारण त्यावेळेस सन्मा. मा. महापौर.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

जुबेर इनामदार आपल्याला ठराव मांडायचा आहे का? कस आहे आतापर्यंत असा आपण बघतो आहे की, जाहिराती फसवे असतात पण मिरा भाईदरची जाहिरात फलक फसवे आहेत आणि ह्या ठिकाणी निश्चितपणे महापालिकेच्या उत्पन्नात वाढ होणार आहे. तेव्हा संपूर्ण सभागृहाची मान्यता पाहिजे. ह्या विषयाला की जाहिरात फलक दरामध्ये ती सातत्याने एक वाढ होत चाललेली तसेच आहे. तर हा जो सुधारीत ठराव आहे हा चुकीचा नाही. तुम्हाला ह्याच्यापेक्षा वेगळा म्हणायचा असेल तर ठराव मांडा.

जुबेर इनामदार :-

प्रशासन आणि लोकप्रतिनिधी हे आई मावशीचा संबंध आहे. बरोबर आहे त्यांनाही सोडून चालणार नाही. आपण ठराव करायचा त्यांनी मान्य करायचा नाही त्यांनी आपल्या पध्दतीने करायचा त्यांना योग्य वाटल त्यांच्या ४५१ अंतर्गत विखंडनाला सुध्दा पाठवतील. कुठे कामकाज चालवायचा असेल तर एकत्र येणे गरजेचे आहे. त्यांनी केलेले काम चुकीचे आहे. बोलायचे फक्त आणि त्याची खरी जी पार्श्वभूमी बघायची नाही हे ही खरं आहे.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

विखंडनाला कधी पाठवतील जेव्हा आर्थिक नुकसान होत असेल किंवा कायदा बाह्य काम करत असेल जेव्हा आर्थिक फायदा होत असेल किंवा चुकलेल्या गोष्टी सुधारत असेल ते विखंडीत करायला पाठवायचे कारण बनत नाही.

धृवकिशोर पाटील :-

सर २६/०२/२०१८ ला आपण ठराव केला. ह्याच्यामध्ये म्हटलं आहे खाजगी हॉर्डिंग्जचे दर पण कमी आहेत आणि आली स्पर्धा झाली पाहिजे तरी सुध्दा प्रशासन अजिबात हलल नाही आणि पुन्हा त्याच्यावरती ते ठाम आहेत जर दीड लाख रुपये दोन लाख रुपये घेतात तर त्यांचे दर वाढले नाही पाहिजे. त्यांचे दर वाढले पाहिजे की नाही? तरी सुध्दा त्यांनी दर वाढवले नाही आणि ही स्पर्धा झाली पाहिजे की नाही. साहेब स्पर्धा झाली ना डब्ल, टिब्ल रेट आले याचा अर्थ काय की प्रशासन जे रेट २०१७ ला दिले होते आणि तो डिम मंजूर केला. साहेब ते रेट चुकीचे आहे सिध्द करा. म्हणजे ह्याच्यावरती कळतं की महापालिकेचे नुकसान झालेले आहे आणि आमची तिच बॉब आहे की हे रेट कमी असल्यामुळे हे वाढवणे गरजेचे आहे, क्रमप्राप्त आहे आणि त्या दराने आपण निविदा काढा. पण ते ऐकतच नाही. ते बोलतात की आमचे दर बरोबर आहेत. आणि साहेब हे सगळे सिध्द झालेले आहे आणि माझी आपणांस विनंती आहे की जो आम्ही ठराव केलेला आहे तो तुम्ही अॅक्सेप्ट करा. त्याच्यामध्ये काहीही इगो नाही आणि त्याच्यामध्ये काही हेतु पण नाही.

अनिल सावंत :-

पिठासीन अधिकारी साहेब आपण जो ठराव करतो त्याच्यावर कारवाईच होत नाही. पाच महिने राहिलेले आहेत कारवाई.

धृवकिशोर पाटील :-

तुम्ही तसे बोला ना प्रशासन कारवाई करत नाही. तो एवढा चांगला ठराव दिलेला आहे आणि रेट पण दिलेला आहे आणि टेंडर पण डब्ल टिब्ल आलेले आहे. त्यांनी कारवाई केली पाहिजे ना.

जुबेर इनामदार :-

पिठासीन अधिकारी साहेब धृवकिशोर पाटील साहेब डब्ल डब्ल बोलता आहेत. तो डब्ल डब्ल आला त्याला मंजूरी का नाही दिली स्थायी समितीमध्ये तेव्हा तो २०१४ चा उल्लेख केला.

धृवकिशोर पाटील :-

सर ह्याच्यावर नविन निविदा काढले ना तर शंभर टक्के त्याच्यावर पण आणखी स्पर्धा होईल आणि चांगला रेट येईल परंतु हे काढत नाही ह्याचा अर्थ काय त्यांनी काहीतरी सेटींग केलेली आहे.

जुबेर इनामदार :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका जाहिरात विभागाने जाहिराती फी ची आकारणी दि. १९/०३/२००८, ठराव क्र. ३५ अन्वये करण्यात येत होती. मा. महासभा दि. १९/०७/२०१४ रोजी ठराव क्र. २७ ज च्या प्रस्तावाद्वारे जाहिरात फी दरवाढीचा प्रस्ताव मांडून प्रशासनाला अंमलबजावणी करण्याकरीता सुचित करण्यात आले. सदर दरवाढी ही मागील जाहिरात फी दरापेक्षा ६००-१२०० टक्के वाढीव होती. ज च्या प्रस्तावाला शासनाचा गोषवारा नसल्याने तो अभ्यासपूर्वक नव्हता. ठरावाला आकार / व्यास रस्त्यांच्या श्रेणीबाबत उल्लेख केलेले नव्हते सरसकट दर आकारले गेले.

मिरा भाईंदर जाहिरात विभागाने दि. २०/०२/२०१६ रोजी नगरसचिवांना मिरा भाईंदर हद्दीमध्ये लावण्यात येणा-या जाहिराती दराबाबतचा तात्कालीन आयुक्त यांच्या स्वाक्षरीचा गोषवारा मा. महासभेपुढे मंजूरीस्तव ठेवला. सदर विषयाचा प्रस्ताव ९० दिवसापर्यंत स्विकारला नसल्याने महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम अधिसूची ड/२/स मधील तरतुदीनुसार मानीव मान्यतेने अंमलबजावणी करून शासनास मनपा/जाहिरात/१२६/२०१६-१७ अन्वये अवगत केले आहे. त्याला अनुसरून २०१४ ते २०१८ या कालावधीत मा. आयुक्तांच्या मान्यतेने जाहिरात फी वसूल करण्यात येत आहे.

मिरा भाईंदर महानगरपालिका मा. आयुक्त यांच्या मागणीनुसार जाहिरात विभागातील दरवाढ व नियोजन याबाबत गोषवारा प्रस्तावित करण्याबाबत कळविले. परंतु जाहिरात विभागाने दरवाढ न करण्याबाबत गोषवारा दिला. तदनंतर मा. महासभा दि. २६/०२/२०१८ ठराव क्र. ८४ अन्वये जाहिरात विभागात मोठ्या प्रमाणात भ्रष्टाचार झाल्याबाबत आरोप केले गेले. २०१४ ठराव क्र. २७ प्रमाणे अंमलबजावणी करण्याची घोषणा करण्यात आली. कमी दराने पैसे भरलेल्या ठेकेदारांकडून जुन्या २०१४ च्या ठरावातील दरप्रमाणे रक्कम वसूल करावी. मार्केट दराप्रमाणे दर ठरवून प्रस्ताव मा. महासभेपुढे ठेऊन नविन निविदा काढावी.

मिरा भाईंदर महानगरपालिका जाहिरात विभागातील जाहिरात दरामध्ये वाढ होणे अपेक्षित होते. परंतु मा. महासभा दि. १९/०७/२०१४, ठराव क्र. २७ जाहिरातीच्या दरात जास्त प्रमाणात वाढ झाल्याने तसेच श्रेणीनुसार जाहिरात फी दर मंजूर नसल्याचे दिसून येते. ठरावामध्ये पारित करण्यात आलेले दर हे ठाणे महानगरपालिका, वसई-विरार, भिवंडी-निजामपूर, उल्हासनगर, कल्याण-डोंबिवली या महानगरपालिका क्षेत्रामध्ये प्रचलित दराशी तुलना करता त्यांच्या जाहिरात दरपेक्षा जास्त प्रमाणात वाढल्याचे निदर्शनास आले. जाहिरात फी वाढीचा विषय हा धोरणात्मक स्वरूपाचा आहे व तो प्रशासनाच्या माध्यमातून येणे विधिवत आहे. ज च्या प्रस्तावाला प्रशासनाचा गोषवारा नसल्याने अशा स्वरूपाचे धोरणात्मक निर्णय घेणे योग्य नाही.

तरी, मा. महासभा दि. २६/०२/२०१८, ठराव क्र. ८४ मध्ये प्रशासनावर केलेले आरोप विनबुडाचे आहेत. सदरच्या ठरावाला निषेध करण्यात येत आहे. प्रशासनाने महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम अधिसूची ड/२/स मधील तरतुदीनुसार मानीव अधिकारात अंमलबजावणी केलेल्या निर्णयाला महापालिकेच्या हिताचे असल्याचे घोषित करत आहेत. तसेच, स्थायी समिती सभा दि. ०७/०७/२०१८ रोजी फेटाळण्यात आलेले प्रकरण क्र. ३५, ३६, ३७ हे महापालिकेच्या हिताचे आहेत. तरी, त्या प्रस्तावाना मा. आयुक्तांनी आपल्या अधिकारात मान्य करून पुढील कार्यवाही करावी असा मी ठराव मांडत आहे.

राजू भोईर :-

माझे अनुमोदन आहे.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

सचिव महोदय ह्या विषयाला दोन ठराव आलेले आहेत. मतदान घ्या.

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ४९ करिता दोन ठराव आलेले आहेत. पहिला ठराव सुचक श्री. धृवकिशोर पाटील, अनुमोदन श्री. हसमुख गेहलोत. दुसरा ठराव आहे सुचक श्री. जुबेर इनामदार, अनुमोदन श्री. राजू भोईर. प्रथम मी दुसरा ठराव मतदानासाठी पुकारतो. सुचक श्री. जुबेर इनामदार, अनुमोदन श्री. राजू भोईर यांनी मांडलेल्या ठरावाच्या बाजूने मतदान करायचे असेल त्यांनी कृपया हात वर करायचे आहेत. ह्या ठरावाच्या विरोधात असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत. तटस्थ कोणी असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत. सुचक श्री. धृवकिशोर पाटील यांनी मांडलेल्या ठरावाच्या बाजूने मतदान करायचे असेल त्यांनी कृपया हात वर करायचे आहेत. ह्या ठरावाच्या विरोधात असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत. तटस्थ कोणी असतील त्यांनी हात वर करायचे आहेत.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

सुचक श्री. धृवकिशोर पाटील यांनी मांडलेल्या ठरावाच्या बाजूने ४२, विरोधात २४, तटस्थ ० इतकी मते पडलेली आहेत. श्री. धृवकिशोर पाटील यांनी मांडलेला ठराव बहुमताने मंजूर करण्यांत येत आहे.

मर्लिन डिसा :-

आपण पालिकेद्वारे जे फॅसिलीटी देतो हे बेसीक ह्युमन राईट्स आहेत. शहराला अँज लोकल बॉडी हे वेगवेगळ्या डिपार्टमेंट वगैरे आपण देतो पण जर आपण वृक्ष प्राधिकरण डिपार्टमेंटमध्ये बघितल तर जे छाटणी चालू आहे ती अशाप्रमाणे छाटणी करतात की सगळे हात कापून टाकल्यासारखी दिसतात. आणि वरती एक फक्त तुरा दिसतो. आजूबाजूचे सगळे मेन ब्रान्चेस कापून टाकतात. पाने तर बिलकूल दिसत नाही. मग ही पान नसतील तर त्या झाडाला आहार कसा मिळणार आपण शाळेमध्ये सगळ्यांनी अभ्यास केलेला आहे.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

सगळ्या सदस्यांना सुचना देण्यात येते की आज विशेष सभा आहे विशेष सभेमध्ये ह्या सभा पटलावरच्या व्यतिरिक्त इतर विषयावरती त्या संबंधितांना सुचना देण्यात येतील.

मर्लिन डिसा :-

आपल्याकडे जी कमिटी आहे ते फक्त झाडे कापतात त्याच्यात झाड लावण्याचा आणि जपण्याचा पण कार्यक्रम ठेवा ना.

प्रकरण क्र. ४९ :-

मा. महासभा दि. २६/०२/२०१८ रोजीच्या ठराव क्र.८४ अन्वये पारित केलेल्या जाहिरात विभागाच्या ठरावातील मुद्दा क्र.२ व ३ याबाबत पुर्नःविचार करुन निर्णय घेणे व सन २०१८-१९ या आर्थिक वर्षापासून नव्याने जाहिरात दर व नियोजन करणेकामी एजेन्सी नियुक्त करणेबाबत

ठराव क्र. ४९ :-

महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम १९४९ चे कलम २४४,२४५,३८६ आणि ३९२ अन्वये व मुंबई प्रांतिक महानगरपालिका (जाहिरात व फलक नियंत्रण) नियम २००३ अन्वये जाहिराती व आकाशचिन्ह इत्यादींवर नियंत्रण करण्याची तरतुद आहे. त्याअनुषंगे मिरा भाईंदर क्षेत्रातील जाहिरातीच्या (विविध भागात हॉर्डिंग (आकाशचिन्ह), कमानी, व्यापारी आस्थापनेवरील जाहिराती, दुकानांवरील जाहिरात फलक व अन्य प्रकारच्या जाहिराती) वाढ होण्याच्या दृष्टीने मा. स्थायी समिती ठराव क्र .४३, दि.२९/०२/२००८ व मा. महासभा ठराव क्र .३५, दि.१९/०३/२००८ अन्वये जाहिरात फी चे दरपत्रकास मंजुरी देण्यात आली आहे . यानंतर जाहिरातीचे दर वाढविण्यात आलेले नाहीत . याकरीता मा. स्थायी समिती सभा दि.११/०७/२०१४ प्र.क्र.२८, ठराव क्र.२८ जाहिरात प्रकरण मध्ये दरवाढीस मंजुरी दिलेली आहे . त्यास मा. महासभा दि.१९/०७/२०१४, ठराव क्र .२७ ने दरास मंजुरी दिलेली आहे . त्या दरामध्ये दि .०१/०४/२०१६ ते ३१/०३/२०१७, दि.०१/०४/२०१७ ते दि.३१/०३/२०१८, दि.०१/०४/२०१८ ते दि.३१/०३/२०१९ या प्रत्येक आर्थिक वर्षात १० टक्के वाढ करुन त्याप्रमाणे जाहिरातीचे दर निश्चित करुन आकारणी करण्यात यावी.

- १) ज्या जाहिरातदाराकडून वर निश्चित केलेल्या दरापेक्षा कमी आकारणी केली असेल त्यांच्याकडून मागील थकबाकी वसूल करण्यात यावी.
- २) संबंधीत ठेकेदारास ८ दिवसाची मुदत देवून जाहिरात थकबाकी त्यांचेकडून वसूल करावी जर ठेकेदार थकबाकी जमा करत नसेल तर त्यांनी लावलेली हॉर्डिंग जप्त करुन ठेकेदाराचा ठेका रद्द करण्यात यावा.

- ३) मा. महासभा दि.१९/०७/२०१४, ठराव क्र.२७ ने मंजूर केलेल्या ठरावावर ज्या अधिकाऱ्याने अंमलबजावणी केली नसेल त्यांचेवर कडक कारवाई करुन गुन्हा दाखल करुन जाहिरातीची थकबाकी त्यांचेकडून वसूल करण्यात यावी.
- ४) मा. महासभा दि. २६/०२/२०१८ ठराव क्र. ८४ ने मंजूर केलेल्या प्रस्ताव अॅन्टी करप्शन विभागा कडे पाठवून त्याचा पाठपुरावा करावा.
- ५) यापूर्वी ज्या निविदा जुन्या दराने काढण्यात आलेल्या आहेत , ज्या निविदांना अंतिम मंजूरी मिळालेली नाही व कामाचे आदेश काढण्यात आलेले नाहीत अशा सर्व निविदा नामंजूर करुन नविन दराने फेरनिविदा काढण्यात याव्यात.
तरी मिरा भाईदर महानगरपालिका जाहिरात दरावर वर निश्चित केलेल्या दराप्रमाणे कर आकारणी करण्यात यावी असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- श्री. ध्रुवकिशोर पाटील

अनुमोदक :- श्री. हसमुख गेहलोत

| अ.क्र. | ठरावाच्या बाजूने | अ.क्र. | ठरावाच्या विरोधात | तटस्थ |
|--------|---------------------------|--------|-----------------------------|-------|
| १ | वैती चंद्रकांत सिताराम | १ | भोईर राजू यशवंत | निरंक |
| २ | पाटील ध्रुवकिशोर मन्साराम | २ | आमगावकर हरिश्चंद्र रामचंद्र | |
| ३ | गेहलोत हसमुख मोहनलाल | ३ | पाटील प्रविण मोरेश्वर | |
| ४ | जैन गीता भरत | ४ | परेरा कॅटलीन एन्थोनी | |
| ५ | सिंह मदन उदितनारायण | ५ | नलावडे दिनेश दगडु | |
| ६ | यादव मिरादेवी रामलाल | ६ | शिके अनंत गेणू | |
| ७ | शाह रिटा सुभाष | ७ | शेख अशरफ मोहम्मद इब्राहीम | |
| ८ | गोहिल शानू जोरावर सिंह | ८ | मेहरा राजीव ओमप्रकाश | |
| ९ | डॉ. पाटील प्रिती जयप्रकाश | ९ | सावंत अनिल दिवाकर | |
| १० | भोईर सुनिता शशिकांत | १० | इनामदार जुबेर अब्दुल्ला | |
| ११ | पाटील वंदना मंगेश | ११ | पाटील जयंतीलाल गुरूनाथ | |
| १२ | जैन सुनिता रमेश | १२ | घरत तारा विनायक | |
| १३ | अरोरा दीपिका पंकज | १३ | पाटील अनिता जयवंत | |
| १४ | नाईक विविता विवेक | १४ | गोविंद हेलन जॉर्जी | |
| १५ | भावसार वंदना संजय | १५ | भोईर भावना राजू | |
| १६ | बेलानी हेमा राजेश | १६ | डिसा मर्लिन मर्विन | |
| १७ | भोईर विणा सुर्यकांत | १७ | सपार उमा विश्वनाथ | |
| १८ | सोनार सुरेखा प्रकाश | १८ | परदेशी गिता हरीश | |
| १९ | मुखर्जी अनिता बबलू | १९ | सय्यद नुरजाहॉ नाझर हुसेन | |
| २० | शिंदे रुपाली वसंत (मोदी) | २० | पाटील वंदना विकास | |
| २१ | म्हात्रे परशुराम पदमाकर | २१ | पाटील संध्या प्रफुल्ल | |
| २२ | म्हात्रे मोहन गोपाळ | २२ | अहमद साराह अकरम | |
| २३ | शाह राकेश रतिशचंद्र | २३ | बगाजी शर्मिला विन्सन्ट | |
| २४ | शेटी अरविंद आनंद | २४ | बांड्या एलायस दुमिंग | |
| २५ | अग्रवाल सुशील गोपीकिशन | | | |
| २६ | भूप्ताणी रक्षा सतीश (शाह) | | | |
| २७ | शाह सीमाबेन कमलेश | | | |
| २८ | रकवी वैशाली गजेंद्र | | | |
| २९ | कांगणे मीना यशवंत | | | |
| ३० | परमार हेतल रतिलाल | | | |
| ३१ | दळवी प्रशांत ज्ञानदेव | | | |
| ३२ | म्हात्रे विनोद काशिनाथ | | | |
| ३३ | भोईर जयेश भानुदास | | | |

| | | | | |
|----|----------------------------|--|--|--|
| ३४ | शेटी गणेश गोपाळ | | | |
| ३५ | थेराडे संजय अनंत | | | |
| ३६ | गजरे दौलत तुकाराम | | | |
| ३७ | मांजरेकर आनंद दत्ताराम | | | |
| ३८ | कासोदारिया अश्विन शामजीभाई | | | |
| ३९ | दुबे मनोज रामनारायण | | | |
| ४० | खंडेलवाल सुरेश जगदीश | | | |
| ४१ | भोईर गणेश गजानन | | | |
| ४२ | पारधी सुजाता यशवंत | | | |

ठराव बहुमताने मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ५०, मिरा भाईंदर महानगरपालिका शाळेतील विद्यार्थ्यांना गणवेश व शैक्षणिक साहित्य खरेदी करणेबाबत प्रशासकीय व आर्थिक मंजूरी मिळणेबाबत.

दिपीका अरोरा :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या ३६ शाळा असून त्यापैकी इयत्ता १ ते ८ वी चे एकूण पटसंख्येनुसार ७८३४ विद्यार्थी-विद्यार्थिनी शाळांमध्ये शिक्षण घेत आहेत. यामध्ये सन २०१८-१९ या शैक्षणिक वर्षात १० टक्के संभाव्य वाढ लक्षात घेवून एकूण अंदाजे ८६१७ पर्यंत पटसंख्या अपेक्षित आहे . सन २०१८-१९ या शैक्षणिक वर्षामध्ये विद्यार्थी -विद्यार्थिनींना शालेय गणवेश टाय सह (प्रत्येकी-२) बुट-मोजे, वहा बॅग, पाण्याच्या बाटल्या इ. पुरवठा करण्याबाबत महानगरपालिकेचे धोरण आहे. महापालिका शाळेतील विद्यार्थी विद्यार्थिनींना सदर धोरणानुसार सन २०१८-१९ या शैक्षणिक वर्षामध्ये सदर साहित्य खरेदी करणे आवश्यक आहे . यासाठी आवश्यक तरतुद २०१८-१९ च्या अंदाजपत्रकात अ.क्र.३) शालेय गणवेश, बॅच, टाय, पी.टी. युनीफॉर्म संकेतांक (२५३४)-७०,००,०००/-, अ.क्र.४) शालेय वहा व इतर साहित्य संकेतांक (२५३४) - ३५,००,०००/-, अ.क्र.५) शालेय दप्तरे, बुट-मोजे, वॉटर बॉटल संकेतांक (२५३४)-७२,००,०००/- प्रस्तावित करण्यात आली आहे.

तरी मिरा भाईंदर महानगरपालिका प्राथमिक शाळेतील विद्यार्थ्यांना गणवेश व शैक्षणिक साहित्य खरेदी करणेकरीता ही मा. महासभा आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी देत आहे असा मी ठराव मांडत आहे.

मिना कांगणे :-

माझे अनुमोदन आहे.

अनिल सावंत :-

मा. पिठासीन अधिकारी आपले शिक्षणाधिकारी आहेत का?

मा. उपमहापौर :-

शिक्षण अधिकाऱ्यांनी महासभेसमोर यायचे आहे.

अनिल सावंत :-

साहेब जूनमध्ये शाळा सुरु होतात. आज आता जुलै संपत आला आता आपण आर्थिक आणि प्रशासकीय मंजूरी घेणार आहेत.

मा. उपमहापौर :-

कारण समजून घ्या. तो एक तांत्रिक गोंधळ आहे. गेल्यावर्षी राज्य शासनाकडून सर्व सरकारी शाळांना सुचना पारित करण्यांत आल्या की आपले अकाउंट ओपन करा. त्या अर्जावर नमूद करा स्थानिक स्वराज्य संस्था पैसे भरा आणि गणवेश तुम्ही आणा. आमचा मागचा अनुभव एवढा विचित्र आहे की ५० टक्के पेक्षा अधिक लोकांनी गणवेश आणलेच नाही. आणि पैसे आले विड्रॉल केले आणि पुन्हा शासनाचा असा निर्णय झालेला आहे आणि तो निर्णय उशीरा निघाला त्याच्यामध्ये परंतु मला विश्वास आहे की संपूर्ण प्रक्रिया पूर्ण झालेली आहे. १५ ऑगस्टच्या आधी नविन गणवेश विद्यार्थ्यांच्या अंगावर असेल.

अनिल सावंत :-

शासनाचा निर्णय पूर्वीच झालेला आहे. गेल्यावर्षीच शासनाचा निर्णय झालेला आहे. २८ फेब्रुवारीला आपला बजेट झालेला आहे. बजेटमध्ये प्रोव्हिजन आपण दिली.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

त्या दरम्यानच्या काळात आपल्याला एक आचारसंहिता आली ४५ दिवसांची. परंतु आज त्याच्यामध्ये काही गोष्टी पुढे मागे झालेल्या आहेत. १५ ऑगस्टच्या आधी इतर सर्व प्रक्रिया केलेल्या आहेत.

अनिल सावंत :-

आज आपण मॉडीलॉयजेशन करायला चाललोत. म्युन्सिपालटी शाळा प्रत्येक मुलाला शाळेच्या पहिल्या दिवशी नविन ड्रेस जर घालायला मिळाला तर त्याच्यासाठी सुख नाही हे त्यांनी ऑलरेडी कपडे घेतले असणार.

मा. उपमहापौर :-

त्यांनी घेतलेले नाहीत. हा महापालिकेचा युनिक युनिफॉर्म आहे. तो फक्त महापालिकाच देते तो बाजारात कुठेच उपलब्ध नाही.

अनिल सावंत :-

नाही पण आता तीन महिने असेच गेले ना आणि दुसरी गोष्ट आपण शाळेमध्ये आहार देतो मुलांना. सोमवार ते शुक्रवार सहा दिवस कन्टीन्यु एक खिचडी दिली जाते. कुठचेही मुल खाईल का एकच पदार्थ. कन्टीन्यु सहा दिवस त्याच्यामध्ये प्रोव्हिजन आहे. थोडस चॅज देण्याची. कन्टीन्यु सहा दिवस तीच खिचडी तेच मुलाला मला ह्या दोन गोष्टीचे उत्तर द्या.

बाबर :-

मा. उपमहापौर साहेबांच्या परवानगीने बोलत आहे. आताच ह्या ठिकाणी मिरा भाईंदर महानगरपालिका प्राथमिक शाळेतील विद्यार्थ्याला गणवेश व शैक्षणिक साहित्य खरेदीबाबत आता उपमहापौर साहेबांनी म्हटल्याप्रमाणे आपल्याला दीड महिना ह्या ठिकाणी आचारसंहिता लागल्यामुळे जून अखेरपर्यंत आचार संहिता होती. त्याचबरोबर गणवेश खरेदी करण्याची प्रक्रिया ह्यावर्षी शासनाने बदलली आणि त्याचा नव्याने जी.आर जो आहे तो जी.आर ४ जुलै २०१८ ला शासन निर्णय निघाला त्याच्यानंतर सुरु करण्याची प्रक्रिया सुरु झाली आपण करुन ठेवलेली होती. प्रक्रिया पण ती प्रक्रिया तशीच थांबवावी लागली आणि नविन जी.आर नुसार आपण आता पहिलीच महासभेत नविन जी.आर नंतर आहे. आपण ह्या सभेसमोर आपले सर्व सन्मा. सदस्यांच्या समोर आणली आहे. त्याचबरोबर ह्या ठिकाणी साहेब सांगायला आनंद आहे की आपल्या ह्या ठिकाणी आपली पहिलीच महानगरपालिका अशी आहे की शासनाचं कोणतेही अनुदान ह्या गणवेशासाठी किंवा शैक्षणिक साहित्यासाठी सर्व महानगरपालिकाच सर्व अनुदान देत आहे. मी आदरणीय महापौर साहेब आणि सर्व सन्मा. सदस्यांना विनंती करतो की पुढील वर्षी शासनाच ५० टक्के अनुदान फक्त गणवेशासाठी देण्यासाठी मी प्रस्ताव तयार करत आहे आणि त्यामुळे आपल्या महानगरपालिका ३० ते ३५ लाखाचा फायदा पुढच्या वर्षी होऊन जाईल. यापूर्वी ही प्रक्रिया राबवलेली नव्हती. त्याचबरोबर आपल्याला साहेब ह्या ठिकाणी जे विद्यार्थी संख्या गेल्या वर्षी ७५०२ होती. आपण गेली उपमहापौर साहेब, मा. आयुक्त साहेब, स्थायी समितीचे सभापती साहेब आणि सर्व सन्मा. नगरसेवक ह्यांच्या सहमतीने आपण गेल्या दोन ते तीन महिने थोडस प्रोग्राम घेतले. आणखीन प्रोग्राम घेतले शिक्षणाचे सक्षमीकरण केले. सांगायला आनंद वाटतो की खोटं काहीच नाही की आपल्या या ठिकाणी ७५०२ विद्यार्थी होते. आता प्रत्यक्ष ७८३४ म्हणजे ३३३२ विद्यार्थी ह्या ठिकाणी आपल्याला नव्यानं आपण प्रक्रिया विद्यार्थ्यांना प्रवेश दिलेला आहे. हे सत्य बाब आहे आणि सांगायला हरकत नाही की इंग्लीश मिडियमचे विद्यार्थी पण आपल्याकडे यायला लागले. पाटील साहेबांची संकल्पना होती की शिक्षणाचे सक्षमीकरण व्हावे. मा. उपमहापौर साहेब आणि मा. महापौर मॅडमनी संमती दिली. मा. आयुक्तांनीही दिली. आपण इतका दोन दिवस चांगला प्रोग्राम घेतला पण माझी विनंती होती की आपल्याला त्या ठिकाणी आचार संहिता असल्यामुळे निमंत्रित करता आले नाही ही आमची खरी ह्या ठिकाणी अडचण होती. त्यामुळे सन्मा. सदस्यांना त्या ठिकाणी निमंत्रित करता आले नाही. परंतु आदरणीय साहेबांनी आपल्याला सर्व सन्मा. नगरसेवकांच्या अध्यक्षतेखाली ह्या सर्व संकल्पना आम्हाला दिलेल्या आहेत. तर आपली संकल्पना साधारण चेअरमन साहेब, शिक्षक पालक सभा जी आहे ही जेणेकरुन पालकांपर्यंत सर्व नगरसेवक साहेबांच म्हणजे सर्वांचे आपले ह्या ठिकाणी संपर्क व्हावा, मार्गदर्शन व्हावं आणि आपल्या महानगरपालिकेत चाललेली शैक्षणिक जी रचना आहे जी व्यवस्था आहे ती पोहोचवावी आणि म्हणून आपण पुढील आठवड्यामध्ये सर्व सन्मा. नगरसेवक ह्यांच्या अध्यक्षतेखाली ह्या मिरा भाईंदर शहरामधल्या सर्व शाळेतल्या ८ हजार पालकांची

सभा आयोजित करणार आहोत. त्याची ५ तारीख निश्चित केली आहे आणि त्याचे वेळापत्रक आम्ही आपल्याला देत आहोत. ह्या ठिकाणचे जे गणवेशाचे ते आपण गणवेश विद्यार्थ्यांना देतो आणि बाकीच्या विद्यार्थ्यांना जे शैक्षणिक साहित्य आहेत दप्तर देतो. त्यामुळे प्रक्रिया उशीरा झाली. अजून एक सांगायला आनंद वाटतो की महाराष्ट्रामध्ये कुठेच गणवेश जुन्या पहिल्या आठवड्यामध्ये दिले जात नाही. शासकीय स्तरावर सुध्दा तो १५ ऑगस्टच्या आसपासच दिला जातो आणि आपल्या महानगरपालिकेनेच हे सर्व दिलेले आहे. त्यामुळे महानगरपालिकेचे सुध्दा मी आभारी आहे. शिक्षण विभाग ह्या नात्याने नविन शिक्षक आपल्याकडे २०२ पदे मंजूर आहेत. १७७ पदे सध्या कार्यरत आहेत. २५ पदांची भरती शासन स्तरावर कार्यरत आहेत. २५ पदांची भरती शासन स्तरावर १५ जुलैला महा सी.ए.टी. परिक्षा झालेली आहे. आणि साधारण पणे दीड ते दोन महिने राज्य स्तरावर ती प्रक्रियामुळे गेल्या दोन महिन्यामध्ये राहिलेले २५ शिक्षक आपल्याला मंजूर मिळत आहेत. आणि ते दिल्यानंतर आपण सर्व शाळांमध्ये देत आहोत. त्याचबरोबर आपण ह्या ठिकाणी आता आपण शालेय पोषण अंतर्गत सांगितले आहे. शालेय पोषण अंतर्गत आहे तो ठेकेदारमार्फत ते आपण देत आहोत आपली जी संकल्पना आहे ती वेगवेगळी द्यायला पाहिजे. समजा काही वेळेला बिस्कीट असेल, केळी असेल, इतर पदार्थ दिले जातात. आपण जी प्रक्रिया आहे ती पहिले जे दिलेले आहे ठेकेदाराला त्यात थोडीसी रचना करु आपण जर म्हणत असाल प्रत्येक वेळेस ती रचना करावी लागते. कोणती गोष्ट आवश्यक आहेत. साहेब ती प्रक्रिया आपण पुढील महिन्यापासून नक्कीच चांगली करु. माझी विनंती आहे सर्व सभागृहाला आपल्या सर्वांच्या सहकार्याने शैक्षणिक काम चांगले करण्याच मी नक्की प्रयत्न करेल.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

आभारी आहे. सचिव पुढचा विषय घ्या.

प्रकरण क्र. ५० :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका शाळेतील विद्यार्थ्यांना गणवेश व शैक्षणिक साहित्य खरेदी

करणेबाबत प्रशासकिय व आर्थिक मंजूरी मिळणेबाबत.

ठराव क्र. ५० :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेच्या ३६ शाळा असून त्यापैकी इयत्ता १ ते ८ वी चे एकूण पटसंख्येनुसार ७८३४ विद्यार्थी-विद्यार्थिनी शाळांमध्ये शिक्षण घेत आहेत. यामध्ये सन २०१८-१९ या शैक्षणिक वर्षात १० टक्के संभाव्य वाढ लक्षात घेवून एकूण अंदाजे ८६१७ पर्यंत पटसंख्या अपेक्षित आहे . सन २०१८-१९ या शैक्षणिक वर्षामध्ये विद्यार्थी -विद्यार्थिनींना शालेय गणवेश टाय सह (प्रत्येकी-२) बुट-मोजे, वह्या बॅग, पाण्याच्या बाटल्या इ. पुरवठा करण्याबाबत महानगरपालिकेचे धोरण आहे. महापालिका शाळेतील विद्यार्थी विद्यार्थिनींना सदर धोरणानुसार सन २०१८-१९ या शैक्षणिक वर्षामध्ये सदर साहित्य खरेदी करणे आवश्यक आहे. यासाठी आवश्यक तरतुद २०१८-१९ च्या अंदाजपत्रकात अ.क्र.३) शालेय गणवेश, बॅच, टाय, पी.टी. युनीफॉर्म संकेतांक (२५३४)-७०,००,०००/-, अ.क्र.४) शालेय वह्या व इतर साहित्य संकेतांक (२५३४) - ३५,००,०००/-, अ.क्र.५) शालेय दप्तर, बुट-मोजे, वॉटर बॉटल संकेतांक (२५३४)-७२,००,०००/- प्रस्तावित करण्यात आली आहे.

तरी मिरा भाईंदर महानगरपालिका प्राथमिक शाळेतील विद्यार्थ्यांना गणवेश व शैक्षणिक साहित्य खरेदी करणेकरीता ही मा. महासभा आर्थिक व प्रशासकीय मंजूरी देत आहे असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- श्रीम. दिपीका अरोरा अनुमोदन :- श्रीम. मिना कांगणे

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ५१, नगररचना विभागासाठी नव्याने पदे मंजूरीसाठी प्रस्ताव सादर करणेबाबत

रिटा शहा :-

पिठासीन अधिकारी हे आपण नगररचना विभागामध्ये गट अ मधून एक क नगररचनाकार आणि गट ब मधून एक नगररचनाकार अशी दोन पदे घेणार का? दोन नगररचनाकार घेणार आहात का?

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

सहाय्यक दोन.

रिटा शहा :-

त्याच्यामध्ये लिहिलं आहे गट अ साठी एक आणि गट ब साठी एक.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

असे नाही ते प्रतिनियुक्तीवरती दोन येत होते. नगररचनाकार त्याच्यामध्ये आपला महापालिकेचा एक स्थायी अधिकारी असायचा. नगररचनाकार असायचा तो आपल्याला ठेवायचा आहे.

रिटा शहा :-

आपण त्याचे शैक्षणिक अर्हता आणि.....

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

ती सेवाप्रवेश नियमाप्रमाणे जी शैक्षणिक अर्हता धारण करणे गरजेचे आहे. ती शैक्षणिक अर्हता लागते.

रिटा शहा :-

कसं असत की आपण बी.ई.सिव्हील इंजिनियरला आपण पुढे प्रमोशन देत नाही आणि जे डिप्लोमा होल्डर आहेत त्यांना उच्च पदावर बसवतो.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

सेवा प्रवेश नियमाप्रमाणे नक्की कारवाई होईल.

गणेश भोईर :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका आस्थापनेवर नगररचना विभागासाठी नगररचनाकार (गट-अ) हे पद मंजूर नसल्याने महानगरपालिकेच्या पायाभूत सोयी सुविधा , विकास कामासाठी तसेच नागरीकांचे जीवनमान उंचवण्यासाठी शहराचे नियोजनाच्या दृष्टीने रु.१५६००-३९१०० ग्रेड पे-५४०० या वेतनश्रेणीत नगररचनाकार (गट-अ) हे पद नव्याने मंजूर करणे आवश्यक आहे. त्या दृष्टीने मनपासाठी शासनात सादर करावयाच्या आकृतीबंधामध्ये प्रशासनाने तरतुद करावी.

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेत नगररचना विभागामध्ये नगरपालिका काळापासून सहा . नगररचनाकार अशी दोन पदे कार्यरत होती. त्यापैकी पुर्वी एका पदावर मनपाच्या श्री. जगताप यांना पदोन्नती देण्यांत आलेली होती. मधल्या काळात जेव्हा महापालिकेने सेवाप्रवेश नियम केले तेव्हा नजर चुकीने दोन्ही पदे प्रतिनियुक्तीवर घेण्यात यावी अशी नोंद झाली होती. त्यात सुधारणा करुन २ पदे महापालिकेतील आस्थापनेवरील अनुभवी व्यक्तीची नियुक्ती करण्यात येईल अशी शासनास विनंती करण्यात यावी व सेवाप्रवेश नियमामध्ये दुरुस्ती करण्यात यावी असा मी ठराव मांडत आहे.

जयेश भोईर :-

माझे अनुमोदन आहे.

जुबेर इनामदार :-

ठरावामध्ये अर्हता वगैरे नमुद नाही.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

त्या पदासाठी जी धारण करायची अर्हता आहे ती शैक्षणिक अर्हतेचा ठराव नाही. फक्त प्रतिनियुक्तीचे दोन आहेत त्या ऐवजी एक स्थायी असावा.

जुबेर इनामदार :-

एक पदोन्नतीच्या पध्दतीने घेताना दोन्ही तशाच पध्दतीने घ्या. सेवाप्रवेश, सेवा भरती नियमाच्या अनुसार त्याची अर्हता जो पहिल्या श्रेणीमध्ये असेल त्या आधी संधी द्यावी. आपल्याकडे खरोखर रिटाजी बोलल्या तसं ती मॅकॅनिकल लोक आहेत. डिग्री होल्डर आहेत. सब डिप्लोमा वगैरे बाकीचे कामकाज बघतात. असे व्हायला नको. कोणावरती अन्याय नाही झाला पाहिजे.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

ठराव सर्वानुमते मंजूर. सचिव पुढील विषय घ्या.

प्रकरण क्र. ५१ :-

नगररचना विभागासाठी नव्याने पदे मंजुरीसाठी प्रस्ताव सादर करणेबाबत.

ठराव क्र. ५१ :-

मिरा भाईंदर महानगरपालिका आस्थापनेवर नगररचना विभागासाठी नगररचनाकार (गट-अ) हे पद मंजूर नसल्याने महानगरपालिकेच्या पायाभूत सोयी सुविधा , विकास कामासाठी तसेच नागरीकांचे जीवनमान उंचवण्यासाठी शहराचे नियोजनाच्या दृष्टीने रु.१५६००-३९१०० ग्रेड पे-५४०० या वेतनश्रेणीत नगररचनाकार (गट-अ) हे पद नव्याने मंजूर करणे आवश्यक आहे. त्या दृष्टीने मनपासाठी शासनात सादर करावयाच्या आकृतीबंधामध्ये प्रशासनाने तरतुद करावी.

मिरा भाईंदर महानगरपालिकेत नगररचना विभागामध्ये नगरपालिका काळापासून सहा. नगररचनाकार अशी दोन पदे कार्यरत होती. त्यापैकी पुर्वी एका पदावर मनपाच्या श्री. जगताप यांना पदोन्नती देण्यांत आलेली होती. मधल्या काळात जेव्हा महापालिकेने सेवाप्रवेश नियम केले तेव्हा नजर चुकीने दोन्ही पदे प्रतिनियुक्तीवर घेण्यात यावी अशी नोंद झाली होती. त्यात सुधारणा करुन २ पदे महापालिकेतील आस्थापनेवरील अनुभवी व्यक्तीची नियुक्ती करण्यात येईल अशी शासनास विनंती करण्यात यावी व सेवाप्रवेश नियमामध्ये दुरुस्ती करण्यात यावी असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- श्री. गणेश भोईर

अनुमोदन :- श्री. जयेश भोईर

ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ५२, अंटी करप्शन ब्युरो कार्यालयातून मालमत्तेच्या अपसंपादनाबाबत महानगरपालिकेतील अधिकारी /कर्मचारी यांचेवर मा . न्यायालयात अभियोग दाखल करणेकरीता मा आयुक्त यांनी दिलेल्या मंजूरी प्रकरणाचे अवलोकन करणे.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

अवलोकन.

नगरसचिव :-

प्रकरण क्र. ५३, वेदर शेड करीता भाडे आकारणीबाबत.

गणेश शेड्डी :-

मिरा भाईंदर क्षेत्रातील वेदरशेड बाबत मा . महासभेत वारंवार चर्चा केली जाते व त्यावर कोणताही ठोस निर्णय निघत नाही. त्यावर कायमस्वरूपी धोरण निश्चित करण्याच्या दृष्टीने मिरा भाईंदर महापालिकेच्या खालील पदाधिकारी , गटनेते व अधिकारी यांची खालीलप्रमाणे समिती गठीत करण्यात येत आहे.

| अ.क्र. | समिती सदस्य | पद |
|--------|------------------------|---------|
| १ | महापौर | अध्यक्ष |
| २ | उप-महापौर | सदस्य |
| ३ | सभापती, स्थायी समिती | सदस्य |
| ४ | सभागृह नेते | सदस्य |
| ५ | विरोधी पक्षनेते | सदस्य |
| ६ | सर्व पक्षीय गटनेते | सदस्य |
| ७ | आयुक्त | सदस्य |
| ८ | सहा. संचालक, (नगररचना) | सचिव |
| ९ | कर निर्धारक व संकलक | सदस्य |

वरील समितीने लवकरात लवकर समितीची बैठक लावून वेदरशेड परवानगीबाबत /आकारणी बाबत धोरण ठरवून ते अंतिम करावयाचे आहे असा मी ठराव मांडत आहे.

संजय थेराडे :-

माझे अनुमोदन आहे.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

कमर्शियल शेडसाठी समिती गठीत करत आहे. ठराव सर्वानुमते मंजूर.

प्रकरण क्र. ५३ :-

वेदर शेड करीता भाडे आकारणीबाबत.

ठराव क्र. ५२ :-

मिरा भाईंदर क्षेत्रातील वेदरशेड बाबत मा . महासभेत वारंवार चर्चा केली जाते व त्यावर कोणताही ठोस निर्णय निघत नाही. त्यावर कायमस्वरूपी धोरण निश्चित करण्याच्या दृष्टीने मिरा भाईंदर महापालिकेच्या खालील पदाधिकारी , गटनेते व अधिकारी यांची खालीलप्रमाणे समिती गठीत करण्यात येत आहे.

| अ.क्र. | समिती सदस्य | पद |
|--------|----------------------|---------|
| १ | महापौर | अध्यक्ष |
| २ | उप-महापौर | सदस्य |
| ३ | सभापती, स्थायी समिती | सदस्य |
| ४ | सभागृह नेते | सदस्य |
| ५ | विरोधी पक्षनेते | सदस्य |
| ६ | सर्व पक्षीय गटनेते | सदस्य |
| ७ | आयुक्त | सदस्य |

| | | |
|---|------------------------|-------|
| ८ | सहा. संचालक, (नगररचना) | सचिव |
| ९ | कर निर्धारक व संकलक | सदस्य |

वरील समितीने लवकरात लवकर समितीची बैठक लावून वेदरशेड परवानगीबाबत /आकारणी बाबत धोरण ठरवून ते अंतिम करावयाचे आहे असा मी ठराव मांडत आहे.

सुचक :- श्री. गणेश शेटी **अनुमोदन :- श्री. संजय थेराडे**
ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

आजच्या सभेचं कामकाज संपलेलं आहे.

हेतल परमार :-

मिरारोडमध्ये राहणारे साईबाबा नगरमध्ये राहणारे आणि प्रसिध्द टी.व्ही. सिरियलचे अभिनेता जे डॉक्टर हाथीच्या नाव्याने खुप प्रसिध्द होते कवीकुमार आझाद यांचा दि. ०९/०७/२०१८ ला निधन झालेले आहे मी सभागृह आणि आपल्या पक्षातर्फे त्यांना श्रध्दांजली अर्पित करत आहे.

मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

दोन मिनिट उभे राहून श्रध्दांजली द्यायची आहे.

दुःखवटा ठराव क्र. ५३ :-

मिरारोडमध्ये राहणारे साईबाबा नगरमध्ये राहणारे आणि प्रसिध्द टी.व्ही. सिरियलचे अभिनेता जे डॉक्टर हाथीच्या नाव्याने खुप प्रसिध्द होते कवीकुमार आझाद यांचा दि. ०९/०७/२०१८ ला निधन झालेले आहे मी सभागृह आणि आपल्या पक्षातर्फे त्यांना श्रध्दांजली अर्पित करत आहे.

सुचक :- श्रीम. हतल परमार **अनुमोदन :- श्री. संजय थेराडे**
ठराव सर्वानुमते मंजूर

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका


मा. उपमहापौर (पिठासीन अधिकारी) :-

आजची सभा संपली असे मी जाहिर करतो.

सही/-

महापौर

मिरा भाईंदर महानगरपालिका


(वासुदेव शिरवळकर)
नगरसचिव
मिरा भाईंदर महानगरपालिका